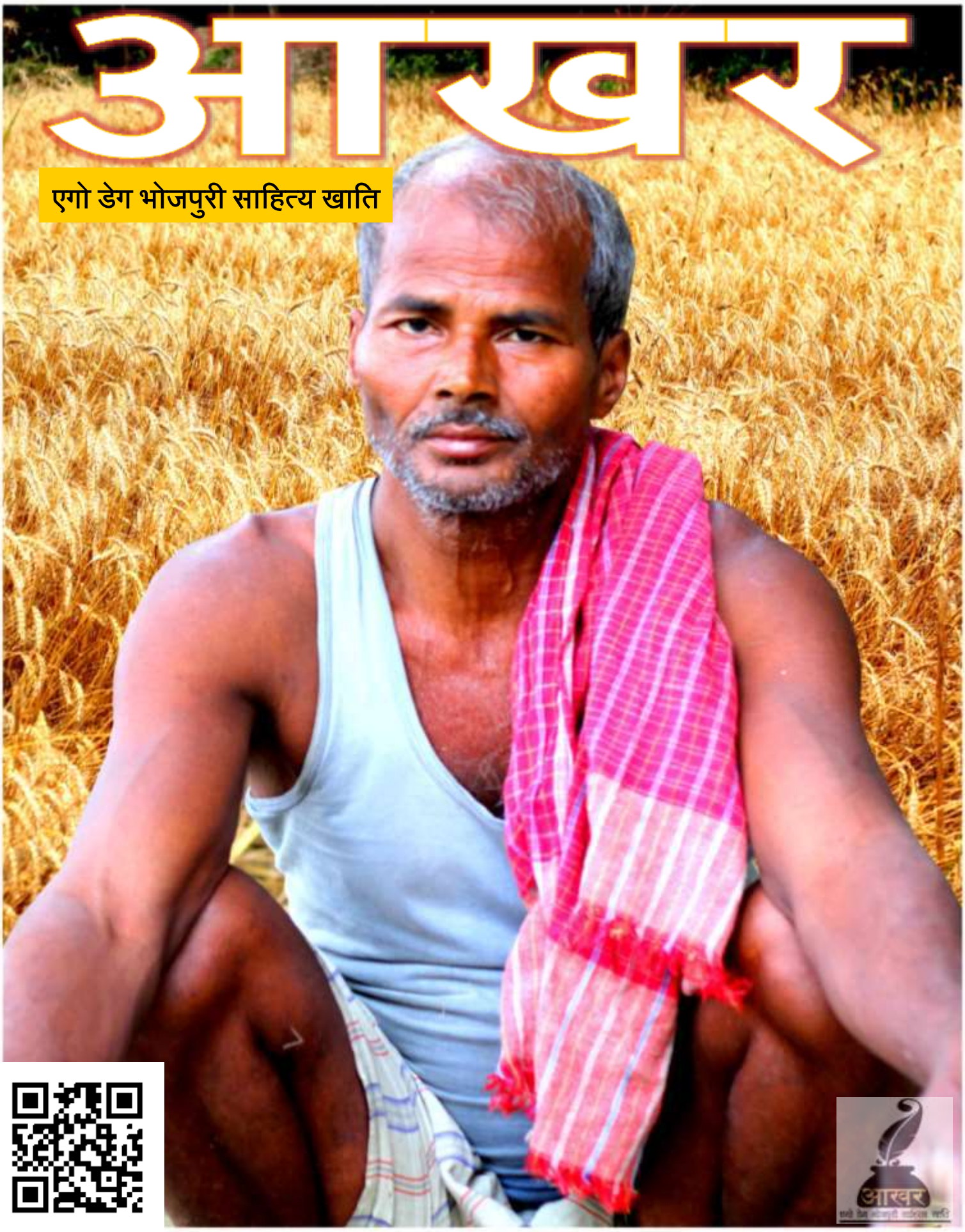
मासिक भोजपुरी ई-पत्रिका 2015 मई, अंक 4

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति



www.aakhar.com http://www.facebook/Aakhar

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी पी. राज सिंह

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

आखर

वर्ष: 2015 अंक 4 मई। **ई - पत्रिका**
सब पद अवैतनिक बा।



बड़प्पन
चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

प्रवासी पुरबी
जौहर शाफियाबादी





भोजपुरी सिनेमा आ दक्षिण के फिल्म (तुलनात्मक अध्ययन)
मनोरमा सिंह

बतकूचन
सौरभ पाण्डेय





खोईंछा
शशि भूषण

सौ साल के भइल भोजपुरी पत्रकारिता
पंकज भारद्वाज





माई रे माई
राज मोहन

परदेस से पाती
ज्योत्सना प्रसाद



परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र

प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिमेदारी लेखक के बा।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।
मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : अमित मिश्र , अनिमेष कुमार वर्मा , अश्विनी रूद्र
रेखा चित्र : शशि रंजन मिश्र

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter: @aakharbhojpuri www.bhojpurisahityangan.com

आखर के फुलवारी

आपन बात :	आखर जमात	4
बतकूचन :	सौरभ पाण्डेय	5
प्रवासी पुरबी :	जौहर शाफियाबादी	8
बिदेसिया लोक संस्कृति, गिरमिटिया आ पलायन :	देवेंद्र नाथ तिवारी	8
माई रे माई :	राज मोहन	13
परदेस से पाती :	ज्योत्सना प्रसाद	14
गांव के हालत आ पलायन :	सुनील पाण्डेय	15
जवाब (लघुकथा) :	समता सहाय	16
भोजपुरी के प्रवासन संस्कृति :	मुन्ना पाण्डेय	17
कविता :	राजीव उपाध्याय	21
कलकतवा में पियवा बारे लालटेन :	शशि रंजन मिश्र	22
मातृ दिवस :	नुरैन अंसारी	24
ओरहन :	गोरख मस्ताना	24
ताला लटका रे :	हृषिकेश चतुर्वेदी	25
तीसरा मोर्चा :	डा० उमेश जी ओझा	26
बंगाल सूबा में शोरा के व्यापार :	पी. राज सिंह	29
सोनवा कारन अइलो राम एही रे :	संतोष कुमार	32
भारतीय डायस्पोरा : भाषाई गतिशीलता :	डा० मुन्ना लाल गुप्ता आ	36
:	डा० राजीव रंजन	--
नवका च्चा :	सरोज सिंह	42
संवेदना के जोत जगावे वाला:चौधरी कन्हैया प्रसाद जी :	प्रमोद तिवारी	44
दिल जब बच्चा था जी भाग-4 :	बृज किशोर तिवारी	48
भगवान जब चहीहें सुधार दीहें :	तंग इनायतपुरी	50
गांधी जी के टूटल सपना :	पीयूष'द्विवेदी भारत	52
निठाह चिंतन :	डा० एस० के० सिंह	53
कविता :	चंद्रभूषण पाण्डेय	54
खोईंछा :	शशि भूषण	55
दहेज :	राजीव मिश्र	57
अनाथालय :	स्वस्ति आनयन	58
आहि रे बलम चिरई (अंतिम भाग) :	असित कुमार मिश्र	60
जंगल राज (बिदेसिया के पाती) :	निराला	63
दुनिया कहाँ से कहाँ जा रहल बा :	रीता सिन्हा	64
बाल परदेसी :	प्रभाष मिश्र	65
माई दिवस :	असित मिश्र	67
रंगून यात्रा संस्मरण :	आशीष राय	68
कुक्कुरजात (लघुकथा) :	गणेश जी बागी	72
लड़ाइयो में जूझे किसानवे के बेटा :	अतुल कुमार राय	73
कहानी अउरी कहानी के नायक :	विंध्य मिश्र	74
सौ साल के भइल भोजपुरी पत्रकारिता :	पंकज भारद्वाज	76
हथेली में समय (भाग 4) :	अनिल प्रसाद	79
भारत में किसान आत्महत्या के मूल वजह :	गौरव सिंह	82
भोजपुरी सिनेमा आ दक्षिण के फिल्म :	मनोरमा सिंह	84
भोजपुरी सिनेमा के वर्तमान स्थिति आ भविष्य :	अभिषेक भोजपुरिया	87
भोजपुरी गाँव-समाज के धरोहर 'गंगा मइया ... ' :	धीरेन्द्र कुमार राय	89
राउर बात :	आखर के ओर से	93
निहोरा :	आखर के ओर से	94



आपन बात

किसान के करेजा जब जुड़ा जाला त देश के अंगना दुआर चमक उठेला। बैशाख के बाली से निकलल अनाज के गोटाईल दाना देख के किसान के हिया हर्षित हो जाला। जेठ के सम्भावित ताप में भी बसंत लउके लागेला। साल भर के योजना क्षन भर में बन जाला। बुचिया के नया फ्रॉक से लेके बाबूजी के चश्मा के टूटल फरेम तक के सपना रास के बढ़त अम्बार के साथे जवान होत जाला। लेकिन इहे सपना जब टूटेला त अन्नदाता के वजूद छितरा जाला। ओकरा विश्वास ना होखे कि एक साल से बुनल सपना साँच होखे के करीब आके दगा दे जाई। एह साल प्रकृति जवना बेरहमी से किसानन के आँख के सपना छिनलSसियS उ देख के निर्दयता के भी दया आ जाई। एजुगा कई तरह के सवाल खड़ा कईल जा रहल बा। कुछ लोग एकरा के प्राकृतिक प्रतिशोध के रुप में देख रहल बा त कुछ लोग सरकारी तंत्र के कमी के हवाला दे रहल बा। कारण एगो नईखे हो सकत बाकिर परिणाम एकही बा – किसानन के आँख से बहत अनवरत लोर। भोजपुरिया समाज के अधिकांश आँख इहे लोर लिहले आज मझधार में खड़ा बा। एकटक देख रहल बा – समाज के ओर, सरकार के ओर आ भगवान के ओर भी। उम्मीद के किरण फूटत दिखाई नइखे देत बाकिर आस जियता आजुओ।

मार्क्स कहले रहे कि चेतना के घर दिमाग ह। दिमाग तबे काम करी जब आदमी के पेट भरल रही। भोजपुरिया समाज अपना माटी के लेके हमेशा चैतन्य रहल बा। चेतना जियत रहो एकरा खातिर अपना श्रम के साधन बना के आपन पेट भरले बा। कुछ त प्राकृतिक संसाधनन के अभाव आ कुछ सरकारी ईच्छाशक्ति के कमी के चलते रोजी रोजगार के तलाश में माटी से पलायन करे खातिर मजबूर भईल बा युवा ऊर्जा। पलायन के दर्द के जियले बा हमनी के समाज। बाकिर बरिसन तक संघर्ष के भट्ठी में तप के जब सामने आईल बा त मॉरीशस के खुबसुरती लेके। आधुनिकता के चकाचौंध से ओकर आँख नईखे चौंधियाईल। आजुओ ओजुगा के शीर्ष पद पर विराजमान भोजपुरिया अपना बहिन के देखते पुछेला- "का बहिना ! कईसन बाड़िस?" कवनो समाज में पलायन परिवार आ समाज के बनावट के तुर देला। भोजपुरिया समाज पलायन के अभिशाप के भी सृजन के आधार बना लिहलस। बिरहिन के वेदना , पिया के इंतजार आ करेजा के हूक से निकलल आह के संगीत के सुर में बांध के हमेशा खातिर सहेज लिहलस भोजपुरिया समाज -

रेलिया ना बैरी, जहजिया ना बैरी, पईसवे बैरी ना,
पिया के ले जाला जे बिदेशवा उ पईसवे बैरी ना !

"माई" शब्द उचरते हमनी के नस नस में वात्सल्य आ ममता के सागर उमड़े लागेला। दिन भर के थकल गोड़ के तारु में आस्ते से एक अंजुरी तेल छाप के नरम नरम हाथ के अंगुरी से दरद भगावे के दवाई माईये के लगे होला। बरिसन से निंद के बाट जोहत सुखल आँखिन के पलक झपकावे के जादू माईये के गोदी में होला। हमनी के अस्तित्व माई से, पहचान माई से, स्वाभिमान माई से आ संस्कार से भरल गगरी के नमी भी माईये से बा। आधुनिक विकास के विसंगति धीरे धीरे माई आ बचवन के बीचे खाई बढ़ा रहल बा। माई के ममता के कली पुष्पित होखे के पहिले मुरझा जाता। वात्सल्य के कोंढ़ी में महत्वाकांक्षा के जहर समा रहल बा। ई सब कुछ भावी दुनिया खातिर ठीक नइखे। एक दिन माई दिवस मना दिहला से बहुत कुछ ना बदली। जमाना के चुनौती एक तरफ आ भावी पीढ़ी के निर्माण एक तरफ। भावी पीढ़ी के समाजीकरण में कमी रह जाई त उ परेशानी के सामने चट्टान बनके खाड़ नइखे रह सकत। एह दौर के चुनौतियन के दबाव एतना मत हो जाव कि माई के वात्सल्य आ ममता के छाँह से भावी पीढ़ी वंचित हो जाव।

कवनो समाज के संस्कृति ओह समाज के गीत संगीत में रचे बसेला। भोजपुरी के प्रचलित गीत संगीत एकर अपवाद बा। एगो जमाना रहे जब भिखारी ठाकुर आ महेंदर मिसिर के गीत सुने खातिर जुटल लोगन के जमावड़ा देख के थियेटर उद्योग के सिंहासन डोल गईल रहे। साहित्य आ संगीत जेउँवा संतान खानी भोजपुरी माई के सेवा करस। केहू कम ना रहे। अधिका करे के होड़ रहे। आज उहो दौर आईल बा जब संगीत भोजपुरी माई के सम्मान तार तार करे पर उतर आइल बा। साहित्य सकपकाईल महसुस करता। आदमी के दमित वासना के सार्वजनिक कईल जाता लोक संगीत के नाम पर। गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, अभिनेत्री, गायक आ गायिका सन के एगो पुरा गुट भोजपुरी के लुगा लुटे पर लागल बा। ई संक्रमण के बेरा बा हमनी खातिर। अगर हथियार डाल दियाई त संस्कृति के लोप हो जाई। भोजपुरिया हथियार ना डाले। संकट के सोझा हिमालय खानी खाड़ हो जाला। आज फेरु आपन भविष्य सुरक्षित राखे खातिर अतीत से प्रेरणा लेबे के जरुरत बा। दू गो उपाय बा। खराब के विरोध करीं आ नीमन विकल्प परोसीं। पानी के बुलबुला स्थायी ना होला। स्थायित्व त निर्मल तरंग में ही होला।

जवना नेह छोह से रउआ सभे आखर के अंगीकार कईले बानी उ विवेचना से परे बा। आशीर्वाद आ समर्थन के हाथ हमनी के कपारे रही एहि उम्मीद आ विश्वास के साथे आखर के ई अंक रउआ सभे के सोझा बा। अपना विचार आ सुझाव से नवाजत रहब एहि कामना के साथे-

आखर परिवार



बतकूचन...

बइसाख-जेठ में घामा-घामा, गाँवें-गाँवें, थहरात देही, बथत तरुए घूमत बाबूजी लोगन के के ना देखले होई ? जवने दुअरा बाबूजी के ठेकाना मीलो, उहवाँ उन्हकर मुँह ना आँखि बोले लागे आ जवाब उन्हकर कान ना, ईहे अँखिया जोहे ! उनका ओह आँखिन में लोर के नमी ना, लहकत करेजा के धुआँ होत रहे। कवना घरे सिउजी नइखन ? कवना घरे गौरा नइखी ? खलसा जाने आ जोहे के काम बा। टीपन भर मीलि जाओ। आ, घर-परिवार के बेवँतिया उलार होखे के नौबत जनि आओ, बस !

"लाज रखिहऽ ए बसेसर बाबा ! बुचिया निकहा दुअरा लागि जाओ !" ईहे ऊ उमेद हऽ के कल ना धरे देवे। बाबूजी गाँवें-गाँवें, घामा-घामा.. "कवनो नीमन लइका होखे त रउओ नाँव बताइब, ए भाईजी.." करत घूमसु।

एह बाबूजी लोगन के बऽल होत रही माई। माई, जे अक्सरहा आपन लइकाईं के बितला, आ गवना भइला का बाद से कुहुकल भुला जासु। सोचलहूँ प ना सोचाये जे ई माइयो कबो बुचिया होखिहें। एह अबोली महतारी के मन में हर छन, हर घड़ी आपन जिनिगी के भूत आ आपन 'करेजा' के भविस्य के बीच हड़बोंग मचल करे। तब के अचके में बड़ भइल ऊ बुचिया, माने माई, आपन बुचिया के बड़ भइल देखे त एकबेरिये छछात बोल परे, ".. देवताऽ, एही लगनिये कुल्हि ओरिया जाइत.. जवना घर के ई लछमी हई, बुची ओही दुअरा जासु.."

ई सोच पारम्परिक होखल करे, जे एक पीढ़ी से दोसर पीढ़ी में ससरत आवे। अपना बुची से लागल उमेद, आसा-निरासा, उछाह-बिछोह के जवन लहरियन में हिलोर लेत ई माई सकदम भइल रहत रही, ओही लहरियन से तर भइल बाबूजी आपन बेंवत के तउलत, त कबो नकारत, गाँवें-गाँवें, घामा-घामा भुतलाइल फिरसु। आजुओ ई बाबूजी गाँवें-जवारे लउक जइहें।

माई कतहूँ के काहें ना होखसु अक्सरहाँ ई ना चाहसु जे उन्हकर ससुरारि के बेक्ती अस लोग ओकरा बुचियो के ससुरारी होखो। अइसन काहें ? एहसे जे एह माई के मन में घरे-परिवार ना, बलुक सउँसे समाज से पूछे लाएक जाने कातना-कातना सवाल घुमरी पारत रहल करे। जवना मरद के अडुरी एह माई के ओकर बाबूजी धरा देले रहलन, ओह मरद से भला अब कवन सवाल आ कवन सिकायत ? बाकिर, घर-परिवार के बेक्ती आ लोगन प त मन मारहीं के पारल बडुए। कवनो एगो बात होखे त कहल जाउ। भुलइले दिन ना भुलाला। का बाबूजी के ई कुल्हि तब ना लउकल रहे ? उहाँ का बस लइका प चलि गइल रहनीं। "लइका नरम-सुभाऊ हऽ..", बाबूजी कहसु, "कलकात्ता में किताबी के दोकानी प बा.. हुनरमन्द हऽ.. पाछा आपनहूँ दोकान कऽ लीही.. "

कामगार-मजूर एगो बाप अपना खोज-खबर प एह से ढेर कुछऊ कहियो ना पावे। से एकरा आगा कवनो बतियो पुछल ना बने। जोहल, सँकारल, ठानल कुल्हि कतना में पोसाई, कइसे पोसाई, आकि ना पोसाई, जइसन तलफत सवालन प तब कवनो जवाब ना मीलो। जवार भर में बेटवन के बाबू लोग 'समय-घड़ी' आ 'लगन' नजिकाते गंगाजी के सोंस अस बूड़ा मरले रही। भा, घड़ियार अस मुँह बवले पटाइल रही। साँसहूँ ना घींची लोग। एगो नवका परिवार के बसे के सुघड़ी में समाज के हई कवन बेजाईं सरूप लउके ? काहें अहंकार आ बेसरमी के पाटन के बीच बेवहार आ नरमई के हइसन

सौरभ पाण्डेय



सौरभ पाण्डेय जी के पैत्रिकभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ। रउआ पचीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं। पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कॉपोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी। आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी। परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाडी स। साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा। साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा'।

पिसाई ? अबहियों ले ई बेढंङई खूबे चलल आ रहल बा, आ निकहे लउकेला । ना नाता के कवनो माने, ना सम्बन्ध के कवनो मतलब, ना निहोरा के कतहीं सुनवायी ! सुनल-सुनवावल, कहल-कहवावल, छपिटाइल, रिरियाइल कुल्हि अनेरिया, एह अहंकार का सोझा ! भाव-भावना के जब हेह तरी लसराहीं के बड़ुए, त कवना करम के जात-पाँत ? काहें के गोत्र ? आ का गोत्र के नाँवें जनवावल भाईचारा ? कइसन रिस्ता ? कइसन सम्बन्ध ? आ, अव्वल कवना करम के 'आपन' कहात ई समाज ?

परोजन निबहि जाओ के उमेद में 'ओसारा' आ 'भरोसमन्द लोगन' के जोहत अमदी के आगा-पाछा बताईं पराया के होला ? आन्ह के लउकेला ? केहू ना ! सभ आपने लउकी । आगा से लेके पाछा ले सभ अपनहीं समाज, अपनहीं नाता, अपनहीं जात के लोगवा लउकिहें । तबहूँ बेटी के एगो कमजोर बाप का सङे जवार-समाज के हतना घिनहा बेवहार काहें होखे ? कवन घरे, कवना दुअरे बड़का बाबूजी, भा चाचाजी, भा फूफाजी आ पाहुन नइखन ? कवना अँङने आ परिवारे बड़की माई भा चाची भा फुआ नइखी ? तबो काहें अपने कहात लोगवा अपनहीं के खून चूसे में लागल रहेला ?

माई के हइसना सवालन प आजु ले कवनो जवाब ना मीलल । घर के दलानी आ पिछवड़िया के कोठारी बेजवाबे के सँकेता परल माई के लोर से ओद होत रहल बा । जाति-प्रथा के बेताल बूझीं जइसे सभ के कान्हा प चढ़ल सभन के कान फूँकत रहेला, आ लोग बेतलवा से छुआइल नर-पिसाच भइल अपनहीं में एक-दोसरा के नोंचत-चोंथत-बकोटत जीयत जा रहल बा । का कवनो नवहा बबुआ जीवन घींचिहे, आ का कवनो बुची निकहे घर बसइहें ? जेठ के घाम खलसा पियरी, काजर आ मऊर सहियावे के सपना जगावत ना आवे । बलुक आपना बुचिया के सोझगर जिनिगी खातिर बेर-बेर चिचिरी पारत माई-बाबूजी लोगन के मर्हुआइल मन-बगइचा में गुम्मस के धूरि आ लचारी के गार्दा उड़ावत आवेला ! आ ओही धूरि आ गार्दा से ऊ रहि-रहि के पिसाची 'बिण्डो' उठावत आवेला ! गँइयन में आजुओ कहाला, जे धूरि-गार्दा के भँवर पारत हावा के ओह 'बिण्डो' में भूतवा घुमरी पारेले स । बात इचिको बेजाईं नइखे । बुद्धि-बिचार प जबले राछछी स्वारथ के 'हसोथू' ताप बनल रही, सोच-बेवहार में भुतवने के जोर बनल रही ।

भोजपुरिहा समाज में अइसहूँ बियाह का आगा कुछऊ लउके ना, आ ना हाल्दे कुछऊ सोचाला । ना कवनो सपना, ना कवनो लच्छ, ना कवनो उद्योग । कवनो बाबूजी बहिरी -- एक समय ई कलकत्ता रहे, अब मुम्बई, दिल्ली, पंजाब भइल बा-- कमाए जात बाड़े त लइकिया के बियाह खातिर । कवनो माई घर के काम-काज में लइकियन के बलाते जोरत रहेले, त ओकर बियाह खातिर । लइकिये ना कातना लइकओ आजु पढ़ि रहल बाड़े सऽ त खलसा अपना बियाह खातिर । अब हइसना प कवनो इस्कूल में चलत परीच्छा में नकल के 'लूट' मचि रहल बा त कवन अचम्भा जी ? हइसना परीच्छा आ रिजल्ट के रउआ काहें माने-मतलब पूछि रहल बानीं ? साहेब, सर्टीफिकेट मीले के चाहीं सर्टीफिकेट ! 'पास' भइला के सर्टीफिकेट ! 'नकल' के हेह 'खेल' में आगा से लेके पाछा ले, आ, ऊपर से लेके नीचा ले, सभ के सभ 'ईमानदार' कण्ट्रिब्यूसन कऽ रहल बा । कतहीं केहू एह 'वेबस्था' के खिलाफ गाल करत ना लउकी । ठेका प परीच्छा 'कमिट' हो जाता । नाहीं त अगिले लगनिया बियाह प बनि आई ! केहू के छोड़ीं, रउए एह 'नकल' प रोक का, बस एहके बाउर बोल भर दीहीं ! बन्दूक निकल जाई महाराज ! गोली चलि जाई ! गार्दा उड़ि जाई ! राउर जिनिगी बसि गइल, आ राउर समय निकहे निकलि गइल, त एकर का माने, रउआ इन्हनीं के जिनिगी नासि देब ? चलल बानीं रउआ समाज सुधारे ? पहिले आपन सोच सुधारीं ! देखीं जमाना कहवाँ से कहवाँ जा रहल बा, आ एकर का 'डिमाण्ड' बा आजु ! निकहे पढ़ि-लीखि के बुची लेडी-डाग्दर ना बनि जइहें । बबुआ के कवनो वजीफा ना मीले लागी । आ लेडिये डाग्दर कहाये के बा त दखिन-टोला के सुरसतिया के कम मत आँकीं । खूब दवइयन के नाँव रटले बीया । सात दर्जा से आगा ऊ भलहीं ना पढि सकल, बाकी दिमाग के खूबे तेजि हऽ । पढ़ल ना, ऊ कढ़ल बीया । तवना प ओकरा हाथ में जस बा । जेठ-असाढ़ में अनाधून कमाई करेले । सावन-भादों में जइसे ओकर लाटरी निकलल परेला । सङहीं ओकर मरदो लागल बा । कबहूँ ऊ कतहीं दवाई के दोकानी में लागल रहे । आपना मेहरारु सुरसतिए सङे अब 'डाग्दर साहेब' कहाता । कस के पीटि रहल बाड़न स दूनो । अपना-अपना मरीजन सङे लोगवा इन्हनीं के दुआर प फजिरहीं से बिटुराए लागेला । 'देखनिहार के धरनिहार लागल' का कहाला, रउओ तनि देखि आईं इन्हनीं के दुअरा ! बाकिर, सभ केहू के भागि सुरसतिया आ ओकर मरदा अस ना नू होखी ! से हेह 'बियहजोगू' सिच्छा आ परीच्छा से जवन लइका-लइकी निकल रहल बाड़े स, ऊ 'ऊँटहा बिलार' अस उटपटंङिये बाड़े स । पूरा शुतुर्गुर्बा ! दिल्ली-मुम्बई-गुजरात जइसना जगहा से कमावल पइसा प बाबूजी लोग भलहीं खुल्लमखुल्ला नति अँङरासु, बाकिर,

बबुआ आ बबुनी के गोड़ सचकी समतल प ना लउके। 'ऊँटहा बिलार' अस फानत फिरेला लोग। आ आजु के बाबुएजी लोग कवन करम के बा ! बेरोजगारी के मारल ओह 'घूरा-भारा' लोगन के बहिरी निकलते अचके में पइसा का भेंटा जाता, पाग पहिरल 'समधी' अस लिफाफाबाजी बतियावे लागऽता लोग ! आ तवना प एह जमात के बेगोड़-मूड़ी के 'भोजपुरिहा सिनेमा', आ टिटकारी पारत 'गाना' मीलि जाता। कोइला के बघार में करिखा के पोचारा, भला अउरी का कहाला ?

ईहे कारन बा जे आजु समाज में सोझ दू तरी के जीवन आ जीवन के धारा बहत बुझाई। आजुके हेह नवही लइकियन में तबके अबोली 'बुचिया' रउआ साएदे लउकी। एह लइकियन के माइयो पारम्परिक माई अस सँकेता में बिसुरत ना मीलिहें, बलुक आपन 'जगजितनो' बेटियन प इन्हनीं के अकूते भरोसा होला ! बियाह भइला प एह लइकियन के नइहर से इन्हनीं के ससुरारी भलहीं कुछऊ नति जाओ, हाथे एगो मोबाइल जरूर चलि जाला। ई मोबाइलिया त बस साधन हऽ जी ! एकर के कइसे उपयोग कऽ रहल बा, ई अपना में एगो अलगे बिसय बा। जवन मोबाइल समाज-जवार में होसगर लोगन, बिसेसकर मेहरारू खातिर जानकारी आ जागरुकता के बढ़ावे के बड़हन कारन भइली स, उहे मोबइलिया कतना घर-परिवार के नास करे प लागल बीया। हमनी के हँसी-हँसी में बतकही करीं जा, जे 'गौरमिण्ट' ऊ होले, जे मिण्टे-मिण्टे गौर करेले, आ हर केहू के हर दिन के हिसाब रपट लेत रहेले। आजु के माई लोग 'गौरमिण्ट' अस नवही बियाहल लइकियन से खलसा दिने-रात ना, बलुक छने-छन के हिसाब लेत लउक जइहें। बबुनी ससुरा बसिहें तऽब, जब बबुनी उहवाँ रचिहें। बसे खातिर पहिले जूरेके परेला। आ, जुरला के पहिले ओह परिवार में रचे के परेला। बाकिर, जमाना त ऊ आइल बडुए जे ढेर लइकियन खातिर उन्हनीं के ससुरारी में जुरला आ रचला के साइत हाल्दे आवते नइखे, ऊ बसिहें का खाक ? हइसना में का बियाह, आ का बियाह भइला प के ससुरारि ? 'एडवांसपन' के जवन ना हावा बहल बा कि परिवार के परिवार मताइल बा। आ एही बयार में सभके पाछा उघार भ रहल बा। बाकिर, केहू के होस नइखे। परिवार बसे से पहिलहीं उजरि रहल बाड़न स। बाकिर, आपना लड॰टई प लोग-बाग आन्हर-बहिर भइल बा। आजु ढेर परिवार के लोग ना परम्परे निभावे लायक रहि गइल बा, आ ना उनका लगे आधुनिक बेवहार आ चलन के मर्म बूझे के बेंवतिये बा। 'आधा तीतर, आधा बटेर' आली जिनिगी जीयत रेंड़ी के फेड़ भइल लउक रहल बा लोग, माने बेमतलबे उतान ! खैर, एह बिसय प फेर कबो.. .

www.aakhar.com

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर



आखर ई-पत्रिका

जानकारी भोजपुरिया संस्कृति, सभ्यता आ संस्कार प

facebook/aakhar @aakharbhojpuri

www.bhojpurisahityangan.com

प्रवासी पुरबी

कुलवा के लाज राखे छूछे गइलें सइयाँ,
से बटोही सुनऽ हो पिया जाई बसलें बिदेस।

बिरहा सतावे राति, निन नाहीं आवे,
से बटोही सुनऽ हो, भइनी जोगिनिया के भेष।

गइलें कलकत्ता जाई भइलें गिरमिटिया,
से बटोही सुनऽ हो, भके-भके भेजेलें सनेस।

डहकेलें रोजे सइयाँ उढ़री ना राखस,
से बटोही सुनऽ हो, मन पड़े जब-जब देश।

पतिया में लिखलें बाड़ें, छठिया में अइहन,
से बटोही सुनऽ हो, हम भाँखी गौरी-गणेश।

जनि होखे पंडित तोता, मुँशी के हलिया,
से बटोही सुनऽ हो, बनि गइलें देसवा बिदेस।

छोटको देवरवा लाँघी देलस समुंदर,
से बटोही सुनऽ हो, बभना ब्रजी परदेस।

बाल बुतरू खेति बारी नाता खोंता सबके,
से बटोही सुनऽ हो, हँसी हँसी झेलीलें क्लेश।

मेहरी के पीड़ा 'जौहर' लोग बुझे हीरा,
से बटोही सुनऽ हो, मरदे बा सगरी नरेश।

जौहर शाफियाबादी



जौहर शाफियाबादी जी शाफियाबाद शरीफ गोपालगंज , बिहार के रहे वाला हई । अपने भोजपुरी खाति सबसे पहिले १९७० में गोपालगंज अनुमंडलाधिकारी के सोझा अनशन कइले रहीं । भोजपुरी साहित्य के आँचर में हर विधा में सृजनरूपी खोइछाँ भरे में रउआ नेह-छोह से जुटल बानी । भोजपुरी में पहिला गजल महाकाव्य 'रंगमहल', ऐतिहासिक उपन्यास 'पुरबी के धाह', ललित निबंध संग्रह ,कबिरा खड़ा बाजार में, 'वेद और कुरान' सहित दर्जन भर बहुचर्चित कृति प्रकाशित भइल बा । वर्तमान में इहाँ के 'भोजपुरी व्याकरण' लिखे में पूर्ण मनोयोग से जुटल बानी ।



बिदेसिया लोक संस्कृति
गिरमिटिया आ पलायन

देवेंद्र नाथ तिवारी

भोजपुरिया बधार से पलायन, प्रवासन के दू-तीन सदियन पुरान परंपरा आजु ले लगातार चलत आ रहल बा। ई, एह इलाका के एगो अइसन सच्चाई बा जवना से केहु इनकार नइखे कर सकत। अगर रउआ यकीन नइखे तऽ सीवान, छपरा, आरा-बक्सर, देवरिया, गोरखपुर, बलिया-बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर-गाजीपुर, बेतिया, मोतिहारी के रेलवे स्टेशन के सीन इयाद करीं। एह स्टेशनन से वैशाली, बलिया- सियालदह, अम्रपाली, अवध-आसाम, जनसेवा, बाघ, सप्तक्रांति, संपर्क क्रांति, पवन, गोदान, जइसन ट्रेन से अनगिनत लोग के काफिला रोज दिल्ली, पंजाब, बंगाल, असम, बंबई, सूरत आ चेन्नई खाति प्रवासन करेला।

भीड़ के इ आलम की चार महीना पहिले रिजर्वेशन लिहीं कंफर्म ना मिली। अइसन घटना से रउओ कबो दू-चार जरूर भइल होखब। हमरा एहु बात के यकीन बा, रउओ कबो ना कबो अइसन ट्रेन से बतौर प्रवासी एह महानगरन के जतरा पऽ निकलल होखब। अइसन ट्रेनन के समकालीन हिंदी साहित्यकार अरूण प्रकाश अपना एगो लघुकथा में 'भइया एक्सप्रेस' के नाम दिहले बाड़ें।

पहिले जवन पनिया जहाज प्रवासी मजदूरन के आपन मातृभूमि से दूर ले जात रहे। आजू ओह पनिया जहाज के स्थान हवाई जहाज ले लिहले बा। पटना, लखनऊ, दिल्ली, कलकत्ता से खाड़ी के देश खाति रोजना कई गो जहाज उड़ेलें। हर जहाज में सैंकड़न के संख्या में भोजपुरिया बधार के 'बिदेसिया' बइठल मिल जइहन।

यूनाइटेड प्राविन्स बैंकिंग इंक्वायरी कमेटी रिपोर्ट 1929-30 में



देवेन्द्र नाथ तिवारी

देवरिया, युपी के रहे वाला देवेंद्र नाथ तिवारी जी , द संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के कॉपी एडिटर रहि चुकल बानी। इँहा के स्वतंत्र पत्रकार भी बानी आ एह घरी वर्धा महाराष्ट्र मे आगे के पढाई कई रहल बानी । कई गो शोध परक लेख अलग अलग पत्रिकन मे प्रकाशित हो चुकल बा । आखर पेज से शुरु से जुड़ल बानी आ भाषा साहित्य प कई गो लेख आखर प भी लागि चुकल बा ।

औपनिवेशिक काल में भइल विस्थापन के बारे में लिखल गइल बा - 'आजु से बीस बरीस पहिले इ एगो मान्य तथ्य के रूप में कहल जा सकत बा कि बनारस डिविजन में कवनो परिवार अइसन नइखे जेकर एको सदस्य बंगाल, आसाम, आ दोसर प्रदेश में नौकरी खाति ना गइल होखे।'

अइसना में आईं, एह प्रवासन के इतिहास के तनिका टटोल लिहल जाए।

काहें भइल प्रवासन ?

1765 में बंगाल के राजस्व प्रशासन ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ में चल गइल। कंपनी के भूमि पट्टेदारी योजना के अंतर्गत ना खालि जमीन के हस्तांतरण आसान भइल बलुक जमीन संबंधी विवादन के चलते मुकदमा, अपराध आ भ्रष्टाचार के भी बढ़ावा मिलल। कर्ज के बोझ के चलते अनेक किसानन के आपन जमीन साहूकार के हाथे बेंचे के पड़ल चाहें गिरवी राखे के पड़ल। नतीजतन जवन किसान हाशिया पऽ रहलें उनका दिवालिया होखे से भूमिहीन श्रमिकन के संख्या में इजाफा भइल जवन अंतत: विदेश में प्रवासी बन गइलें।

अतने ना, 18वीं शताब्दी में भारत अपना हस्तशिल्प उद्योग के दम पऽ एगो बड़हन उत्पादक शक्ति रहे जहाँ लाखन लोगिन के रोजी-रोटी के प्रबंध होत रहे। खासतौर पऽ वस्त्र उद्योग काफी फलत-फूलात रहे आ एहिजा तैयार उत्पाद के विदेश में काफी माँग रहे। असल में ब्रिटिश वस्त्र उद्योग भारतीय वस्त्र के मुकाबला ना कर सकत रहे। नतीजा अंग्रेजी हुकुमत द्वारा तरह तरह के प्रतिबंध थोप दिहल गइल जवना से भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के साँस थमें लागल । जहाँ एक ओर 19वीं शताब्दी आवत आवत भारत के हस्तशिल्प उद्योग खास तौर पर वस्त्र आ हथकरघा उद्योग जवना में ढाका के मलमल, बनारस मिर्जापुर के साड़ी आ कालीन उद्योगन के पतन हो गइल, उहें दोसरे ओर आधुनिक औद्योगिकरण मूलत: बंबई, कलकत्ता आ बंगाल/बिहार के कोयला उत्पादन क्षेत्र तक सीमित रहल।

अतने ना, 19वीं सदी के आखिरी 4 दशक में लगातार पड़े वाला आकाल ग्रामीण जनसंख्या, खास तौर पऽ खेतिहर मजदूर, बुनकर, छोटहन जोत वाला किसान आ दबल-कुचल लोग के दुख पऽ नून मले के काम माने गरीबी में आटा गिल करत रहे। 1857 के क्रांति के बाद अंग्रेजी हुकुमत के दमनकारी आर्थिक नीतियन के चलते अनाज के पैदवार में भारी कमी आइल आ दाम भी बढ़ गइल। ओहिजा दूसरे ओर, एही कालखंड में खद्यान्न के निर्यात में वृद्धि भइल जवना से देश में अनाज के संकट पैदा हो गइल। भूख से बेबस इंसान, रोटी के तलाश में भटकबे करी। अइसन भटकत इंसान के अरकटिया आ आरकाटिन (अंग्रेजी भर्ती एजेंट) अपना चाल में असानी से फँसा लिहलन स।

अकाल के प्रभाव कम करे खाति, अंग्रेजी हुकुमत के नहर बनावे के चाहत रहे जवना से अनाज के उत्पादन बढ़े बाकि सरकार रेल निर्माण पऽ अधिक जोर दिहलस जवना से कंपनी राज के व्यावसायिक हितन के पूर्ति होखे। अंग्रेजी सरकार देश के औद्योगिकरण करे में भी नकाम साबित भइल जवन गरीबी आ बेकारी के दूर करे के आखिरी उपाय रहे।

अइसना में कृषि पऽ अत्याधिक निर्भरता, मौसमी बेरोजगारी, बड़हन पैमाना पऽ अशिक्षा आ जातिप्रथा के चलते श्रमजीवी वर्ग के एगो हिस्सा विदेश में जाए खाति मजबूर भइल। अइसन परिस्थितियन में औपनिवेशक आ सम्राज्यवादी ताकतन द्वारा अंग्रेजी हुकुमत के मजदुरन के निर्यात करे खाति असानी से मना लिहल गइल।

इहाँ इहो बतावल जरूरी बा कि विदेश जाए वाला 99.6 फीसदी श्रमिक अंग्रेजी उपनिवेशन में आ 0.4 फीसदी फ्रेंच/ डच/ पुर्तुगाली उपनिवेशन में गइलें। एह प्रवासियन में करीब 98 फीसदी लोग मजदूर रहलन आ 2 फीसदी में व्यावसायी/ धर्मप्रचारक/ पुरोहित/ सिद्धदोषी लोग रहे।

के हऽ गिरमिटिया ?

1833 में दास प्रथा के उन्मुलन के बाद ब्रिटिश राज के मय अफ्रीकी दास आजाद हो गइलें। जवना से ब्रिटिश उपनिवेशन के बगान आ खेत में मजदूरन के भारी कमी हो गइल। एह कमी के पूरा करे खाति अंग्रेजी हुकुमत द्वारा 1834 में इनडेंचर लेबर सिस्टम के व्यवस्था बनावल गइल। इ एगो करार बद्ध व्यवस्था रहे। जवना के अंतर्गत आजु के पूर्वी उत्तर प्रदेश आ बिहार से मजदूरन के भर्ति कइल गइल। इ मजदूर गिरमिटिया कहिलें।

गिरमिटिया(एग्रीमेंट) के भोजपुरीकरण हऽ। एह करारबद्ध व्यवस्था के अंतर्गत 3 से 5 साल के एग्रीमेंट होत रहे। करार

करे वाला मजदूर के निर्धारित वेतन पऽ खेत/बगान आ कारखाना में काम करे के पड़त रहे। अनुबंध समाप्त होखे के बाद गिरमिटया मजदूर के उपनिवेश में कहीं बसे चाहें दोसर जगहा काम करे चाहे घर वापसी के इजाजत मिल जात रहे। एह गिरमिटिया परंपरा के पूरा वर्णन फिजी के एह गिरमिटिया गीत में बा-

भोली हमें देख अरकाटी भरमाया हो,
कलकत्ता पार जाओ पाँच साल रे 'बिदेसिया'।
डीपुआ में लाये पकड़ाई कगदुआ हो
अँगुठवा लगाये दीना हाय रे 'बिदेसिया' ।

इ व्यवस्था 1920 में समाप्त हो गइल। एह व्यवस्था के अंतर्गत मॉरीशस में करीब 449220, सूरीनाम में 324000, गुयाना में 240000, त्रिनिडाड में 144000 आ फिजी में 68000 हजार प्रवासी मजदूर गइलें।

रेलिया बैरन आ प्रवासन के रिश्ता

रेल प्रवासन के गति के कवने लेखा प्रभावित कइलस एकर विवरण लोकगीत संग्रह कर्ता रामनरेश त्रिपाठी के आख्यान में मौजूद बा। ऊँहा के लिखत बानी, 'एक बेर हम जौनपुर से प्रयाग जात रहनी। बनौर रेलवे स्टेशन पऽ कुछ मेहरारून के रोवल सुनाई पड़ल। ऊ शायद अहिर/ चमार जाति के मेहरारू रहलीं। ऊ कुछ मरद लोगिन के विदा करे आइल रहली। जे कलकत्ता जात रहलन। संयोग से हम थर्ड क्लास के जवन बोगी में बइठल रहनी ऊहो लोग ओही बोगी में चढ़लें। ट्रेन, प्लेटफार्म पऽ मेहरारूअन के रोवत छोड़ धुँआ उड़ावे लागल। ओह मरद लोग के संघे कुछ मेहरारू भी बइठल रहली, जे आपन पति के लगे कलकत्ता जात रहली। जइसे ट्रेन तेजी पकड़लस। मेहरारून कुल्ही रोवत रोवत ई गीत गावे लगलीं-

पुरूब से रेलिया आवे, पछुम से जहजिया,
पिया के लादी गई हो।
रेलिया होई गई मोर सवतिया, पिया के लादी गई हो
रेलिया न बैरी, जहजिया न बैरी
ऊहे पइसवा बैरी हो
देसवा देसवा भरमाये, ऊहे पइसवा बैरी हो...'

असल में वैश्विक स्तर पऽ प्रवासन खाति जवन '5टी' के परिभाषित कइल गइल बा ओह में एगो बड़हन 'टी' ट्रांसपोटेशन हऽ। एही ट्रांसपोटेशन से प्रवासन के प्रवाह बढ़ेला। अंग्रेजी शासन के आपन कल करखाना खाति कच्चा माल के आवश्यकता रहे। एह खाति अंग्रेजी हुकमत 1857 के आस पास पूर्वांचल आ बिहार के रेल नेटवर्क के माध्यम से कलकत्ता से जोड़लस। पहिले पहिले 1857 में कलकत्ता से मिर्जापुर खाति ईस्ट इंडियन रेलवे के पहिला गाड़ी चलल रहे। 3 मार्च 1859 के प्रयाग से कानपुर तक रेल चले लागल आ 1870 में कोइलवर पुल बन जाए के बाद 1880 में मध्य आ उत्तर बिहार के बंगाल आ नार्थ वेस्टर्न रेलवे से जोड़ल गइल।

यातायात के बेहतर सुविधा में लोग इहाँ से कलकत्ता खाति प्रवासित भइलें आ कलकत्ता से औपनिवेशिक बगान में। मुँशी रहमान खान के आत्मकथा 'जीवन प्रकाश' आ पंडित तोताराम सनाढ्य के 'फिजी द्वीप में मेरे 21 वर्ष' में एकर विस्तृत विवरण मौजूद बा।

बिदेसिया लोक संस्कृति

भोजपुरिया इलाका से व्यापक पैमाना पऽ प्रवासन से भावनात्मक छति भइल। इ छति आपन देश छोड़े वाला 'बिदेसिया' आ ओकरा पीछे छूट गइल पत्नी अउर परिवार दूनो के भइल। विछोह के एह पीड़ा के रागात्मक अभिव्यक्ति 'बिदेसिया लोक गीत गायन परंपरा' में भइल जवना के आधार बना के भिखारी ठाकुर 1917 में 'बिदेसिया' लोक नाट्य के सृजन कइलें। एह दूनों 'बिदेसिया' में फर्क इ रहे कि भिखारी ठाकुर जी के 'बिदेसिया' कलकत्ता में कमात रहे आ असली 'बिदेसिया' आपन देश से दूर 'आन मुलुक' में।

इहाँ इहो बतावल जरूरी बा कि 'बिदेस' शब्द के पहिला प्रयोग अमीर खुसरो साहब के रचना में मिलेला। अमीर खुसरों साहब के एगो गीत देखीं-

काहे को ब्याहे बिदेस,
अरे! लखिया बाबुल मोरे
काहे को ब्याहे बिदेस
भैया को दियो बाबुल महल दो-महला
हमको दियो परदेस
अरे! लखिया बाबुल मोरे...

www.bhojpurisahityangan.com

एकरे बाद कबीर साहेब के भी कई गो दोहा आ साखियन में 'बिदेस' के प्रयोग मिलेला जवन अध्यात्मिक संदर्भन में भइल बा। कबीर दास एगो दोहा-

प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय बिदेस।
तन में, मन में, नैन में, ताको कहाँ सँदेस॥

1884 में काशी निवासी पंडित बेनी माधव राम अपना एगो लोक गीत में पहिला बेर 'बिदेसिया' शब्द के प्रयोग कइलें- जवन ओह आदमी के संबंध में रहे, जे आपन गाँव छोड़ के विदेश चल गइल बा-

काहें मोरी सुधी बिसारे रे बिदेसिया
तड़पी तड़पी दिन रैन गवाँओ रे
काहें मोसे नेहिया लगाये रे बिदेसिया...

1896 में राम सकल पाठक द्विजराम द्वारा बिदेसिया के इयाद में रचित 'सुंदरी विलाप' लिखल गइल। 1912 में गोरखपुर से 'प्यारी सुंदरी वियोग' नामक पुस्तिका छपल जेह में 'बिदेसिया' शैली के गीत रहे।

भिखारी ठाकुर जी के बिदेसिया-

गवनवा कराय सैंया घर बइठलें से
अपने लोभइलें परदेस रे बिदेसिया
चढ़ली जवनियाँ बैरन भइली हमरी से
के मोरा हरिहें कलेस रे बिदेसिया

इहाँ इ कहल अनुचित ना होई, प्रवासन चाहें विस्थापन खालि भौतिक रूप में ना होखेला। एकरा साथे प्रवासी चाहें विस्थापित लोग के साथे-साथ उनकर सांस्कृतिक गठरी भी प्रवासित होखेले। एह गठरी में लोक परंपरा, लोक साहित्य आ उनकर भाषा -संस्कार जइसन मूलभूत तत्व भरल रहेला।

गिरमिटिया प्रवासियन के संघे भी सांस्कृतिक गठरी गइल। जवना में शामिल रहे विछोह से उत्पन्न गीत, रिश्ता (जहाजी भाई आ जहाजीन) रामायण/ आल्हा उदल/ रामचरित मानस/ हनुमान चलिसा/ गीता-कुरान, सतुआ अचार आदि। ई गठरी, अवशेष के रूप में मॉरीशस के शिवरात्री, फिजी के दशहरा-रामलीला, त्रिनिडाड के 'होसे कार्निवाल' आ सूरीनाम के गीत गवनई में आज भी जिंदा बिया। जहाँ एह गठरी के तत्व कमजोर पड़ले ऊँहा के भोजपुरिया संस्कृति कमजोर पड़ गइल। त्रिनिडाड आ गुयाना एकर उदाहरण कहल जा सकत बा।

खैर साँच तऽ आजु भी उहे बा, भोजपुरिया बधार से जाए वाला हर प्रवासी अपना सांस्कृतिक गठरी में भोजपुरी आ भोजपुरिया संस्कार जरूर बान्ह के ले जाला। आ इ 'बिदेसिया' जहाँ जालें आपन संस्कृति के बिया जरूर बो देलन।

इ संक्रमण के दौर बा। 'बहुसंस्कृति' आ 'हाइब्रिड संस्कृति' के दौर बा। अइसना विपरित माहौल आ चहुँ ओर दबाव के बाद भी आपन मूल भोजपुरिया संस्कृति के बचावल, सहेजल हर भोजपुरिया के जिम्मेदारी बा। आईं आगे बढ़ी भोजपुरिया भाव में जिये के प्रण लींही।

बोल वंशी के बसंती बाण बढ़ के फूँक दऽ।
भोजपुरिया भाव भइया, शान बढ़ के फूँक दऽ॥ (रंगमहल)

ताकि भोजपुरिया सांस्कृतिक गठरी अमर-अजर बनल रहो।

जय भोजपुरी।

संदर्भ ग्रंथ -

- 'बिदेसिया' - बद्री नारायण प्रकाशक- उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र, इलहाबाद
- 'काहें गइले बिदेश' - संपादक मौसमी मजमूदार, मैंगो पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलहाबाद
- 'प्रवासी मजदूर'- लेख- धनंजय सिंह, प्रतिमान में छपल
- 'फिजी द्वीप में मेरे 21 वर्ष' - पंडित तोता राम सनाढ्य
- 'जीवन प्रकाश'- मुँशी रहमान खान

माई रे माई *(सरनामी कविता)*



माई रे माई सुन तू
तू ना रोइये
चाहे दूर तोसे जाईला
तू ना रोइये

फबे है ना अब हवा
ना तो बुझा है बरखा
सुख के छाहीं में आखिर
ना रहल कौनो ठिकाना
जाय संघे हमार गठरी में
बस एही गुनाह के कर्जा
तोर याद खाली तोसे चोराय के
जोगे के सब से लेजायला
बाकी धोये क दाग सब जायला
तू ना रोइये
ना ना खोज और हमे
जिनगी के आसरा में तू
टाइम से पहले ओरायेगे
तेल दिया के
बोझा के तारे मुर्झायेगे
फूल सपना के
अंजोर पे रतिया छागे
जईसे सांस कोई और भरमायेगे
खाली याद अब छोड़ के जायला
तू ना रोइये
भले धीरे धीरे हम ओरायला
तू ना रोइये
सुन तू सुन तू माई रे
तू ना रोइये



राज मोहन

उत्रेच , नीदरलैंड के रहे वाला राज मोहन जी सरीनामी भोजपुरी के वर्तमान समय के बहुत बड़हन प्रभावशाली आ ख्यातिप्रसिद्ध गायक हई , नया धुन तकनीकी आ अंदाज मे 200 बरिस पहिले पलायन के दर्द के इँहा के अपना गीतन के माध्यम से आवाज दे के एगो बहुत उंच स्थान प भोजपुरी के ले के गईल बानी । कनाडा अमेरिका भारत आ अउरी कई गो देसन मे आपन प्रस्तुति दे चुकल बानी , एह घरी नीदरलैंड (हालैंड) मे बानी



परदेस से पाती

परदेस से भेजल रउरा पाती के,
जान लीं राउर नन्ही-परी का कइली !
रुनझुन-रुनझुन पायल बजावत,
दउड़त भागत हँसत खिलखिलात,
बइठत उठत गिरत ढिमलात !

बड़ा मुश्किल से पलंग तक पहुँच पइली,
पलंग के सिरा पकड़ स्थिर भइली !
पलंग पर फडफडात राउर पाती देख ,
जीत के भाव से मंद-मंद मुसकइली !

पलक झपकते झपट्टा मरली
चिट्ठी राउर उठा के-
कुछ फड़ली, कुछ खइली
कुछ के लार में सान लड्डू बनवली !

ज्योत्सना प्रसाद



सिवान , बिहार के रहे वाली ज्योत्सना जी , हिंदी भाषा आउर साहित्य में बी. ए. (प्रतिष्ठा), एम्. ए. कइले बानी , अउर पटना विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डॉ नंदकिशोर नवल के निर्देशन में महाप्राण निराला के गद्य के शैलीगत अध्ययन पर डॉक्टरेट कईले बानी। हिंदी में उपन्यास “अर्गला” प्रकाशित बा दू गो उपन्यास “अंतत:” आउर “मुक्तकुंतला” , कविता संग्रह आउर कहानी संग्रह प्रकाशन के प्रतीक्षा में बा। अरबी भाषा के मशहूर उपन्यास “अल-रहीना” के हिंदी में “बंधक“ शीर्षक से अनुवाद आउर प्रकाशन। जॉर्डन, चीन आउर अमेरिका में आयोजित सम्मेलनन में कविता पाठ। एह घरी मुंबई में रहि रहल बानी।

गांव के हालत आ पलायन

पहिले आपन गांव घर छोडी के बाहर कमाये जाये वाला में सरकारी नोकरिहा आ चटकल,हिंद मोटर,सैल,कोइलरी में ठीक ठाक तनखाह पर काम करे वाला लोग ही ढेर रहत रहे।

बाकी पिछला डेढ़- दुइ दशक में जवना हिसाब से लोग आपन गांव छोड़ी के पलायन कइ रहल बाडे, ऊ वाकई में चिंताजनक बा । कुछ इंजीनियरिंग,डिप्लोमा भा कवनो दोसर टेक्नीकल डिग्री वाला के त समझ में आवता, बाकी सबसे ढेर अइसन लोग गांव छोडता आजकल, जेकरा लगे ना त कवनो खास डिग्री बा, ना कवनो अनुभव।

हम अइसन कइगो लोग के जानत बानी जे आपन अच्छा खासा खेती बारी होखला के बाद भी बाहर जाके ठेकेदारी में कवनो कारखाना में मजदुरी करता। तीन काठा में घर आ दुइ काठा में दुआर वाला रेली के डिब्बा अइसन कमरा में दस दस लोगन के संगे रहता, उहो पुरा महिना के काम के बदले पांच-छ: हजार रूपिया खातीर।

एकर सबसे बड कारण बा सरकारन के गांव में सुविधा देबे में भेदभाव। आजु एगो बेहतर जीवनशैली के मतलब शहरी जीवन ही हो गइल बा। भेदभाव आतना कि गांव के लोग मतलब गंवार बा आजकल। गांवहीं से जाके शहर में बसल लोग आपना के गांव वाला कहे में आ आपन मातृभाषा बोले में लाजाता। सुविधा आ सुरक्षा के नाम पर गांवन के खाली भाषण आ कागज में ही याद कइल जाता। शहर के जहां भरपूर बिजली मिल रहल बा, ओहिजा गांव में 'एक हफ्ता दिन त एक हफ्ता रात' के पारी में बिजली मिलता। अगर केहू अबर दुबर आदमी गांव में दुई चार गो दुधारू पशु राख के, भा कवनो दुकान कइ के धंधा करता, त ओकर गाय- भैंस खोला जाता आ दुकान लुटा जाता। शहर में जहां रात भर पुलिस पेट्रोलिंग करतिया, ओहिजा गांव में कुछ घटना भइला प पुलिस के पहुंचे में घंटो लागता। **गांवन के सरकारी अस्पताल खाली शहर रेफर करे खातिर, त सरकारी स्कूल खाली खिचडी खियावे खातिर ही रही गइल बाडन स।**

सरकार के ढुलमुल रवैया से खेती भी अब खाली नाम के ही रह गइल बिया। शहर में जहां छोटे छोटे चीझू के लाखों के बीमा होता, ओहीजा गांव में पुरा के पुरा फसल बरबाद भइला प पचहत्तर भा सौ रुपिया के चेक मिलता।खाद बीया के भी हाल उहे बा। रहल सहल कसर टीवी आ सिनेमा पुरा कइ देले बा, जवना में 'सभ्य माने शहरी' के आधार पर ही काम होता।

अगर गांवन से पलायन के रोके के बा त सरकार आ जनप्रतिनिधि लोग के खाली हवाई फायर कइला के जगह कुछ ठोस कदम उठावे के पड़ी। सडक, बिजली, सुरक्षा,लघु उद्योग आदि पर बेहतर काम करे के पड़ी। कवनो कारखाना चाहें आफिस काहें ना गांव में लाग सकेला ?

अब सवाल बा कि हतना कठिन परिस्थिति में गांव के लोग कइसे अपना आ आपन परिवार के एगो बेहतर जिंदगी देउ ? एगो बंढियां जीवन के तलाश में लोग आपन गांव,घर,बूढ माई -बाप के छोड के निकल जाता शहर की ओर। ओकरा से दोसरा प्रदेश में गइला प यूपी बिहार के होखला के नाते ट्रेन आ स्टेशन प आई कार्ड मांगला के नाम पर पीट पीट के पइसा वसूलाता। ऊ सब सहता... एगो बेहतर जिंदगी के सपना पुरा कइला खातिर... जवन मात्र एगो भ्रम बा ओकर।

अगर गांवन से पलायन के रोके के बा त सरकार आ जनप्रतिनिधि लोग के खाली हवाई फायर कइला के जगह कुछ ठोस कदम उठावे के परी। सडक, बिजली, सुरक्षा,लघुउद्योग आदि पर बेहतर काम करे के परी। कवनो



सुनील पाण्डेय

बलिया, यू.पी. के रहे वाला सुनील पाण्डेय जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी आ आखर से जुड़ल बानी। इहाँ के लेखनी में गांव-जवार के बारे में बहुत बात रहेला। ए घरी सुनील जी इंदौर में रहेनी आ कार्यरत बानी।

कारखाना चाहें आफिस काहें ना गांव में लाग सकेला ?जबकी इ हर मामला में शहर से सस्ता साबित होई, एह के सोचे के परी । दिन भर नेतागिरी करत गांव के सरकारी मास्टर आ डाक्टर लोग प डंडा चलावे के परी ।

हालात के रोना रोई के हथियार डाले वाला लोग के भी सोचे के परी कि जब बाहर जाके हमनी के बारह बारह घंटा खटी सकेनी जा, त अपना गांवे अपना काम खातिर काहें ना कुछ कइ सकेनीं जा ? कवनो नेता आ पाटी के पिछे नारा लगावला के जगह अपना आ अपना गांव के हक आ बेहतरी खातिर आवाज उठावे के परी। तब जाके कुछ बढियां होई ।

गांव में भी बहुत अइसन काम हो सकेला जवना से एगो ठीक ठाक जीवन जीयल जा सकेला । कतना लोग अइसनो बाडे जे गांवहीं रह के शहर के एगो इंजीनियर-मैनेजर ले ढेर पइसा कमा तारे आ शानदार जीवन जीय तारे । जरुरी बा इच्छाशक्ति आ गांव में रहला के पिछडापन ना समझला के ।

जवाब (लघु कथा)

एगो चिरई आकास में उड़त जात रहे अउरी कहत जात रहे-

"जेकर इहाँ बा ओकर उहाँ बा ,

जेकर इहाँ नईखे ओकर उहाँ भी नईखे ,

जेकर इहाँ बा ओकर उहाँ नईखे अउरी

जेकर इहाँ नईखे ओकर उहाँ बा। ".

राजा आपन खिड़की से सुनत रहलन उनका बुझाइल ना, उ सगरी नगर में ढिंढोरा पिटवा दिहलन जे इ सवाल के जवाब दीही ओकरा भारी इनाम मिली । बहुत लोग कोशिश कईल बाकी जवाब ना मिलल। एक दिन एगो साधारण पंडित अयिनी अउर कहनी हम बताएब।

पहिलका के मतलब रउआ राजा बानी राउर इहाँ भी जरुरत बा और ऊपर भी ।

दुसरका के मतलब गरीब ,लाचार वृद्ध ओकर इहाँ भी पूछ नईखे और ऊपर भी ना ।

तीसरका के मतलब वेश्या जेकर इहाँ त पूछ बा बाकिर उहाँ नईखे और,

आखिरी में हम साधारण पंडित जेकर इहाँ त पूछ नईखे बाकिर उहाँ बा।

राजा उनका जवाब से संतुष्ट होकर आपन दरबार में राख लिहलन ।



समता सहाय

सिवान, बिहार के रहे वाला समता सहाय जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। इहाँ के लेखनी में व्यक्तिगत अनुभव के बहुत कुछ पढ़े के मिलेला। गायन के क्षेत्र में भी समता जी के नाम बा। अभी इहाँ के दिल्ली में रह रहल बानी।



भोजपुरी के प्रवासन संस्कृति

फोटो : संकल्प संस्था , बलिया

दुनिया भर के बड़ लेखकन खातिर अपना जमीन से विस्थापन भा बिछोह के सवाल एगो अतियंत संवेदनशील आ मार्मिक मुद्दा रहल बा। हालांकि इहो सांच बा जे कि एह धरती के साँस्कृतिक विकास के समूचा इतिहास ही जात्रा, संक्रमण आ विस्थापन के इतिहास रहल बा। एह इतिहास में भौगोलिक भा साँस्कृतिक विस्थापन हमनी के एक तरफ भीषण त्रासदी , त दूसर ओर नया नया दिशा देखावे वाला एगो अनिवार्य विकास-परकिरिया के रूप में देखाई देवेला। नया भा खुशहाल परदेश आ इलाका के तलाश में चाहे अपना भीतरी अंतर्बिरोध के समाधान ढूँढे बदे आदमी आदिकाल से अपना कुनबा आ कबीलन के साथे भटकत रहल बा। " लेकिन भोजपुरी अंचल के संदर्भ में ई बात पूरी तरह लागू ना हो सकेला काहे से कि एह अंचल में प्रवसन भा विस्थापन खुशहाल स्थान के तलाश भर ना रहे, बल्कि खुशहाल जगह पर जाके जी-जान से कमाई करके आपन आ अपना पाछे रह गईल, छूटल परिवार के खुशहाली तलाशे के मंशा आ मजबूरी रहल बा। एही से जब हमनी के भोजपुरी प्रान्त के पलायन आ एहिजा के श्रमिक संस्कृति पर बात करीले जा, तब हमनी के ई तथ्य के समझ आ जान लेबे के चाहीं कि इहाँ श्रमिक संस्कृति के बुनियाद एहिजा के पलायन से जुड़ल बा। जउन ना केवल मजबूरी से उपजल रहे बल्कि एहमें स्वेच्छा वाला पलायन के मानसिकता के भी कहीं-ना-कहीं सूत्र मिलेला। भिखारी ठाकुर अपना जगपरसिद्ध नाटक 'बिदेसिया' के पहिलके दृश्य में उजागर कईले बाड़ें –

बिदेसी – सलाह बा कि हमार मन करता जे तनी कलकाता



मुन्ना पाण्डेय

गोपालगंज बिहार के रहे वाला मुन्ना कुमार पांडे जी , भोजपुरी भाषा खास कई के भिखारी ठाकुर प बरिआर शोध कईले बानी , इँहा के रिसर्च के विषय ही भिखारी ठाकुर जी रहनी। भोजपुरी नाटक आ भिखारी ठाकुर के नाटकन प गहिराह लेख लिखले बानी। हिन्दी आ भोजपुरी मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी। एह घरी असिटेंट प्रोफेसर के रुप मे दिल्ली मे कार्यरत बानी।

से जाके हो अइतीं।

सुन्दरी – " ए रवो, रउआ कलकाता जाये के कहत बानी, रउआ कवना बात के तकलीफ बाटे?"

बिदेसी – "हमरा कवनो बात के दुःख-तकलीफ नइखे, बाक़ी हमार दोस्त अइलहँ कलकाता से। कलकाता के समाचार सुनि के हमरो तबियत कइले बा कि हमहूँ जाइब। हम पंद्रह दिन में लवटि के चल आइब।''

धनञ्जय सिंह लिखले बाड़े कौनो चीज के तकलीफ ना होखल, दोस्त से कलकाता के बारे में सुनके ओइजा जाए बदे तबियत हो गईल आ पनरह दिन में लउट के आवे के बात – के हमनी के प्रवसन के कारण में 'स्वेच्छा' आ 'मजबूरी' दुनु में से कौना के नाम लिहल जाई? मामिला बड़ा जटिल बा । एहमें कौनो दू राय नइखे की 'स्वेच्छा' भा 'मजबूरी' में काम करे गईल लोगन के श्रेणीबद्ध करे बदे काफी अध्ययन हो चुकल बा आ हो रहल बा । बाकी भिखारी ठाकुर अपना नाटक के नायक के मार्फ़त जउन बात के ओर इशारा कर रहल बाड़े ओहमें प्रवसन के 'पुल' आ 'पुश' थ्योरी अपर्याप्त बा । ए सब से अलग जाके हमनी के प्रवसन के संदर्भ के समझला के जरुरत बा। शौकिया तौर पर परदेस गमन पूरा तरह से भोजपुरी अंचल पर लागू ना होखी। काहे से कि अइसन लोग के संख्या बेसी बा जे अपना आर्थिक स्थिति के उपर उठावे खातिर पहिले कलकाता, असम के ओर गईल लोग, आ आजु दिल्ली, मुंबई, पंजाब, हरियाना, दक्षिण भारत की ओर आ खाड़ी देशन के ओर जा रहल बा। पूर्वांचल के इलाका जउन भोजपुरी प्रान्त बा ओहमें के अधिकांश जिला के लोग एकर बड़ उदाहरण बा। इतिहासिक आधार पर देखल जाओ त 18वीं आ 19वीं शताब्दी में श्रमिक लोग बड़ भारी संख्या में पूर्वी बंगाल-रंगपुर के ओर गईल रहे। 19वीं शताब्दी के अंत तक जनगणना आँकड़ा के अनुसार रंगपुर मायमेसिंग आ इहाँ तक कि बर्मा भी शारीरिक मेहनत के आकर्षण के बड़ केंद्र रहे । नौकरी के आकर्षण पलायन में ई एगो बड़ कारण रहे ।

भोजपुरिया पढ़ल-लिखल मध्यवर्ग जे नौकरी के फेरा में बाहर गईल उ फेर गाँव खातिर पराया हो गईल। (अधिकांश स्थिति में इ बात सांच बा)। उ कबो ना लौटल, भा लौटबो कईल त मौसमी लौटानी खानी । एहिसे जब भिखारी ठाकुर अपना नाटक में बिदेसी के लउट आवे के दृश्य रचत बाड़ें त उ बड़ा आदर्श स्थिति के मामिला हो जाला आ उ देखे वाला के एगो ख़ास तरह के 'नोस्टेल्जिया' से घेर लेला।

दरअसल जउन विस्थापन आ पलायन पहिले मजबूरीबस रहे बाद में ओहिमे देखा-देखि के तौर पर पलायन भी शामिल भ गईल। (जउना ओर भिखारी ठाकुर अपना नाटक में इशारा कईले बाड़ें)। एह अंचल में बाहर से लंबा समय बाद कमाके लउटे वाला के बड़का इज्जत से देखल जाला। भोजपुरिया अंचल में रेलवे स्टेशन पर प्रवासी 'बिदेसी' लोग के रिसीव करे ला गाँव-जवार के नाता-रिश्तेदार लोगिन के हुजूम के दृश्य आम बा।

बहरहाल, एह सब बात विचार से अलगा हटके जगदीश चतुर्वेदी जी के बात पर भी ध्यान देबे के जरुरत बा। उहाँ के श्रमिक प्रवसन के अपना समूचा अध्ययन आ व्याख्या में प्राकृतिक कारण पर बिसेस जोर देके समूचा पूर्वांचल के एह में शामिल कईले बाड़ें। उहाँ के लिखले बानी कि "जउन जउन समय भारत में अकाल पड़ो सूखा पड़ो भा बाढ़ आवे, ओह–ओह समय मजदूरन के संख्या बढ़ जाव। फिर भी कुछ जगह अइसन रहे जहवाँ शुरू से ही मजदूर लगातार उपलब्ध रह सन। इ जगह रहे – बस्ती, गोंडा, फैजाबाद, गोरखपुर, आजमगढ़, जौनपुर, गाजीपुर आ बिहार के शाहाबाद। इ सब उ जिला रहे जहाँ के जनसँख्या भारत में सबसे घना जनसँख्या मानल जाला आ जहाँ के खेती बढ़त जनसंख्या के साथ ना दे सकत रहे । इहे उ जिला रहे जहाँ कमजोर वर्ग के लोगन के संख्या भी अधिका रहे।" ई बात सांच बा कि भोजपुरी अंचल भारत के सबसे घन जनसँख्या वाला क्षेत्र में से एक बा। जाहिर बा कि जब जमीन कम आ आदमी बेसी होइहें त प्रति व्यक्ति आय पर असर पड़बे करी। अइसन स्थिति में दोसर समृद्ध इलाका के ओर पलायन ही एकमात्र सहारा हो जाला। ध्यान देबे के बात इहो बा कि येह केटेगरी में पढ़ल-लिखल उहो तबका आई जे के अपना मूल जगह से विस्थापित हो के नौकरी खातिर दूसरा जगह पर पहुँचल बा। स्वेच्छा से गईल लोगन के संख्या भी कम नईखे। चाहे जउन होखे बाकिर एतना त सांच बा कि भोजपुरी अंचल में प्राकृतिक समस्या त रहबे कईल बाकि मनुष्य के मनुष्य द्वारा शोषण के अनेक रूप भी मौजूद रहे

। एहिसे भोजपुरी प्रवसन के पड़ताल भा खोजबीन करे के संदर्भ में हमनी के एकरा समाजशास्त्रीय कारण के भी छानबीन करके चाहीं। **भोजपुरिया पढ़ल-लिखल मध्यवर्ग जे नौकरी के फेरा में बाहर गईल उ फेर गाँव खातिर पराया हो गईल । (अधिकांश स्थिति में इ बात सांच बा) । उ कबो ना लौटल, भा लौटबो कईल त मौसमी लौटानी खानी । एहिसे जब भिखारी ठाकुर अपना नाटक में बिदेसी के लउट आवे के दृश्य रचत बाड़ें त उ बड़ा आदर्श स्थिति के मामिला हो जाला आ उ देखे वाला के एगो ख़ास तरह के 'नोस्टेल्जिया' से घेर लेला ।** एहिसे इ नाटक के देखत-सुनत-पढ़त हमनी के एगो अलग तरह के भाव स्थिति में आ जानी जा, जहाँ प्यारी सुन्दरी के पीड़ा हमनी के पीछे रह गईल परिवार के लोगिन के पीड़ा बनके सामने आ जाला, आ हमनी के अपना से बिदेसी के जोड़ लिहिले जा।

लेकिन अफ़सोस के बात इ बा कि ई भाव दशा संचारी भाव नियन ए कुल्ही 'बिदेसी' लोग के हिरदय में उतरेला, स्थायी भाव नियन नाही। प्रवसन से लउटल स्थायी भाव बने भी त कइसे? पहिलको आ आजु के (माने उदारवाद के बाद के) एह बिदेसी के सामने दू गो बड़ सवाल बा, जउन ओकरा संवेदनतंतु के निष्क्रिय कइले बा। पहिलका, आर्थिक अवस्था, दूसर, गाँव में रोजी-रोजगार के दिक्कत आ उहाँ के सामाजिक संरचना के भीतर फइलल शोषण-तन्त्र के अनगिनत रूप। एही से जब बद्रीनारायण एह क्षेत्र के पलायन आ श्रमिक संस्कृति के पड़ताल कइले त 'बिदेसिया' के आर्थिक अपवाय के कथा कहले। बहरहाल जउन प्रवसन के 'इज्जत' के रूप में देखल जात रहल बा ओह पर चंद्रशेखर अधिक बिस्तार से लिखले बाड़ें- "सारण के समाज में मौसमी प्रवास के लाभ अक्सर दिखाई पड़ते हैं। उदाहरणार्थ देवरिया गाँव के जउन लोग बंगाल गईल, ओह लोगन के बारे में कहल जात रहे कि ओह लोग के 'रहन-सहन में उन्नति' भईल। चान चौरा गाँव से जे भी बहरा गईल, ओकरा के ओकर घर वाला लोग इज्जत देबे लागे। चाहे उ केतनो कम उमिर के काहे ना होखे, काहे से कि उ परिवार के कमाऊ सदस्य बन जात रहे। इ प्रवासी अपना के अपना नाता-रिश्तेदारी में उंचा बूझे लोग। इज्जत से देखे जाए के एह प्रवृति के चलते भी सारण के किसानन में मौसमी प्रवास के आदत बढ़ल। हालाँकि 19वीं सदी के उतरान आ 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में कृषि के बढ़त संकट के शुरूआती समय में ए सब जिला के अनेक परिवार कम लगान देबे वाला जमींदारी में जाके स्थायी रूप से बस गईल। बहरहाल, बाद में एह प्रवृति में गिरावट आईल आ मौसमी प्रवास के प्रवृति बढ़ल।" माईग्रेशन एंड लाईवलीहुड इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव : अ केस स्टडी ऑफ़ बिहार, इंडिया, अर्जन डी हान(2002), द जर्नल ऑफ़ डेवलपमेंटल स्टडीज में भोजपुरी अंचल के श्रमिक संस्कृति आ पलायन के कारण पर लिखला के धनञ्जय सिंह अपना शोध में हवाला दिहले बाड़ें कि ' पलायन (20वीं के शुरुआत में) के कारण खाली गरीबी ना रहे, बल्कि केहु के बेटा बाहर 'सर्विस' करत रहे त उ सम्मान के बात रहे। प्रवास परिवार के देखभाल खातिर एगो रास्ता रहे आ खेती में मदद खातिर एगो जरिया रहे।' एह प्रसंग में इहो बात ध्यान में राखला के जरुरत बा जे एह अंचल से प्रवास के बड़ कारण में से भूमिहीनता, कम मजदूरी भा नकद मजदूरी ना, सामाजिक भेदभाव आ दमन भी रहे। पुरान खतियान में एह अंचल में पलायन के कारण पर बिचार कईला के क्रम में इहो बतावल जाला कि इहाँ से बहरा जाके काम करे वाला में से अधिकांश लोग नौकरिहा आ सिपाही(सेना में) बा। कहल त इहो जाला कि बिद्रोह में दस हजार से ऊपर सिपाही भोजपुरिया रहले। एह बात के पीछे के बरियार कारण इहे बा जे 17वीं आ 18वीं सदी में भोजपुर आ ओकरे लगे बक्सर फौजी सिपाहियन के भरती के दू गो बड़ केंद्र रहे। भोजपुरिया क्षेत्र के तैलंगन के बक्सरिया कहल जाव। 18वीं सदी में जब देस के बागडोर अंग्रेजन के हाथ में आईल त उहो सन मुगलकालीन परंपरा के रखलन जा। ओकनियों के भोजपुर भा बक्सर से तिलंगहन के भरती कर जा।

इ बात इयाद रखे वाला बा जे भोजपुरिया इलाका में सेना के प्रति एगो अजिबे आकर्षण शुरूवे से रहल बा। जेकरा किहाँ के सवांग सिपाही होखे भा आजुवो होखेला उ परिवार गाँव जवार में बड़ा इज्जत से देखल जाला। कहे के मतलब ई बा कि एह इलाका में प्रवसन के परंपरा भरती भईल त एहिजा के छवारी लोग के शौख रहबे कईल।

एह संदर्भ में पलायन के बडका कारण में से दू गो घटना बहुत जिम्मेदार भईल। पहिलका कारण बा, पहिलका बिश्वजुद्ध के समय 1914 के अकाल आ 1934 के भूकंप। भारत देस खातिर इ दू गो घटना बीसवीं सदी के बहुत बड घटना रहे। जउन एह इलाका के आर्थिक दशा के बिगाड़ के रख दिहलस। ध्यान रहे कि इहे समय भिखारी ठाकुर के भी उदय के समय हवे। भिखारी ठाकुर के उदय से भोजपुरिया अंचल के पीड़ा के आवाज भेंटा गईल।

परवसन में शहरीकरण भी एगो बड कारक बा, एहमें कौनो दू

राय नइखे कि शहरीकरण हमेशा से अभावग्रस्त गाँव के लोग के अपना ओरी नगदी मजूरी आ समय पर भुगतान से खींचेला । मेहनत के फल अनाज के बदला नकदी से आ समय से भुगतान के सोच के जन-मजदूर अभाव वाला जनता आपना आर्थिक आ सामाजिक स्थिति के सुधरे के आस में पलायन क जाला । आजादी के बाद भी पलायन के इहे चरित्र कमोबेश रहल बा । भिखारी ठाकुर एह ओरी अपना नायक से कहववले बाड़ें –

"कहना मानऽ करब ना देरी

जल्दी भेजब सनेस

बल-बुद्धि से रोजे कमाईब

नकद मजूरी हरमेस"

मालूम होखे कि भारत के अधिकतर क्षेत्र में आजुवो मजदूरी के बदले अनाज देबे के चलन रहल । अब इ हालाँकि धीरे-धीरे कम हो गईल बा । भोजपुरी समाज में एकरा के 'बनिहारी' कहल जाला । बहरहाल, भिखारी ठाकुर के समय में प्रवसन के जउन परिपाटी रहे, उ स्वेच्छा आ मजबूरी दुनु के देन रहे ।

सन्दर्भ :

1. *लेख-विस्थापन का दर्द और लेखक का अंतर्मन, जीतेन्द्र भाटिया, कथादेश(मासिक पत्रिका), सं । हरिनारायण,वर्ष-19, अंक-5, जुलाई 1999, पृ । 40-41 । (मूल हिंदी से भोजपुरी अनुवाद – स्वयं)*
2. *भिखारी ठाकुर रचनावली, पृ । 29 ।*
3. *देखल जाव-सिंह,धनञ्जय,भोजपुरी प्रवासी श्रमिकों की संस्कृति,वी । वी । गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान,नोएडा-201301, उत्तर प्रदेश, पृ । 6-7 । (मूल हिंदी से भोजपुरी अनुवाद – स्वयं)*
4. *देखल जाव-माईग्रेशन एंड लाईवलीहुड इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव : अ केस स्टडी ऑफ़ बिहार, इंडिया, अर्जन डी हान (2002), द जर्नल ऑफ़ डेवलपमेंटल स्टडीज, 115-142 । (मूल अनुवाद अंग्रेजी से भोजपुरी में –स्वयं)*
5. *देखल जाव- चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद, फिजी में प्रवासी भारतीय, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नईदिल्ली, सं । 1985, पृ । 153 । (मूल अनुवाद हिंदी से भोजपुरी में –स्वयं)*
6. *देखल जाव-लोकप्रिय संस्कृति का द्वंद्वात्मक समाजशास्त्र,संदर्भ : बिदेसिया, चंद्रशेखर, अनु । एवं सं । गोपाल प्रधान, सांस, जसम, इलाहाबाद 211001, प्र । सं । 2011,पृ । 30-31 । (हिंदी से भोजपुरी में अनुवाद-स्वयं) ।*
7. *देखल जाव-लोकधर्मी नाट्य परम्परा : भिखारी ठाकुर का नाट्य साहित्य, पीएच । डी । 2008(दि । वि ।), अप्रकाशित(हिंदी से भोजपुरी में अनुवाद-स्वयं) ।*



केहू ना तोहार

काँहे प्रीत लगावे मन ?
कुछ ना तोहार।
सब साज सिंगार
हाथ के जेवनार
छूटि जाई सब कुछ
केहू ना तोहार॥

कई लोग काँधे तोहार
चढ़ि छोड़ि जाई
बाँची जे तोहके
काँधे छोड़ि आई।
केहू ना तोहार॥

दिन साल लगा के
गाँठ जेवन जोड़लऽ तू
लोग गाँठ सब
एक-एक रोज छोड़ाई।
केहू ना तोहार॥

प्रिय-अप्रिय तू जेकर रहलऽ
उहो सब तोहके प्रेत बना के
घर दुआर सब
तोहसे छोड़ाई।
केहू ना तोहार॥

काँहे फिकिर सुगना

का चाहीं, का ना चाहीं
एकर फिकिर तू
काँहे करे सुगना।

राह चलत जा दिन-दुपहरी
साँझ ढ़ली ना ढ़ली
काँहे सोचे सुगना ।
काँहे फिकिर सुगना ॥

जवन मिललऽ तवने तोहार हऽ
पथर हऽ ई कि
हवे फूल सुगना।
काँहे फिकिर सुगना॥

मन चिरई हऽ मन के ना सुनऽ
मन ललची कुछ ना कुछ
माँगी सुगना।
काँहे फिकिर सुगना॥



राजीव उपाध्याय

बलिया, यू. पी. के रहे वाला राजीव उपाध्याय जी भोजपुरी में कविता के सृजन लगातार कर रहल बानी। भोजपुरी पत्रिकन के साथ भी इहाँ के जुड़ल बानी। ए घरी राजीव जी दिल्ली में रह रहल बानी आ कार्यरत बानी।

कलकतवा में पियवा बारे लालटेन

(शशि रंजन मिश्र)



लईकायीं के सुनल एगो गाना इयाद बा। रेडियो पे सुने के मौका मिलल रहे। गायिका के नाम ठीक से इयाद नईखे कि के रहे... सायद विंध्यावासिनी देवी भा सिद्धेस्वरी देवी। बाकी गीत के बोल सुनी के इहे बुझाईल की आपन गाँव-जवार-माटी-पानी आ परिवार के छोड़ी के दूगो रोटी के जोगाड़ में लोग कहाँ कहाँ ना गईले आ कवन तरह के काम ना कईले। गीत के दू लाइन- "कहाँ से आवे साहब बहादुर, कहाँ से आवे मेम... कलकतवा मे पिया हमरे बारे लालटेन" ओह समय के लोगन के सामाजिक स्थिति, दसा दुर्दसा सभे के बता रहल बा। आ खाली इहे गीत ना अईसन ढेर गीत बनल जेह में ओह घरी के हालात के वर्णन रहे। चाहे भोजपुरिया क्षेत्र के लोकगीत भा सूरीनाम खातिर रवाना होत जहाज में बंधाईल मन के हूक में देस के छुटल आ परदेस के रोटी के जुगुत में भुलाईल घर-परिवार के चर्चा बा। रोटी त आपन देस मे भी बा बाकी दू रोटी अधिका के लालच भा मजबूरी मे लोग परदेस के राह ध लेले ।

रोजी रोटी के खोज में परदेस के राह पकड़ल कवनों नया नईखे । कलकत्ता भारत के पहिलका व्यापार केन्द्र बनल। अंगरेजन के भारत पे कब्जा मारे के पहिलका उतजोग एहिजे से भईल । अंग्रेज़ सब के राज बढ़ोतरी के साथे प्राकृतिक सम्पदा के लूटे के एहिजा खूब मौका लउकल। आ ई खाली भारत के ही बात ना रहे, ढेर देसन में एहनी के इहे काम होत रहे। आपन राज्य के विस्तार में अंगरेजी हुकूमत हर तरह के हथकंडा अपनवलस। व्यापार के नाम पे, कल कारख़ाना के नाम पे, रोजगार देवे के नाम पे हरेक देस आ ओहिजा के लोगन के खून चुसाईल । इंहा तक की जब मॉरीशस ,सूरीनाम आ फ़िजी जईसन देस .के अपना हिसाब से दुहे के खूब कोसिस भईल। प्रकृतिक सम्पदा त रहे बाकी एह संपदा के लूट के अंगरेजन के झोली में डाले खातिर मजूरन के जरूरत रहे। जे खाये कम आ मालिक के कमा के जादे दे। सुरुआत में कुछ भारतीय व्यापारी , बढ़ई , लुहार जईसन कामगार लोग गइल बाकी ओहिजा जाके बंधुआ मजूर बन गईले । सन 1798 से लेके सन 1808 तक ई बंधुआ मजूरन के कबूतर बाजी चलत रहल। मई 1816 में मौरिसस के गवर्नर के आदेस पे एहिज से गइल बंधुआ मजूरन के आजादी त मिलल बाकी आपन देस के राह भुला गइल। ओह आदेस के बाद भारत से मजूरन के लावे पे रोक लगा दिहल गइल रहे। 1817 में ओहिजा से कुछ लोग लवट पाइल ।

ओह घरी ले अंग्रेजन के भारत पे सत्ता पे लगभग कब्जा हो गइल रहे । बाकी अभी भी एह देसन के विकास खातिर मजूर वर्ग के

आउरी जरूरत रहे । मौरिसस के गवर्नर के प्रार्थना पे ईस्ट इंडिया कंपनी एहिजा से भारतीय कैदी सब के भेजे लागल , आ ई लोग भी ओहिजा बंधुआ मजूर बन गईले ।

सन 1833 में जब ब्रिटिस सरकार दासता प्रथा पे रोक लगवलस तब एह मजूरन के कमी भईल आ ओह कमी के पूरा करे खातिर अंग्रेज़ चाल चलले कंटरेक्ट आ एग्रीमेंट पे पाँच साल खाति मजूरन के भेजे के । परचार भइल की बिदेस में नौकरी मिली । कंटरेक्ट पाँच साल खातिर रही, आवे-जाये के टिकस, पाँच रोपेया महिना के मजूरी , छव महिना के मजूरी पहिलही मिली , मजूरी में से एक रोपेया कटाई जे पाँच साल के बाद एके साथे 60 रोपेया मिली , राशन -कपड़ा आ मकान सभे मुफुत जईसन लालच पसारल गइल । भारत के ओह समय में टुकड़ा टुकड़ा में बंटाईल रजवाड़ा आ ओहपे निरंकुस सासन बेबस्था , रोजगार के कमी एक बड़ा मजदूर वर्ग खड़ा का देले रहे । आ इहे कारण भईल की लोग दू रोटी आ आगे के निमन होत जिंगी के सपना देखत अंग्रेजन के कंटरैक्ट आ एग्रीमेंट पे अंगूठा लगा दिहले । जेकर कंटरैक्ट बनल उ कंट्राकी कहाईल आ जेकर एग्रीमेंट रहे उ गिरमिटिया बन गइल । चौदह पानी के जहाज के काल कोठरी में भरल भारतीय मजूरन के भाग के डोरी मौरिसस के बंदरगाह पे बंधा गइल । उ जतरा कईसन रहल आ उ पाँच साल कईसे गुजरल एकर दरद सूरीनामी आ मौरिसस के गीतन में भेंटा जायी । **सरनामी गीतकार आ गायक राजमोहन जी** के एक गीत के बोल देखीं -

कोई आँसू पीके रहेगे
कोई आड़े मेन सिसके है
रौई हे मायी बाबा
ठीहा मन मे धरी है
चलल जब जहजिया
कलकत्ता के किनारे
छुटल सब रिस्ता नाता
भगवान के सहारा
निकरले सरनाम के ओरे
नवा नवा तकदीर से नाता जोरे
कईसन हवा अब चली
दुई मुट्ठी एक दिन मजूरी

पेट के आग बुझावे खातिर ही लोग अंग्रेजन के सेना में भी भर्ती भईल आ अपने लोगन पे गोली दाग देलस । मंगल पांडे के कथा सभके मालूम बा, बाकी ओह विद्रोह के बाद भी अंग्रेजन के हुकुम बजावल आ रोटी खातिर ओहनी के गुलामी कइल ना छुटल । अब चाहे एकरा खातिर लोग विश्व युद्ध में भी अपना के झोंक दिहले । असिक्षा, लाचारी के मारल लोग ही कलकत्ता के राह धईले ।

इहे कलकत्ता आज तक ले केतना के पेट पाल देलस । आजो कलकत्ता के बन्दरगाह, कारख़ाना , रेलवई, कोइलरी, मोहल्ला, सड़क, पार्क सभे जगहा रोजी रोटी के चिंता में हाड़ तुड़त, आपन गाँव घर के त्याग के लोगन के भीड़ लऊक जाला । आ एह भीड़ में आपन भोजपुरी प्रदेश के लोग कुछ ज्यादे ही भेंटा जईहन । काम कावनों तरह के होखे , करे में सरम कईसन ? परदेस में के देखत बा ? गाँव के खेतिहर जमींदार बाबू साहेब कलकत्ता में कुलीगीरी भी कर लेस त के देखेवाला बा । आ कलकत्ता के आधुनिक रहन सहन के विदेस के दर्जा अईसहीं ना रहे । धनी बंगाली बाबू लोग के घोड़ा वाला फिटन गाड़ी त तनी कम आमदवाला खातिर हाथ रिकसा जवना में आदमी जानवर बनी के खिंचत होखे । सभे ठाट रहे । सड़क के किनारे रात में लालटेन के रोशनी खातिर तेल डाले के काम भा सड़क के धूर के पानी छिरिक के दबावे के काम करे में लोग कभी कम ना बुझल । आ इहे ना जब इ लोग गाँवे लवटे त आस बखान करे कि अगर इ ना रहतें त मय कलकत्ता अनहार रहित भा धूर मे उधिया जाईत । शायद इहे भाव एह लोग के महरारून के भी आइल होखी । तबे त बतावे में केतना गर्व के बात बा कि- "कलकत्तवा में पिया मोरे बारे लालटेन..."

एही भोजपुरिया समाज के आपन अलग पहचान भी बनल । ए बी सी डी (आरा बलिया छपरा आ देवरिया) प्रदेश के लोग अड़ियल आ लाठी चलावे में आगे रहे । अब कोइलरी ,कल-कारख़ाना , साहेब लोग के कोठी हर जगहा पे इहे लोग के तैनाती रहे । अबहुओं पश्चिम बंगाल के आसनसोल, अंडाल के कोइलरी इलाका में इ बाबू लोग के तूती बोलेला ।

आजादी के बाद देस के दसा बदलल कलकत्ता जईसन आउरी सहर (शहर) के राह खुलल । मुंबई, मद्रास , दिल्ली अइसन लोग के नया ठिकाना बनल जे रोजी रोटी के तलास में भटकट रहे । लोग नया परदेस मे नया कारीगरी नया हुनर

सिखत दुनिया में आगे बढ़े लगले । शिक्षा के नाव पे अब इहे लोग समुंदर भी लांघ अईले बाकी अबकी बंधुआ मजूर ना बल्कि कुसल कारीगर बनी के । आज एही क्षेत्र के लोग हरेक क्षेत्र में आपन हुनर आ कारीगरी के लोहा मनवा रहल बा । गुलामी के सिक्कड़ से छूटते सभे के दिन दुनिया बदल गइल बा । कबो "पनिया के जहाज से पलटनीया.... " वाला गीत में आपन सोहाग के आवे के मनावत मेहरारू लोग खातिर बाजार अब घरे आ गइल । अब रोपेया पसीना के राहे आवेला त परदेस अब परदेस ना बुझाये । देस बिदेस के दूरी अब कुछ घंटा के रह गइल बा अयीसन में कवनों मेहरारू के गीत गाके "रेलिया बैरन पिया के लेई जाय रे..." ना कोसे ला लोग बल्कि नवकी दुलहिनिया खुसी खुसी आपन सवांग के परदेस नौकरी भेजे ले ।

मातृ-दिवस

नुरैन अंसारी



कौनो भी रिश्ता से उनका कमी के भरपाई न होई ,
केहू केतनो करी दुलार बाकिर माई न होई !

लाख मुसीबत सही के भी जे अपना कोख में पालल
अपने ठोकर खा के जे हरदम हम के सम्भालल ,
ओकरा से बढ़ के दुनिया में केहू दाई ना होई
केहू केतनो करी दुलार बाकिर माई न होई !

माई के ममता के आगे फीका ह हर पिरितिया
जे भूखे ली औलाद खातिर जिनगी भर खर-जिउतिया ,
वोकरा अंचरा से बढ़ के कौनो परछाई न होई
केहू केतनो करी दुलार बाकिर माई न होई !

हर धाम से बढ़ के ह माई के चरण-धाम
करब पूजा माई के न होखब कबो नाकाम ,
दुःख देबS अगर माई के त तहार भलाई न होई
केहू केतनो करी दुलार बाकिर माई न होई !

ओरहन

गोरख मस्ताना



आग लागल भाग में, घर फूस खर के जर गइल
का हो ! अगिनी देव तोहरी पेट एह से भर गइल

साँच हऽ बरियार के साथे सहारा लाख में
झोपड़ी ला दया दरकल आज तोहरी आँख में
रूप धूधू भयानक देखीं के दूनिया डर गइल

ढ़ेर में राखी के रघुआ निहारे तकदीर के
जरल बकरी अधजरल झबरा बढ़वलस पीर के
जीयत जी जिनगिए में निरधन बेचारा मर गइल

ना रहल मड़ई पलानी, छान छप्पर ढ़ह गइल
कुछ बचल ना, जियेला बस लोर आँखि रह गइल
काल्हु तक राजा रहे जे आजु दर बदर भइल

जर गइल डेहरीं बखारी, धन गेहूँ जौ जरल
भूख से लइकन के मुँह, लउकेला जस मुरदा मरल
सभे दू रोटी ला दूलम, नून ला हेहर भइल

देह पर लुगरी ना लउके, अँग तोपल भार बा
लोर अखियाँ से पराइल, अजब तोहरी मार बाधार में छितरा
गइल, सपना कुल्ही पतझर भइल।

ताला लटका रे !

सुमेसर दुआरे पर से चिचिअयिले- " तनी एक लोटा पानी ले-आव हो । " माथ प के लूगा सरिहावत सबितरी के माई लोटा में पानी आ बतासा लेले दुआर पर निकसली ।

"का भईल ह? बात कुछु आगे पड़ी बढ़ल?"

सुमेसर गमछा से लिलार पर के पसेना पोंछत कहे लगले, "फाइनल हो गईल । खाली दिन के लेके बात रुकल बा । उहो फाइनल हो जाई । बैसाख में एगो लगन बा । बाबाजी से पूछनी हा, उ दिन बहुते नीमन बा ।"

सुमेसर अपना गाँव के एगो नीमनाह किसान रहले । दस बिगहा पर खेती करत रहले । इज्जत-बरोह, तीज-तेवहार, नून-तेल, सब खरचा उनुकर खेतिए पर अंटकल रहत रहे । बेटी सेयान हो गईल रहे । बियाह के चिंता में राति के नीनि उधियाई गईल रहे । हीत-नात के सहयोग से दूरि के हितईये में बियाह ठीक हो गईल । बैसाख के अंजोरा में सतमी के तिलक आ चतुर्दसी के बियाह के दिन धरा गईल ।

सुमेसर खेत के डाड़ार पर खाड़ हो के गोहूँ के अधपाकल बालि नीरेखत-नीरेखत जागते सपना में डूबि गईले । ओसारा में बोरा के छल्ली लागल बा । अभी गोहूँ के भाव नईखे खुलल । बैपारी धउरत बाड़े सऽ । एक हफ्ता अवरू देखि के बिक्री होई । एक हफ्ता में भाव कुछु उंचा मिल जाई । "सहर से गल्ला वाला गुप्ता जी आईल बाड़े । एक हफ्ता बाद वाला रेट पर मांगत बाड़े । दे देत बानी ।"

टेक्टर पर बोरा लादायिल बा, गुप्ता जी रूपया के गड्डी हाथ में धरावत बाड़े –"गीनि ल सुमेसर भाई ! हिसाब अपना जगह, बेहवार अपना जगह, आ एगो अउरी बात, सुमितरी के बियाह खातिर कवनो चीझु के दरकार लागी त हम बानी ।"

दुआर पर बरियाति लागत बा, अंगरेजी बाजा बाजत बा, दुआरपुजा के तेयारी करवावत गुप्ता जी लगे आइके कान में हँसि के कहतारे, " दामाद त एकदम राम जी अस खोजले बाड़ऽ ! " सुनि के करेजा अघा गईल ।

भण्डार-कोन करिया-अन्हार भईल बा बुझाता जे बुढिया-आन्ही आयी ।

गोहूँ के बालि बनउरी के मारि से बिधुनाई गईल बाड़ी सऽ, मये फ़सल मुअला मुर्दा अस जमीन पर सूति गईल बा, खेत पानी से भरल बा, बालि में के अधपाकल अनाज पानी से फूलि गईल बा । सगरे से डाठ आ अनाज के सड़ांध उठत बा ।

सुमेसर के मये सपना बुढ़िया-आन्ही उड़ा ले गईल । सुमितरी के अनकहा रंगीन अरमान पर बनउरी के उज्जर चद्दर बीछि गईल । सुमीतरी के माई के चौका-बर्तन के भोरे-भोरे होखे वाला खटर-खटर के आवाज़ नईखे आवत ।

सुने में आवत बा, सुमेसर बाहारा कमाए गईल बाड़े ।

सुमेसर के घर पर ताला लटकल बा ।



हृषिकेश चतुर्वेदी

बलिया युपी के रहे वाला हृषिकेश जी , आखर पेज से शुरुवात से ही जुडल बानी , ठेठ भोजपुरी आ भोजपुरी के खांटी शब्दन प बढिया पकड , गीत कविता गजल लिखेनी , एह समय इँहा के कलकत्ता मे कार्यरत बानी ।

तीसरा मोर्चा

देश के महान परब लोक सभा चुनाव होखे वाला रहे । हम आपन ऑफिस में चुनाव के तइयारी में लागल रही । चुनाव करावे वाला लोग के भेजे खातिर सूची बनावत रही । सूची में इहो धेयान दिहल जात रहे कि कर्मचारी के कुछ सुविधा भी रहो । बाकी कुछ समय के बाद इहो नियम हटा दिहल गईल कारण कि उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र में केहू गईले ना चाहत रहे । सूची बनिके तेयार भईल । सूची पढ़ी के कर्मचारियन के कोसल शुरू हो गईल । हमही रहनी हा ओने जाये वाला ? बाकी हम का करती सभकर कोसल सुनके चुपचाप रही । उग्रवाद क्षेत्र में जाये वाला दल के एक साथ खड़ा कऽके समझावल गईल कि वोहिजा पहुचके गाँव के केहु आदमी से कुछुओ लेबेके नईखें आ ना ही वोहिजा कुछुओ किन के खायेके बा । सभ केहु आपन खाना लेके जाई । आ चुनाव के दू दिन पहिले सबेरे ऑफिस के सामने से बस खुली । नियत समय से सब केहु के आ जायेके होई ।

नोकरी आ चुनाव जइसन डियूटी के डर से सभ केहु समय से आ गईल । बसो समय से खुल गईल । वोह बस में हमार एगो नजदिकी कर्मचारी रैना जी रहले । उ अतना डेराईल रहले कि राहता के हर एक घंटा के सामाचार हमरा के मोबाइल प देत रहले ।

बस खुलला के बाद शहर के बहरी बस रूकल आ सभ केहु जलपान कईल । बस चलल सभ केहु के चेहरा से डर के अंदाजा लगावल जा सकत रहे । उग्रवाद क्षेत्र में प्रवेश करे से पहिले एगो लाईन होटल प रूक के सभ केहु खाना खाईल । वोहिजे सभ केहू एक साथे बोलल कि चलऽ भाई खशी के माई कब ले खरजिउतिया मनाई । चलऽ चली जा आजूये हमनी के जिनगी के आखिरी दिन बा । केहू कहे कि अरे काहे डेरात बाडऽ भाई मरबो करब स त सरकार जिनगी जिये खातिर हमनी के परिवार के पईसा दे दिही अरे आखिर हमनी के परिवारे खातिर नु नोकरी करत बानी जा । असही सब केहू एक दोसरा के हिम्मत बढावत रहे । थोडही देर में बस खुल गईल ।

बस में सभ केहू के दूनो हाथ आपस में सटल रहे शायद सबकेहू भगवान से इहें प्रार्थना करत रहले कि सही सलामत आपना आपना बुथ प पहुँच जाव । तबही गोली के तड़तड़ाहट से पूरा जंगल गुंजे लागल । बस लड़खड़ात सड़क के एक ओरी जाके एगो फेड से लडि के खाड़ हो गईल । जब सभके होश आईल त देखल कि बस के आगे के शीषा चकनाचुर हो गईल बा । चालक आपन स्टेयरिग प ढेर हो गईल बा । सभ केहू के काटऽ त खुन ना । सभ डेराईल आपन-आपन सीट प धसल जात रहले । तबही एगो डेरवावन लउकत उग्रवादी आपन हाथ मे बन्दूक लिहले , बस में बईठल लोग के ओरि तनले, बस के केवाडी के लगे आईल ।

ओकरा साथे खाड़ दोसर उग्रवादी रोबदार बोली में बोलऽलस " अगर जान के सलामती चाहत बाडऽ लोग त हाली से केवाडी खोलऽ, हमनी के लगे समय नईखे । "

डर के मारे सभ केहू के घिघ्घी बन हो गईल । पहिले त सभ केहू एक दोसरा के मुह ताके लागल । बस के खलासी कवनो राहता ना देखिके बस के केवाडी खोल दिहलस आ दूनो उग्रवादी बस के भीतरी आ गईले ।

वोह में से एगो उग्रवादी कठोर बोली में बोललस " केहू चालाकी ना करि, हमनिके बात धेयान से सुनऽ, आ वोह प अमल कर । ना त फोकट में मारल जईब लोग । हमनिके साथी बगल के खेतऽन में लुकाईल बाड़न , आ बस के चारो ओरि से घेरले बाडन । हमनिके दुईये आदमी ना समझल जाव



डा० उमेश जी ओझा

जमशेदपुर झारखंड के रहे वाला डा. उमेश जी ओझा , पिछिला कई साल से भोजपुरी मे लिख रहल बानी । इँहा के सैकड़न लेख कई गो अलग अलग पत्र पत्रिका अखबार मे छपि चुकल बडुवे । पत्रकारिता मे डिप्लोमा के संगे संगे एम काम भी कईले बानी आ एह घरी जमशेदपुर मे रहि के झारखंड सरकार के सेवा दे रहल बानी ।

। " उग्रवादियन के बात सुनिके सभ केहू के चेहरा के हवाई उड़ गईल कि कब का होई, केकर जान जाई, केकरा से पईसा छिनाई मालुम ना । सभ केहू के देही से हर-हर पसीना निकलत रहे।

तबही एगो उग्रवादी गरजल कि " ई ईलाका हमनिके ह एहिजा हमनिके चलेला। सरकार हमनिके उपर इनाम रखले बिआ। बाकि हमनिके आम लोग से पेयार आ दुलार से पेश आवेनी जा। जे हमनिके पेयार ना समझे ला ओकरा के हमनिके नफरत से समझावेनी, नफरत के मतलब बुझाला ना त समझल कि कतल से "।

दोसरका उग्रवादी डरावना हंसी हंसत चिल्लाईल, " हमनी के करनाम रोज अखबारन में छपत बा। आजू के घटना काल्हू अखबार में छपी जे बाची से पढी। अब हाली से अगड़ी जाति के लोग सीट छोडी के खाड हो जाउ, हमनी के उनका साथे नरमी बरतब जा। "

ई बात सुनिके पिछडी जाति वाले लोग डेराये लागल कि जान के खतरा बा, उग्रवादी अगडी जाति के बुझात बाड़न।

अगड़ी जाति वाला सहज भाव से आपन-आपन सीट छोडिके खाड हो गईल ।

एह प एगो उग्रवादी चिल्लाईल " केहू पिछड़ी जाति के त नईखें खाड भईल ? भेद खुली त उ मारल जाई । " एकरा प एगो सुरेश बाबू धड से माफी मांगत आपना सीट पर सट गईले ।

जेकरा प दोसरका उग्रवादी, सुरेश बाबू के एक चटकन मारत कहलस कि चलऽ तु मुरगा बनऽ । ओकरा बाद उ बस के भीतर जाति के पहचान करे लागल। बाकि सभ केहू त ओकरा एके लेखा लागल काहे कि केकरो चेहरा प थोडे लिखल बा कि उ अगडी भा पिछडी जाति के ह। ओहनी के चाल चलन से सभका भीतरी डर बढल जात रहे।

बंदूक लिहल उग्रवादी " ठीक बा सभ खाड आदमी के पहचान हो गईल बा। सभ केहू जे भी रूपया पैसा लिहले होखे हमार साथी के दे देव। जे ना दिही मारल जाई। "

बस में बईठल लोग के विश्वास भईल कि उग्रवादी अगड़ों के ना हवन। उ लोग सहज महसूस करे लागल। बस में खाड अगड़ी जाति के लोग डर के मारे आपना पासे राखल रूपईया पैसा उनका के दे दिहले।

उग्रवादी फेरू बोलऽलस " पिछड़ी जाति के लोग बडी खुस लागत बा, चलऽ तु लोग भी रूपईया पईसा निकाल के हमार साथी के दे द। "

अगड़ी जाति के लोग खुस भईल कि चलऽ उहे ना पिछड़ी जाति के लोग भी लुटा गईले।

तबही दोसरका उग्रवादी ठहका मारिके जोर से हंसलस, " हमनिके अईसही अगड़ी-पिछडी के बांटी के लुटेनी जा। तहनी लोग चुनाव करावे जात बाड जा , हमनिओ के देस के सरकार, राजनीतिक पार्टी आ नेता लोग से ई सभ सिखले बानी जा । हमनिके केकरो समर्थक नईखी जा। "

अब सभ केहू समझ गईल रहे कि उ लोग लुटेरा ह राहजनी करेला। एही बीच एगो लुटेरा, " चल अब औरतन के बारी बा , तु लोग मास्टरिन हउ चुनाव करावे जात बाडू ई कान आ नाक में जवन थोड बहुत गहना पहिनले बाडू दे दऽ। केकरो साथे कवनो नरमी ना बरतल जाइ। "

अगिला सीट पर चुपचाप नया नोकरी लागल एगो मास्टरिन रंजु के देखी के लुटेरा चिल्लाईल, " अरे ते काहे चुप बाडिस ?"

त का करि लउकत नईखे कि हमरा पास कवनो गहना नईखे। ना कान में ना गरदन में ना अंगुरी में " रंजु बोललली।

अरे चल " के कहत बा कि तहरा लगे गहना नईखे इजतो एक तरह के गहना है। चलऽ अबही हमनिके उहे ढेर जरूरत बा। "

" चुप रहऽ , का तहनी के बहिन बेटी नईखे ? " रंजु बिना कवनो डर के बोललली।

" तु देखल चाहत बाडू हमनिके ताकत ऐहिजा हिजडन के फउज बा तहरा के के बचाई। " आ रंजु के खाड क दिहलस । बस में बईठल सभ केहु चुपचाप आपन-आपन जान जाये के डर से देखत रहल ।

" चलऽ ना त तोरा के उतार के सभ केहू के जान मार देब। "

" सभ केहू के काहे, हमरे के मार दे, एगो गरीब आ लाचार अउरत कम हो जाई एह दुनिया से। "

दोसरका लुटेरा गरजल " अरे तु कांहे आपन जान देबे प तुलल

www.bhojpurisahityangan.com

बाडु ? मरे दे इ लोग के , आपन जान जाये के डर से तहार इज्जत भी लुटवावल चाहत बाड़न, ई लोग मरद ना अउरत ह लोग। ‘‘

एह प मरद लोग डर से सुखाईल आपन होठ प जीभ फेरे लगलन। उ लोग के उ लइकी बढिया लागल । जे आपन इज्जत देके उ लोग के जान बचावल चाहत रहे। सब केहु एक दोसरा के मुंह देखे लागल।

तबहि एगो बन्दूक लिहल वोह लईकी से पूछलस ‘‘ अरे तु कवन जाति के हउ। ‘‘

‘‘ तहरा जात पात से का लेवे के बा इजत के कवनो जात ना होला। अगड़ो के इज्जत लुटल कि पिछड़ो के । ‘‘

‘‘तब त बस में बईठल सभ अउरतन के इज्जत लुटब जा, काल्हू के अखबार में छपी कि उग्रवादी अगड़ी आ पिछड़ी जाति के अउरतन के इजत लुटले आ जान मार दिहले। ‘‘

अगड़ी आ पिछड़ी जाति के समर्थक आ उग्रवादी संगठन हमनी जईसन तिसरा मोरचा के संगठन के कारनामा से थरथरा जईहे। ‘‘

तबही मुरगा बनल सुरेश बाबू खड़ा होके गिडगिडात ,‘‘ उग्रवादी जी हम एह देश के बेरोजगारन के फउज के एगो बेकार सिपाही हई। हमरो के आपन धंधा में शामिल कर लिही । आपन तदाद बढाई । बेकार में हमार जान लेके का करीब ?‘‘

‘‘जान बचावे खातिर का देबऽ ?‘‘

‘‘एगो बोतल आ एगो पोलीथीन शराब के झोरा में रखले बानी राहजनी क के। ओकरा के पी के आपना भीतरी के आगी ठंढा करी। ‘‘

लुटेरा शराब के बोतल आपन मुंह में उलटे लागल । तबहि उ बहादुर लईकी उ लोग के जोर से धकिया दिहलस। लुटेरा लडखड़ा गईले। एह प सुरेश बाबू अईसन लात मरले कि जईसन गेन्दा खेले खातिर मारल जाला। लुटेरा के हाथ से बन्दूक फेका गईल, पीछे से बस के खलासी वोहनी के घसिटलस आ आपन आगोस में दबोच लिहलस। बस में बईठल सभ केहू में ताकत आ गईल आ सभ केहु मिलके दुनो लुटेरा के दबोच लिहले। मार खाके उ लोग बेहोस होखे लागल । सभके भीतर बईठल जातिगत भावना खतम हो गईल रहे। खलासी बस तेजी से चलावत दुनो लुटेरा के नजदीक के थाना मे देत सभ केहु के चुनाव करावे खातिर उ लोग के समय रहते स्कूल (बुथ) तकले पहुचा दिहलस। दोसरा दिन शांति से चुनाव करवा के उ लोग सकुशल लउट आईल।



बंगाल सूबा में शोरा के व्यापार



फोटो साभार : पी.राज सिंह

हमनी के आपन स्थानीय इतिहास से कतना अनभिग बानि जा ? हमनी के विश्वविद्यालयन में कइसन इतिहास पढ़ावल जाला ? यदि हम कहीं कि डच आ अँगरेज़ व्यापारी रउरा गाँव से आदमी आ जनावर के मल मूत्र राख , रेह , पुअरा आदि ढोके बारूद बनावत रले हन आ ऊ बारूद फेर रउवा खिलाफ इस्तेमाल होत रहे , ऊ बारूद एशिया , अफ्रीका आदि देशन में व्यापारिक हित के बढ़ावे खातिर , ओह देशन पर कब्जा जमावे खातिर इस्तेमाल होत रहल हां त रउवा शायद बिस्वास ना होई । लेकिन ई बात शत प्रतिशत साँच बा । कई प्रकार के अभिलेखन के गहराई से अध्ययन कईला पर ई बात स्पष्ट हो जात बा ।

अइसे त मुग़लकाल के अंतिम समय मे आ आधुनिक काल के प्रारम्भ में यदि कवनो यूरोपिएन के स्मृति अवशेष सम्पूर्ण भोजपुरिया क्षेत्र में कहीं लउके त आँख बंद कई के निष्कर्ष निकाल लिहिं की ऊ लोग ई तीन में से कवनो एक भा सभ काम करत रहल ह । ऊ तीन काम रहल हां , अफीम , नील भा शोरा के व्यवसाय । ई तीनो चीज विश्व व्यापार के वस्तु रली हां सन ।

एह लेख में शोरा के व्यवसाय से जुडल बात के जानकारी हम देबे के प्रयास करेब । शोरा का ह ? एकर उत्पादन कइसे होत रहल ह ? एकरा से बारूद कइसे बनावल जात रहल ह ? डच आ अंग्रेजन में कइसन प्रतिस्पर्धात्मक व्यापार होत रहल ह आदि सब बात पर भी कुछ विस्तार से चर्चा कईल जाई । आ स्थानीय इतिहास विश्व के इतिहास से के तरह गहराई से जुडल बा ई भी प्रकाश में आयी ।

आज के छपरा के भूमि पर डच नागरिक सब के मात्र दू गो स्मृतिचिन्ह रह गईल बा । एक , छपरा के पश्चिम उत्तर के तरफ बनियापुर जाए के राहि में डच सेमेट्री (कब्रगाह) जहां एगो मक़बरा लगभग तीन सौ बरिस से एही तरह खड़ा बा । ई मक़बरा डच ईस्ट इण्डिया कंपनी (VOC , Verenigade



पी राज सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला पी राज सिंह जी आर एस कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी , नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी । एह घरी इँहा के छपरा मे बानी ।



Oostinische Companie) पटना भाग के प्रधान Jacobus Van Horn के ह। ई बात सारण गजेटियर जवन एगो अँगरेज़ आई सी एस अधिकारी द्वारा सन 1905 में लिखल गईल बा के पृ० 146 पर दर्ज बा। करिंगा गाँव यादव बहुल गाँव ह आ सन 1712 तक डच सब के अधीन रहल ह। ऐही गाँव के चौहद्दी में कब्रगाह बा जहाँ सब यूरोप के लोगन के दफनावल जात रहे। दुसरका निशानी बा , छपरा के प्रसिद्ध जिला स्कुल जहां से देश के पहिलका राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद मैट्रिक तक के पढाई कईले आ पूरे बंगाल सूबा में प्रथम अईले। केहु के मन में ई प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठ सकेला कि आखिर ई डच के रले हन ? आ सात समुन्दर के पार के देश से आ के छपरा अइसन छोट जगह में का करत रले हन ?

खोज शुरू भ गईल। कतना पुरनिया लोग से पूछनी बाकिर केहु कुछ ना बता पावल डच सब के बारे में। हमनी में एगो सबसे पुरान शिक्षक बानी 84 वर्षीय , उहाँ से जानकारी मिलल की चम्पारणे ना उनकर बाबू जी के ज़माना में उनका गाँवे भी नील के खेती होत रहल हां। माने ई भईल की भोजपुरिया क्षेत्र में नील भी अंतराष्ट्रीय व्यापार के वस्तु रहल हां। ग़ाज़ीपुर आ आस पास के इलाका में अफीम के खेती होत रहल ह। शायद सरकार से परमिट लेके भा चोरी छुपा के आज भी होला। ग़ाज़ीपुर में अफीम के कारखाना भी रहल ह। माल ढोवाई गंगा आ सरजू नदी के मार्ग से कलकत्ता के हुगली तक होत रहल हां। चीन में अफीम युद्ध के चरचा करत अंग्रेजी हिंदी के उपन्यासकार अमिताभ घोस आपन उपन्यास सी ऑफ़ पॉपिज (अफीम) मे एह सम्बन्ध में लिखले भी बाड़े।

डच सब के बारे में जानकारी मिलल सारण गजेटियर में। पृ० 24 पर के बात के भावानुवाद लिख रहल बानी। डच छपरा में अंग्रेज़न से पहिले अईले। डच एगो साहसी , जोखिम उठावे वाला व्यापारी रहले । टैवर्नियर फ़्रांसिसी हीरा के व्योपारी रहले। ऊ 1666 में पटना के यात्रा कईले रहले । उनकर यात्रा वृतांत के हवाले से सारण गजेटियर में कहल गईल बा कि डच लोग के पटना में एगो घर रहल ह आ ऊ लोग शोरा के व्यापार करत रहे।शोरा शुद्ध करे खातिर ऊ लोग Chaupar .(आज के छपरा) में एगो कारखाना/ लगवले रहे। टैवर्नियर फेरु आगे लिखत बाड़े की शोरा के शुद्ध कईला के बाद ओकरा के पटना होते हुए नदी मार्ग से हुगली भेजल जात रहुवे। बाद में शोरा के व्यापार से अंग्रेज भी आकर्षित भईले काहे कि गन पाउडर बनावे में शोरा के बहुत ज्यादा प्रयोग होत रहल ह।

आईं ऊपर के तथ्य के परमान पावे खातिर कुछ और स्रोत के खँगारल जाव। अब हम रउवा सभ के धेयान www.highbeam.com से प्रकाशित आलेख The Indian Salt Peter Trade , the Military Revolution and the Rise of Britain as a Global Superpower का ओरि ले जाए के चाहब। संछेप में तथ्य कुछ एह प्रकार बा । 1601 से 1801 तक जहाजन के हजारों फेरा एशिया आ यूरोप के देशन के बीच लागत रहे। जहाजन पर ईस्ट इण्डिया से माल यूरोप के बजारन में ढोवात रहे। ए सब जहाजन पर हजारों टन माल लदात रहे जवना में 16 % माल शोरा होत रहे। अउर सब व्यापार के माल में कॉफ़ी , चाय , सिल्क , सुगन्धित मसाला आदि रहे। शोरा जहाज के तलहथी में रखात रहे जवन पैखाना आ मोरी के पानी नियर महके बाकिर एह दुर्गन्ध में भी एगो लुकाईल राजनैतिक , व्यापारिक शक्ति के सुगंध रहे।

अब तक ई बात साफ़ हो जात बा की शोरा के प्रयोग गन



डच ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC)

पाउडर / बारूद बनावे में कईल जात रहे । शोरा के उत्पादन आ वितरण में स्थानीय आ वैश्विक स्तर पर काफी गलाकाट प्रतिस्पर्धा भी रहे । इतिहास के मध्य काल में शोरा ही पहिलका चीज रहल हां जेकर विश्व भर में मांग रहल हां । ई आज जारी भूमंडीकरण के प्रक्रिया के इतिहास के पहिलका फेज ह । एकर विश्व व्यापार पुर्तगाली सब शुरू कईले । पुर्तगाली सब के मुख्य अड्डा श्री लंका रहे । बाद में डच कंपनी (VOC) ओह लोग के चहेट देहलख आ यूरोप के बाजार में नियमित सप्लाई करे लागल । ई सत्रहवीं शताब्दी के दुसरका दसक के बात ह । एकरा बाद अंग्रेजी कंपनी , " कंपनी ऑफ़ लन्दन मर्चेन्ट्स " के प्रवेश होत बा । इहे कंपनी बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) के नाम धारण कई लेहलस ।

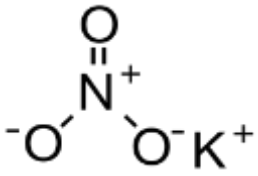
अबतक यूरोप में गन पाउडर के बहुत मांग बढ़ गईल रहे आ यूरोप के आतंरिक स्रोत से एह मांग के पूरा ना कईल जा सकत रहे । एह कमी के डच कंपनी (VOC) आ अँगरेज़ कंपनी ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) पूरा करे के कोशिश कईलख । ई दुनो कंपनी अउर सब जगह शोरा के उत्पादन के सम्भावना के खोजला के बाद आपन धेयान बिहार में केंद्रित कईले सन । एह में पटना एगो प्रमुख व्यापारिक केंद्र के रूप में उभर के सामने आईल ।

पलासी के युद्ध : डच कंपनी VOC शोरा व्यापार पर 18 वीं शताब्दी के आधा समय तक हावी रहल । लेकिन बाद में 1750 तक ईस्ट इंडिया कंपनी एगो सामरिक शक्ति के रूप में उभर के सामने आईल आ शोरा के व्यापार पर आपन वर्चस्व जमावे लागल । 1757 में पलासी के युद्ध भईल आ बंगाल



सूबा के सिराजुद्दौला के हार से फ्रांसीसी कम्पनी भी प्रतियोगिता से बाहर हो गईल काहे कि ऊ लोग युद्ध में सिराजुद्दौला के साथ देले रहे । फेर 1759 में डच कंपनी बीदर में ईस्ट इंडिया कंपनी से भी युद्ध हार गईल । एकरा बाद भारत के कहो दुनिया के 70 % शोरा उत्पादन पर अँगरेज़ कंपनी अधिकार हो गईल आ एही अनुपात में दुनिया में ओकर अधिकार भी बढल । इहाँ हम दोबारा धेयान दियायब कि शोरा के उत्पादन में बिहार के पटना , छपरा आदि जगह प्रमुख केंद्र रहली सन ।

शोरा का ह ? शोरा "नीमक " अर्थ में आम बोल चाल में प्रयोग होखे वाला शब्द ह । बाकिर ई नीमक ना ह । शोरा में कई प्रकार के तत्वन के नाइट्रेट रहेला जवना में प्रमुख रूप से पोटासियम नाइट्रेट पावल जाला । शोरा के शुद्ध कई के पोटासियम नाइट्रेट निकालल जात रहे । पोटासियम नाइट्रेट, अमोनिया आ , गंधक के एगो अनुपात में मिलवला पर ई मिश्रण एगो प्रबल बिस्फोटक के रूप ले लेला जेकरा के हमनी के बारूद , गन पाउडर , ब्लैक पाउडर आदि नाम से जानेनी सन । वजन के हिसाब से बारूद में पोटासियम नाइट्रेट 65-70 % रहेला । मध्य काल से आधुनिक काल ले एशिया अफ्रीका में व्यापारिक, सामरिक , राजनितिक हित के बढ़ावे खातिर बारूद के प्रयोग के इतिहास पावल जाला । फिर भी एशिया आ यूरोप के बीच व्यापार में शोरा एगो सहायक चीज ही रहल ह , वजन से मात्र 16% . मुख्य वस्तु कपास , मसाला आदि रहल ह । जहां तक बिहार आ बंगाल के प्रश्न बा इहाँ यूरोप के प्रमुख देशन में डच आ अंग्रेजन के उपस्थिति ही इतिहास के पन्ना में प्रमुखता से दर्ज बा । एह क्षेत्र से व्यापार के वस्तु में मुख्य रूप से शोरा ही रहल ह । **(क्रमशः)**





फोटो साभार : माइक्रोसॉफ्ट Bing

सोनवा कारन अइलो राम एही रे

सोनवा कारन अइलो राम एही रे मिरिच देस
से गलि गइले सोनवा सरीर, एही रे मिरिच देस।

दिल्ली के राजघाट स्थित गांधी दर्शन द्वारा संचालित किताब के दुकान से हमरा मारीशस के हिंदी रचनाकार सोमदत्त बखोरी के लिखल "एक मारीशसवासी की हिंदी-यात्रा" नामक किताब मिलल। पढल शुरू कइनी एकर पहिला अध्याय 'बचपन' में लिखल एगो पैराग्राफ पर हमार नजर टिक गइल जेकरा में लिखल रहे-"भोजपुरी केवल घर की भाषा नहीं, सारे गाँव की भी भाषा थी, भोजपुरी के बल लोग हिंदी समझ लेते थे और हिंदी सिखाना चाहते थे तो वह सहायक सिद्ध होती थी। आज हम निस्संकोच कह सकते हैं कि इस देश में हिंदी फली फूली है तो भोजपुरी के प्रताप से।"

सोमदत्त बखोरी मॉरीशस के एक सुप्रसिद्ध हिंदी रचनाकार हईं। बखोरी जी के एह पंक्तियन से हमरा में ना जाने कवन उत्सुकता भर गइल कि हमार मन में मारीशस के जाने ला ललक बढ़ गइल।

इतिहास साक्षी बा कि सन 1833 ई. में विश्व से दास प्रथा निर्मूलन हो गइल पर एकरा खातमा के ठीक बाद एगो नया प्रथा जनम लेलस। वइसे त सन 1760 ई. से ही फ्रांसिसी लोग दखिन भारतीयन के उख के खेती ला शर्तबंद मजदूर के रूप में भर्ती शुरू कइलस जेकरा दक्षिण अफ्रीका, मारीशस, सूरीनाम, ब्रिटिश गुयाना, फ्रेंच गुयाना आ अनेक कैरेबियन देशन में उख के खेती ला जहाज में भर भर के ले जाइल गइल।

एने सन 1798 ई. में दास प्रथा के समाप्ति ला ब्रिटिश संसद में सन् 1822 ई में एगो बिल आइल बाकिर इ बिल सन 1828 ई. में पास हो सकल काहे कि बतावल जाला कि ओह समय ब्रिटेन में गुलाम आ दास से हमदर्दी राखे वाली सरकार रहे। तबही इ बिल पास हो सकल। अंततः सन 1833 ई में दासप्रथा के पूरा खातमा हो गइल। विडम्बना देखी कि ब्रिटिश उपनिवेश में एने दास प्रथा खतम भइल आ ओने सन 1834 ई. में शर्तबंद प्रथा या "इनडेचर लेबर सिस्टम Indenture Labour System के शुरूआत हो गइल।

India Empire, January, 2011, में गुयाना के युवा लेखिका Andrea Seepersaud (From Whernce They Left : Paying Homage to Indentured Serv-

ants 1834-1920) के पृष्ठ संख्या- 26 में एगो आलेख में लिखत बाड़ी कि "सन 1834 ई. से 1839 ई. तक तकरीबन 6100 मजदूरों में से मात्र 100 महिलायें मॉरिशस, आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन पहुंचे। 1916-17 तक 1,194,956 शर्तबंध मजदूर भारत से मॉरिशस, ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिडाड, जमैका,ग्रेनेडा, सेट लूसिआ, द कालोनी ऑफ नाटाल, सेंट किट्स, सेंट विन्सेंट रीयूनियन आइलैंड, सूरीनाम, फिजी, आस्ट्रेलिया, ईस्ट अफ्रिका और सेशल्श पहुंचे।'

आँखि में सुख के सपना आ मन में सुखी बने के उम्मीद लिहले आपन देश, परिवार, घरबार, सब कुछ के छोड़ एगो नया दुनिया में पंहुचा दिहल गइलें। 31 मई 1924 तक लगभग 4 लाख 50 हजार लोग मॉरीशस पहुँचलें। उहें 1838 ई. में कैरेबियन देसन में सबसे पहिलें गुयाना में 238909 गिरमिटिया पहुँचल। 75236 लोग भारत लौट आइल एह में 70 प्रतिशत पूर्वी उत्तर प्रदेश से आ 15 प्रतिशत लोग बिहार से रहलें। 1845 ई से 1917 ई तक 143939 भारतीय मजदूर त्रिनिडाड पहुँचल।

अंग्रेजी के शब्द 'एग्रीमेंट' से 'गिरमिट' आ एकरे से शब्द "गिरिमिटीया" बनल बा। जे शर्तबंध मजदूर भारत से मारीशस, ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिडाड, जमैका,ग्रेनेडा, सेट लूसिआ, द कालोनी आफ नाटाल, सेंट किट्स, सेंट विन्सेंट रीयूनियन आइलैंड, सूरीनाम, फिजी, आस्ट्रेलिया, ईस्ट अफ्रिका और सिआचल्स आदि देशन में गइल उहे गिरिमिटीया मजदूर, जहाजी भाई, कुली आदि नाम से जानल जाला। एगो आंकडा के अनुसार -मारीशस में सबसे पहिला भारतीय सन 1835 ई. में आइलें। 20 वीं सदी के शुरूआत में एह देश में भारतीयन के संख्या 200,000 से 300,000 के आसपास रहे उहे आजू इ बढ़के करीब 800,000 से 900,000 तक हो गइर्ल। मारीशस के अप्रवासी घाट भा इमीग्रेशन डीपो पर 2 नंवम्बर 1834 के पहिला जत्था एटलस नामक नाव से उतरल आ 31 मई 1924 तक मजदूरन के दल उहां उतरत रहल।

गिरमिट 'एग्रीमेंट' का बिगड़ल रूप ह। बिहार आ पुर्वी उत्तर प्रदेश के भोजपुरी भाषा भाषी अनपढ़ मजदूर 'एग्रीमेंट' के बिगड़ले रूप बोलत रहलें जेकरा गिरमिट कहल जात रहे। विशेष कर इ मजदूर बिहार आ पूर्वी उत्तर प्रदेश के अलावा बंगाल, गुजरात, तमिलनाडु आ आन्ध्र प्रदेश से रहलें जेकर भाषा अवधी, भोजपुरी, गुजराती तमिल और तेलुगू आदि रहे पर उहां पहुँच के सभे मजदूरन के भाषा भोजपुरी ही हो गइल।

भोजपुरी भाषा के इतिहास में रास बिहारी लिखत बानी - 'इन मजदूरों ने अमानवीय यातनाएँ तथा भीषण आर्थिक कष्ट के दिन भोगने पड़े परन्तु उन लोगों ने अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा। आज भी भोजपुरी भाषा संस्कति जीवित है और इनकी भाषाओं के मिश्रण के बावजूद अपना अलग अस्तित्व कायम किये हुए है।'

पहला गिरमिटिया नामक उपन्यास में गिरिराज किशोर 'गिरमिटिया मजदूरन के त्रासदी के बयान कइले बाड़न - 'एक अनजान देश में आम आदमी का महत्व नहीं के बराबर होता है। अफ्रीका में भारतीयों की जिन्दगी नौकरों जैसा भी नहीं बल्कि इससे भी बदतर गुलामों जैसी हो गई थी।' गाँधी जी कहत बानी - "गिरमिटिया मरन्नातक जीवन जी रहे हैं..... मात्र दस शिलिंग देकर गिरमिटियों को गुलाम बनाया जा रहा हैं।"

हिंदी आलोचक आ इतिहासकार रामविलास शर्मा अपान किताब 'गाँधी, आंबेडकर लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्या' में लिखत बानी कि - "गिरमिटिया मजदूरों के साथ



संतोष पटेल

बेतिया, पश्चिम चंपारण, बिहार के रहे वाला संतोष पटेल जी , रिसर्च स्कॉलर (भोजपुरी), हई , यूजीसी नेट क्वालिफाइड, एम ए, एम फिल के संगे संगे सिनिअर डिप्लोमा - गायन (संगीत) मे , संपादक - भोजपुरी ज़िन्दगी, सह संपादक - पुर्वान्कूर, (हिंदी - भोजपुरी), साहित्यिक संपादक - डिफेंडर (हिंदी- इंग्लिश- हिंदी), रियल वाच (हिंदी), उपासना समय (हिंदी), हई। कई गो भोजपुरी आ हिन्दी किताब लिख चुकल बानी , कुछ शोध परक भोजपुरी किताब प्रकाशन मे बडुवे

जैसे व्यवहार कैदियों के साथ भी नहीं होता, उन्हें जितना काम करना पड़ता हैं, कैदियों को भी उतना नहीं करना पड़ता । गुलामी भोगने के बाद जब वे छूटते हैं , तब भी बरसों तक उनमें गुलामी की बू बनी रहती है । गुलामों की संतान गुलाम होती है वैसे ही गिरमिटिया मजदूरों के बालक भी उन्हीं की तरह गिरमिटिया मान लिए जाते थे ।"

मारीशस में सोना मिले के लालच दे के पंहुचा दिहल गइल इ भोला भाला लोगन के बहुत कष्ट सहे के पड़ल । इ लोग पहाड आ पत्थर के काटत-काटत अपने सोना जइसन शरीर के गला चुकल रहलें बाकिर उहाँ सोना होखे तब नू उनका मिलित । उनका बदले में मिलल अंग्रेजन के खूनी चाबुक जवन उनकर पीठ पर सड़ासड़ पड़त रहे ।इहे व्यथा मारीशस के एक लोक गीत में सुनाई पडेला -

'सोनवा कारन अइलो राम एही रे मिरिच देस
से गलि गइले सोनवा सरीर, एही रे मिरिच देस ।'

साल 2009 ई में मारीशस यात्रा पर गइल भाषाविद डा राजेन्द्र प्रसाद सिंह जी पवनी कि उहाँ लोग परिवार में फर्राटेदार भोजपुरी बोलेला । वइसे गिरमिटिया मजदूर जहां गइलें आपन मोटरी में भोजपुरी के बान्ह के ले गइल रहस । शुरू में मौखिक परम्परा में इ मजदूर लो भोजपुरी के गीत शोक भा खुशी में गावस । जेमे अल्हा उदल, बिरहा सबद, चैपाई, ललना, सोहर आ विआह के गीत रहे ।

मारीशस के महात्मा गांधी संस्थान के भोजपुरी विभाग में एकरा जोगा के राखल बा । अब त मॉरिशस सरकार 30 मई 2011 ई के मारीशस के संसद से एगो बिल पास कर के भोजपुरी यूनियन के स्थापना क देले बिया । संगे संगे सरकार भोजपुरी लोकगीत झूमर नाच आदि के यूनेस्को से एकर कल्चरल हेरेटिज में शामिल करे के मांग कइले बिया जबकि अप्रवासी घाट एकमात्र यूनेस्को हेरेटिज साइट के मान्यता देले बा ।

मॉरिशस के सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार राज हिरामन के अनुसार - " मॉरिशस में भोजपुरी लोक गीत आ लोक कथा मिलेला. जवना में भारतीय शर्तबंद मज्दुरण के दीन-दारुण-दर्द -दयनीयता के कथा कहानी बा. सुरुज उगे से लेके ढूढे तक कोड़ा के मार खा के बैल लेखा गोरन के कोठी मालकिन के खेत से उबरे के बाद उ मजदूर आपन दुःख दर्द बांटे के जरिया इहे भोजपुरी के लोकगीत रहे ।"(भोजपुरी पंचयत-नवंबर-2014 पेज-15)

मॉरिशस में भोजपुरी साहित्य के पहिल पुस्तक 1920 ई में छपल रहे जेकर नाम रहे - विवाह मंगल. जेकरा गया सिंह भा भाग्यवती जी संकलन कइले रही.बाकिर एकरा 60 साल बाद 1969 ई में ब्रजेश मधुकर भगत के मधुकलश छपल. जवना में भोजपुरी गीत, भजन, विआह-देवी देवता के गीत विरहा आ झूमर बा . उनकर दोसर किताब रहे - मधु बहार. एह किताब में धर्म, राजनीति, परब-त्यौहार, आदि के बारे बा. उन्हान के तीसर किताब बा - मधुलिका जेकरा में मारिशस के आजादी के गाथा-गीत, विरहा, झूमर दिहल बा ।

1970 ई में डॉ प्रेमचंद मॉरिशस में भोजपुरी आ 1981 ई में कुबेर मिश्र मारीशस के भोजपुरी लोकगीतों का विवेचनात्मक अध्ययन पर शोध कइले बाडन । भोजपुरी विद्वान दीमलाला मोहित 1979 ई में श्मॉरिशस की भोजपुरी में प्रचलित लोकोक्तियाँ, मुहावरे, और पहेलियाँश् नामक किताब लिखले. श्री नारायण दत भिक्की के लोक संगीत गीत माला, रूद्र पोखन के - भोजपुरी गीत सन 1972 में आईल जबकि दयानंद लाल बंसंत राय के - सीरी मद्भगवत गीत, सत्यनारायण स्वामी के कथा आ आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा से भोजपुरी कविता के संकलन छपल बा ।

1992 ई उदय नारायण गंगू के शोध मारीशस के भोजपुरी लोक साहित्य आइल. 1994 में दीमलाला मोहित के भोजपुरी गीत, बाल गीत, पहेली, गोदना के संकलन आइल बा. सीताराम रामयाद के माटी के लोरश् 1997 में छपल जवना में गीत गो भोजपुरी के नृत्य-नाटिका बा । 1987 में भोजपुरी इंस्टिट्यूट संस्था के गठन श्रीमती सरिता बुधू के संपादन में भोजपुरी पत्रिका (सिरिफ एक मात्र अंक) प्रकशित कइले बा ।

1994 ई में भोजपुरी महत्व के पुस्तक कन्यादानश् जेकर के सरिता बुधू लिखले बाड़ी सबसे पाहिले अंग्रेजी में 800 पृष्ठ के आईल बा बाकिर 2010 में मॉरिशस की भोजपुरी परम्परा नाम से प्रकशित भईल बा ।

1980 ई में बंसंत मासिक पत्रिका (महात्मा गाँधी संसथान से बहरल रहे. वसंत के एह सोलहवा अंक के प्रकाशन मॉरिशस

में भोजपुरी वर्ष के रूप में मानवाला के उपलक्ष में प्रकशित भईल रहे.जेकर संपादन मॉरिशस के राष्ट्रकवि अभिमन्यु अनत जी कइले बानी।

2010 में सरिता बुधू के दू गो किताब आईल - भोजपुरी बोल, आ भोजपुरी के सहज व्याकरण. वइसे भोजपुरी के सामग्री मॉरिशस के हिंदी पात्र पत्रिका में 1960-80 तक खूब निकलल ।

महात्मा गाँधी संसथान, मॉरिशस के भोजपुरी भाषा के विभागाध्यक्ष डॉ सुचिता रामदीन के शादी के गीत संस्कार मंजरी (575 पृष्ठ में) प्रकशित भईल बा जेमे वैज्ञानिक आधार से हिन्दू संस्कार के व्याख्या बा।

भोजपुरी के लमहर चिन्तक लेखक श्री अक्षयवर दीक्षित जी एगो आलेख - प्रवासी भोजपुरी का अंतरद्वन्द जवन - अजब में संकलित बा पृष्ठ 38 -39 तक) में लिखत बानी कि श्री मुनेश्वर लाल चिंतामणि भोजपुरी भाषा में नाटक, कहानियां, कविताएँ लिखते रहे हैं जो भारत में प्रकाशित पत्रिका भोजपुरी कहानियां एवं पुरवइया तथा मरिश्सस के बसन में प्रकाशित होती रहती थी।

भोजपुरी में मॉरिशस निवासी ज्ञानेश्वर रघुवीर, वैरागी, प्रहलाद रामशरण, पंडित ठाकुर दत पंडित, श्री मुंजानन्द नेमा, रामदेव धुरंदर इन्द्रदेव भोला, भोजपुरी सृजन में लागल बाड़ें।

मॉरिशस देश के रूप में विकास करत गईल आ एने ठीक उलट भोजपुरी के विकास रुकत गइल भा पिछड़ गइल. केहू कहल कि भोजपुरी के लिखे के कवनो साधन नइखे ना शिक्षा के ई माध्यम बन सकेला नतीजा ई भईल कि हिंदी के खड़ी बोली के लोग अपनावे लागल. बाकिर घर में एकर प्रयोग स्पदहनं थ्तंदबं के रूप मोटीया भोजपुरी के रूप में चलत रहल।

इहो बात देखे लायक बा की मॉरिशस में क्रियोल के जबाबी भाषा भोजपुरी रहे बाकिर 20 वीं सदी में आर्य समाज के मारीशस में उदय से भोजपुरी के खासा नुकसान भईल. आर्य समाज खोली बोली के प्रचार करे लागल आ एह तरे उहाँ हिंदी के आगे बढ़ावे में मुहीम चलल आ एकर असर ई भईल कुछ लोग भोजपुरी के छोड़त चल गईल. हिंदी के विशेष सम्मान के भाषा मानल जाए लागल चूँकि एही लेखा हिंदी के प्रचार भइल बाकिर इहो सांच बात बा की भोजपुरी के माध्यम से लोग हिंदी बोले लिखे के उहाँ जान सकल. मॉरिशस के विद्वान एस भुच्कोय के मानल बा की उहाँ के सामाजिक संगठन, मंदिर के पुजारी, शिक्षक आ माता पिता सभे भोजपुरी के घर के भाषा आ हिंदी के शिक्षा के भाषा क्रियोल, फ्रेंच के साथे माने लागल।

हाल में मॉरिशस सरकार द्वारा भोजपुरी यूनियन के स्थापना से मॉरिशस में भोजपुरी के पुनर्स्थापना के उमेद जागा देले बा बाकिर आवे वाला समय आ भूमंडलीकरण के एह विकट दौर में भोजपुरी खातिर चुनौती कम नइखे भईल. गिरमिटीया गवर्नमेंट में आ गईल बाकिर भोजपुरी पिछुआ गईल।

www.bhojpurisahityangan.com



भारतीय डायस्पोरा : भाषाई गतिशीलता

डॉ. मुन्ना लाल गुप्ता - डॉ . राजीव रंजन

21वीं सदी के भारतीय डायस्पोरा पुरनका आ नयका डायस्पोरा के विकास के परिणाम ह ।भारतीय डायस्पोरा बहुते ही कठिन परिश्रम, लगन, सृजनशीलता, कठोर परिश्रम आ उद्यमशीलता के चलते समुद्रपारीय गंतव्य देशन में आपन विविधतापूर्ण सामाजिक सांस्कृतिक पहचान अउर भाषा के सुरक्षित रखले बा ।इ विविधता एकर प्रवासन के इतिहास, क्षेत्रीयता, भाषा, धर्म, आर्थिक आ शैक्षणिक पृष्ठभूमि के चलते बा ।भारतीय डायस्पोरा में भाषाई - गतिकी से जुड़ल स्वरुपन के समझे खाति भारत से लोग के समुद्रपारीय देसन में आवागमन के ऐतिहासिक चरण आ स्वरूपन में देखल जा सकत बा ।पहिला चरण, पूर्व औपनिवेशिक रहे जवन सैनिक अभियान, वाणिज्यिक बसाहट, आ धार्मिक प्रचारकन से जुड़ल रहे ।दुसरका चरण, वाणिज्यिक औद्योगिक पूंजीवाद, औपनिवेशिक पूँजी युग से संबंधित रहे, जहाँ यूरोपीय कालोनियन खाति सत्रहवीं सदी के आरंभ से निरंतर दासन, सिद्धदोष लोग, कंगनी-मिस्त्री मजदूर आ औपबंधिक मज़दूरन के छलपूर्वक, बलपूर्वक आ विवशतावश प्रस्थान जारी रहल, जवन उन्नीसवीं आ आरंभिक बीसवीं शताब्दी में संस्थागत अउर वैधानिक रूप प्राप्त कर आपन चरमोत्कर्ष प पहुँच गइल ।औपनिवेशिक काल के प्रवासन में समान सामाजिक-ऐतिहासिक परिवेश के चलते भारतीय डायस्पोरा में आपन पैतृक भाषा के अनुकूलन, परिवर्तन, संरक्षण आ ह्रास की लगभग समान प्रक्रिया से गुजरे के पड़ल ।तिसरका चरण उत्तर औपनिवेशिक रहे जहाँ अकुशल, अर्द्ध कुशल, कुशल आ उच्च कुशल प्रवासन विकासशील आ विकसित देसन खाति भइल ।

भारतीय डायस्पोरा के विकास अलग-अलग क्षेत्रन में सामाजिक अनुकूलन के चलते भारतीय डायस्पोरा समुदायन में भाषा के स्थिति भी विविधतापूर्ण बनल बा ।एह समुदायन में पूर्वज भाषा के बचा के रखल आ ओकर पूर्णतया विलुप्त हो गइल दूनो विपरीत ध्रुवीय स्थिति देखे के मिलत बा ।कुछ परिस्थितियन में जीवन के अलग-अलग पक्षन में इनकर अस्तित्व बनल-बचल बा ।श्रीलंका में तमिल इस्टेट, इंग्लैंड में पंजाबी सिक्ख आ संयुक्त राज्य अमेरिका में गुजराती हिंदू आपन पूर्वजन के भाषा के अपनवले बाड़ें ।ठीक एकरा विपरीत जमैका के भारतीय आपन मूल भाषा के बिसार देले बाड़ें ।मॉरीशस, फ़िजी आ सूरीनाम में भारतीय भाषा आपन अस्तित्व आज भी बनाए रखले बिया ।एह जगहन प बतौर बोली भोजपुरी जिनगी के अनौपचारिक क्षेत्रन में आज भी प्रचलित बा, बाकि धार्मिक आ सांस्कृतिक गतिविधियन में हिंदी भाषा प्रचलन में बा ।फ़िजी आ मॉरीशस में मानक हिंदी के सरकारी तौर प महत्व प्रदान कइल गइल बा ।गयाना आ त्रिनीदाद में भोजपुरी लोकगीत के माध्यम बिया, जबकि हिंदी जीवन के अन्य क्षेत्र में प्रचलित बिया ।एह सभ देसन में स्थानीय रूप से प्रचलित बोल-चाल (Lingua Franca) के

अलग भाषा भी प्रभावी बिया, उदाहरण खाति श्रीलंका में सिंहली, मॉरीशस में फ्रेंच आ अंग्रेज़ी, क्रिओल, फ़िजी में फ़िजी भाषा, सूरीनाम में डच क्रिओल अउर गयाना आ त्रिनिदाद में क्रिओल अंग्रेज़ी प्रचलन में बिया।

भारतीय डायस्पोरा में विद्यमान भाषाई गतिशील प्रक्रिया के समझे खाति एह प्रवासी समुदायन के क्षेत्रगत सामाजिक-भाषिक बनावट आ विविधता के जानल जरूरी बा ।औपनिवेशिक अनुबंधित मज़दूर अउर अन्य प्रवासी समूह द्वारा बोलल जाये वाली बोली आ भाषा के विविधता के राजेंद मेस्त्री (2007) निम्नानुसार प्रस्तुत कइले बानी:-

i. प्रथम प्रवासन मॉरीशस आ ब्रिटिश गयाना खाति छोटानागपुर (झारखंड), बंगाल, बिहार के आदिवासी क्षेत्रन से भइल रहे ।एह क्षेत्र के लोगन के धांगर/ हिल कुली के नाम से जानल जात रहे ।ई लोग ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा (संथाली, मुंडा आ हो) बोल रहलें । मारीशस में आजुओ - उपनाम / कुलनाम (सरनेम) बा दोगूर आ दिगूर, जवन धांगर के अपभ्रंश ह|

ii. मद्रास बंदरगाह के माध्यम से दक्षिण भारत के तमिल आ तेलुगु भाषी प्रवासियन के खूब प्रवासन भइल ।मलयालम आ कन्नड़ भाषियन के संख्या लगभग सीमित रहे ।भारतीय डायस्पोरा में तमिल आ तेलुगु भाषा के भी पर्याप्त प्रतिनिधित्व बा।

iii. कलकत्ता बंदरगाह से उत्तर भारतीय इंडो-आर्यन भाषा (भोजपुरी, अवधी, मगही, कन्नौजी, राजस्थानी, ब्रज आ उड़िया) बोले वाला लोग के प्रवासन भइल।

iv. पश्चिमी आ मध्य भारत से बंबई बंदरगाह के माध्यम से आज के महाराष्ट्र प्रांत के मराठी आ कोंकणी भाषी लोग के खास तौर प मॉरीशस खाति प्रवासन भइल।

v. प्रवासियन के कुछ भाग उर्दू बोले वाला मुसलमान लोग के भी रहे।

vi. एह औपबंधिक गिरमिटिया श्रमिकन के साथे गुजराती, बंगाली, आ पंजाबी बोले वाला कुछ भारतीय व्यापारियन के प्रवेश एह औपनिवेशिक बागान में भइल।

गंतव्य देश में भारतीय प्रवासियन के स्थिति अलग रहे ।औपनिवेशिक कालीन अधिकांश प्रवासी भारतीय पढ़ल-लिखल ना रहलें ।उ ना त गंतव्य बागान के भाषा जानत रहलें आ नाही ऊ औपनिवेशिक भाषा (अंग्रेज़ी, डच आ फ्रेंच) जानत रहलें ।इहाँ तक की अलग अलग भारतीय समुदाय आपस में वार्तालाप करे के स्थिति में भी ना रहे, काहेंकि उत्तर भारतीय इंडो-आर्यन भाषी रहलें जबकि दक्षिण भारतीय द्रविड़ भाषी रहलें ।कुल मिला के विदेशी परिस्थिति मिश्रित भाषा (कोईन/Koine पिज़ीन/Pidgin) के पृष्ठभूमि बनावत रहे ।बतौर बानगी फ़िजी में औपनिवेशिक कालीन अंतर-नृजातीय संपर्क के चलते दूगो पिज़ीन भाषा का विकास भइल ।एह में से एगो फ़ीजियन भाषा से बनल रहे आ प्रवासी भारतीयन के आवे से पहिले से मौजूद रहे, बाकि दुसरकी के विकास भारतीय लोग के चहुंपला के बाद हिंदी के आधार प निर्मित बनल ।ऐहि तरे नताल (दक्षिण अफ्रीका) में भारतीय लोग के आगमन से पहिले देशज *ज़ुलु आ झोसा बोलियन अउर यूरोपीय भसवन के आधार प निर्मित 'फनाकालो' पिज़ीन भारत के उत्तर आ दक्षिण भाषियन के बीच संवाद के माध्यम बनल ।एही तरे दोसर क्षेत्रन में भी प्रवासी भारतीय समुदाय द्वारा पहिले से अस्तित्ववान स्थानीय संप्रेषण के भाषा के द्वितीय भाषा के रूप में अपनावल गइल ।बतौर बानगी जमैका, गयाना, त्रिनिदाद में क्रिओल इंग्लिश आ मॉरीशस, रीयूनियन, सेशेल्स में क्रिओल फ्रेंच, सूरीनाम में टोंगो-स्रनन और सिंगापुर आ मलाया में मलय आदि।*

कोईन बनाबट / कोईनाइजेशन = (बोलियन के समतलीकरण)



डा. मुन्ना लाल गुप्ता

मूलत: नालंदा जिला के रहे वाला डॉ. मुन्ना लाल गुप्ता जी महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा) के डायस्पोरा अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर बानी। गैरभोजपुरिया होखे के बावजूद भी भोजपुरी खाति इहाँ के समर्पण सराहे योग्य बा। इहाँ के 'भारतीय डायस्पोरा आ गाँधी', 'भारतीय डायस्पोरा में जाति आ वर्ग', 'भारतीय डायस्पोरा में भाषाई गतिशिलता' जइसन विषयन पऽ जबरजस्त पकड़ बा। अतने ना साहित्य के प्रति भी इहाँ के नेह बा। अपने के कई कविता के राष्ट्रीय स्तर पऽ सराहना आ पुरूस्कार दूनो मिलल बा। देश-विदेश के शोध पत्रिकन में अपने के शोधपत्र आ आलेख लगातार छपत रहेला।

बहुत सारी बोलियन के बीच बोल-चाल खाति कईगो भाषा के बोलियन के समतलीकरण से नई बोली (बोल-चाल- lingua franca) के विकास के कोइन निर्माण आ कोईनाइजेशन कहाला।

उदाहरण – नइकी भोजपुरी जवन त्रिनिदाड भोजपुरी आ प्लाटेंशन हिंदुस्तानी के जन्म, नटाल में नएका कोईन के कलकत्तिया बात (नटाली हिंदी), गुयाना में पुरनिया हिंदी कहल जाला|

कोईन निर्माण के कुछ उदाहरण-

मारीशस, गयाना, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका आ सुरीनाम में ..

क्रिया+ला+सहायक क्रिया = हम देखिला।

फिजी में..

क्रिया+ता+सहायक क्रिया = हम देखता है।

मारिशस, गयाना, ट्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका अउर सूरीनाम में....

भविष्यत काल आ प्रथम पुरूष-

क्रिया+ब= हम देखब (मैं देखूंगा)

जबकि फिजी में, भविष्यत काल...

क्रिया+एगा= हम देखेगा (मैं देखूंगा)
तृतीय पुरूष आ भूत काल खाति
मारिशस में -ऊ देखलस
ट्रिनिडाड में- ऊ देखल
गयाना में -ऊ देखले
सुरीनाम में- ऊ देखिस (सरनामी हिंदी)
फिजी हिंदी में- ऊ देखऊ / देखिस

पिजिन/Pigin (बोलियों का मिश्रण) - जब कवनो दू भाषा समुदाय के सदस्य संपर्क में आवेलन त भाषा अलग-अलग होखे के चलते उनका बीच संप्रेषण टूटे लगेला, फिर ऊ एगो तीसर अइसन मिश्रित भाषा के जन्म देवे खाति बाध्य होखेलें जवन मानक रूपन से भिन्न होखेले ।एह संदर्भ में, कार्य-व्यापार के संपादित करे खाति जवन तीसर मिश्रित भाषा के जन्म दिहल जाला, उहे पिजिन भाषा कहाले।

पिजिन शब्द Business का पिजिनीकृत रूप ह

Business = bijnes = pigin

ई भाषा मानक भाषा के भांति कवनो समुदाय के मातृभाषा ना होखे अउर ना ही एकरा में कवानो तरह के मानकीकरण के प्रक्रिया होखेला।

उदाहरण- नटाल में, अंतर-नृजातीय संपर्क के चलते 'फनाकालो' पिजिन के जन्म- यूरोपीय आ जनजातीय जुलु अउर झोसा बोले वालन के नृजातीय संपर्क के चलते 'फनाकालो' पिजिन के जन्म भइल।

क्रियोल आ क्रियोलीकरण - (पिजिन बोली के मानकीकरण)

क्रिओल, क्रिआर (बनल, उत्पन्न होखल) आ स्पेनिश शब्द कोलोन(कोलोनी के मूल वासी) से मिलकर बनल बा| (आर.के.जैन, 2004) क्रिओलीकरण के उदहारण - अफ्रीकन आ यूरोपीयन से मिल के जवन वंशज बनल ओकरा के क्रिओल नाम से जानल जाला ।कैरेबियन देसन में एह प्रक्रिया के चलते क्रिओल ब्रिटिश कैरेबियन कहलइलें ।भाषा के क्षेत्र में, क्रिओलीकरण के उदाहरण, मारीशस के मूल लोगन के भाषा + फ्रेंच = क्रिओर अंग्रेजी के भाषा। एकरा में फ्रेंच भाषा के शब्द बहुतायत मिलेला|

जब एगो पीढ़ी पिजिन बोली के प्रथम भाषा के रूप में सीखेले आ एकरा के मातृभाषा के रूप में स्वीकार लेले त एह भाषा के व्यवहार क्षेत्र के अउर व्यापक बनावे के काम भी स्वभाविक रूप से होखे लागेला ।अइसन स्थिति में पिजिन बोली के क्रियोल कहल जाला माने ई पिजिन के क्रियोलीकरण हो जाला ।क्रियोल के पिजिन भाषा के मानकीकृत रूप भी कहल जा सकत बा|

वास्तव में क्रियोलीकरण के प्रक्रिया पिजिन भाषा उत्पन्न होखे के ठीक विपरित बा| पिजिन में भाषा के व्यवहार सीमित होखेला ।बाकि क्रियोल में भाषा व्यवहार के मानकीकृत करके विस्तार देवे खाति कोशिश होखेला ।जहां पिजिन भाषा के शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग संभव नइखे उहें क्रिओल के एगो मातृभाषा भाषी समुदाय होखेला जवन एह भाषा में औपचारिक शिक्षण-प्रशिक्षण के आवश्यकता के महसूस करेला ।

ओ. बी.एच. (समुद्रपारीय भोजपुरी हिंदी) - औपनिवेशिक काल में उत्तर भारतीय लोगन के अंतरराष्ट्रीय प्रवासन फिजी, मारीशस, गुयाना, सूरीनाम जइसन देश खाति भइल ।उत्तर भारतीय लोगन में कई भाषा-बोली के लोग जइसे - भोजपुरी, अवधी, मगही, कनौजी, उड़िया, संताली, मुंडा, हो आदि रहलें ।बाकि एह में भोजपुरी भाषा के लोग के संख्या कूल्ही उपनिवेशन में ज्यादा रहे ।एही चलते समुद्रपारीय भारतीय समुदाय में अलग-अलग देसन में भोजपुरी से प्रभावित हिंदी भारतीय लोगन के बोल-चाल (लिंगुआ फ्रैंका) के भाषा बनल जवना के 'समुद्रापारीय भोजपुरी हिंदी' के नाम से जानल जाला।

ओबीएच के उदाहरण आ कोइन के उदाहरण समान बा जइसे- सरनामी, फिजी हिंदी, कलकतिया बात, नतानी हिदी , पुरनिया हिंदी (गुयाना), त्रिनिदाद भोजपुरी इत्यादी।

मारीशस की भोजपुरी भाषा का नमूना:

"बहुत दिन पहिले क बात ह एगो अदिमी का सात गो बेटा आ एगो बेटी रहे सातो भाई सयान रहलन स वियाह हो चकल रहे ।बहिन क सादी अबहीं ना भइल रहे ।ऊ सातो भाइन क आखिं क पुतरी रहे ।बाकि सातों भउजाई एक दुलरुई ननद से जरलु स।

बाप क मुअला का बाद सातो भाई कार बार अपना हाथ में ले लिहलन। बाप क संबंध में सातो भाईन के परदेस जाये के परल..... ।"

('सात भाइन क बहिन' मारीशस भोजपुरी, अंक 9, फरवरी 1973)

फिजी हिंदी- फिजी के स्थानीय भाषा (काईबिती) अउर हिंदी भाषा क्षेत्र के भाषा यथा अवधी, मगही, ब्रज, भोजपुरी के प्रभाव से नव विकसित हिंदी के रूप के फीजी के भारतवंशी फिजी बात आ फीजी हिंदी के संज्ञा दीहलें ।आज फीजी में कई हिंदी लेखकन के फीजी हिंदी में साहित्यिक रचना निरंतर प्रकाशित हो रहल बिया ।प्रो. सुब्रमनी (डउका पुरान), प्रो. रेमण्ड पिल्लई(अधूरे सपने), प्रो. ब्रिज विलास लाल, श्री महेन्द्र चन्द्र शर्मा 'विनोद' आ बाबूराम शर्मा फीजी हिंदी के साहित्यिक गौरव प्रदान कइलें बानी।

फिजी हिंदी भाषा का नमूना :

"का करिहो संझाक? फ़ीजीलाल भोजन पानी कर लेई तू घुमाय देना खेतन मा ।धुरूप जुटा है जमीन कोड़ियायम ।तू देख लेना ।छोटा है, केतना करी अकेल ।आज नाही तो बिहान, देखना कइसे है ।टेम रहिते-उदित नरायन कै इस्टेट घुमाय देना ।दूरेस देखाय देना नाही तो कुत्ता आफत करिहें ।पाल रखे है दुई तीन जबर कटहा कुत्ता ।एक कै नाम धरिस है कालीचरन ।वही कालीचरनवा सबन से बदमास ।सके अदमिन कै जिंदे नोच लेवै ।कुत्ता ना होत तो सूरज मिलाय देत ऊनास ।ऊना है तो कइबीती लेकिन चाल चलन, रहन सहन एकदम हिंदुस्तानी ।अब हिंदुस्तानीक संगे रहे, काहे न रहन सहन बदली ।बड़ी अच्छी है लेकिन ।अब हम जब जाइत उधर, बड़ा कायदास बातचीत करी ।पहिले वालिस तो ऊना बहुत अच्छील है ।पहिले वाली, बो ! एक नंबर कै घुरमुसही ।बइठना संझाक पूरा खिस्सा बताइब ।चलो, फ़ीजीलाल, तू खाना खाव ।सूरज, जायक देखो कामिनीक का बात है।" (सुब्रमनी, 2001, डउका पुरान)

"हम पोर्ट लुइस शहर गइल रहनी ।वांह परी हम आने कोविलेन जो औरी एगो मद्राजीन औरी एगो खाला संगे रहलन स ।हम सब एगो रेस्टोरां में गैनी स औरी आपलों और सालायों खैनी औरी पीनी स ।घर आवट बखत, रों पोएं से आगे हमनी के लोटो के ला रू में एगो कुलु गर गय्ल ।बीफे के हमनी आका

डा. राजीव रंजन



महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के डायस्पोरा अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. राजीव रंजन राय जी मूलत जिला मऊ (उत्तर प्रदेश) के रहे वाला हईं। उत्तर प्रदेश प्रशासनिक सेवा में वरिष्ठ अधिकारी के पद से इस्तीफा दे के अपने अध्ययन -अध्यापन के क्षेत्र से नाता जोड़ लिहले बानी। 'मानवविज्ञान', 'समाजशास्त्र', 'संस्कृति विमर्श' जइसन गंभीर विषयन पऽ अपने के विशेष पकड़ बा। 'भारतीय डायस्पोरा के विविध आयाम' जइसन चर्चित पुस्तक के अपने सहलेखक बानी। रउआ मार्गदर्शन में पूर्वी उत्तर प्रदेश आ बिहार से खाड़ी देश में होखे वाला प्रवासन आ ओकर सामाजिक आर्थिक प्रभाव पऽ कई महत्त्वपूर्ण शोधकार्य हो रहल बा। देश विदेश के प्रतिष्ठित रिसर्च जर्नल में राउर कई गो शोध पत्र आ आलेख प्रकाशित भइल बा। अतने ना अपने के भारतीय डायस्पोरा के गिनल-चुनल विशेषज्ञन में भी शामिल बानी।

आमय के विंदु में गैनी औरी गोपाल के घरे से हमनी खातिर डोकला औरी मोदक भेजल गइल ।वाह कैसन मज़ेदार खायाके के रहल ।मॉरीशस त महान ह ।उ त स्वरग जयसन बा ।"

कलकतिया बात (नैताली हिंदी) - दक्षिण अफ्रीका के स्थानीय भाषा आ भारतीय भाषा के विभिन्न रूपन के सम्मिश्रण से जवन हिंदी भाषा के रूप उभरल, ओकरा के नाताली हिंदी आ कलकतिया बात कहल जाला ।दक्षिण अफ्रीका में बसल भारतीय मूल के लोगन के बीच बोलल जाए वाली हिंदी के विशिष्ट भाषिक शैली के नैताली नाम से संबोधित कइल जाला ।दक्षिण अफ्रीका चार प्रांतों में बँटल बा - नताल, केप, आरेंज फ्री स्टेट आ ट्रांसवाल ।दक्षिण अफ्रीका के महानगर डरबन में भारतीय मूल के निवासी सबसे अधिक बाड़ें ।इहाँ बोली जाये वाली हिंदी जवन भोजपुरी हिंदी के एगो विशिष्ट रूप ह, भारतीयन के बीच बोलल जाले ओह के नैताल में बोलल जाए के चलते नैताली कहल जाला ।

आज दक्षिण अफ्रीका में नैताली बोले वाला भारतीय मूल के लोग अधिक नइखन । एही चलते नैताली में साहित्य लेखन बहुत कम हो रहल बा । उहाँ के लोकगीतन में नैताली के रूप आज भी देखे के मिल जाला ।लोकगीतन के एगो विशिष्ट रूप जवना के 'चटनी' नाम से संबोधित कइल जाला, आजकल प्रतिष्ठित भारतीय समाज में बहुत लोकप्रिय हो चुकल बा ।विवाह के अवसर प आज एकर माँग बहुत बढ़ गइल बा काहेंकि पश्चिमी डिस्को के शैली में ढलल ई नैताली लोकगीत आधुनिक फैशन के प्रतीक बन गइल बा ।एह चटनी लोकगीतन में भारतीय समाज के सांस्कृतिक आ भाषिक मूल के ओर फिर से भारतीयन के आकर्षित कर रहल बा ।इ नैताली हिंदी ही ह जवन भारतीय लोगिन के उनका मूल भारत से आ उनकर कर्मक्षेत्र दक्षिण अफ्रीका से जोड़ले बा ।

नैताली हिंदी भाषा नमूना :

बागन का साहब - यू रास्कल, *टुम काम छोड़ डेना चाहटा है ।हम टुमारा बोटी बोटी काट डालेगा ।*

गिरमिटिया श्रमिक - नाहीं साहेब.... *हम काम छोड़ के कहां जाइब ? दुई चार दिनां का हमका छुटी देव ।*

पुरनिया हिंदी (गयाना में) - गयाना के स्थानीय भाषा आ भारतीय भाषा के विविध रूपन के मिश्रण से पुरनिया हिंदी के जनम भइल ।

सरमानी भाषा - सरनामी भाषा के विकास सूरीनाम के डच भाषा आ अनुबंध श्रमिक व्यवस्था के तहत गइल भोजपुरी आ अन्य भारतीय भाषा के बोले वालन के भाषा-बोली के मिश्रण से भइल ।सरनामी, सूरीनाम में रहे वाला अप्रवासी भारतीयन के संपर्क भाषा भी रहे| एकरा के सरनामी, सरनामी हिंदी, सरनामी हिंदुस्तानी भी कहल जाला| उच्चारण के दृष्टि से एकर शब्द अवधी बोली से मिलत जुलत बा बाकि एकरा प रोमन लिपि के प्रभाव भी साफ़ नज़र आवेला ।असल में एह के रोमन लिपि में लिखल जाला ।डॉ. जीत नारायण, सरनामी के प्रमुख लेखक बानी ।

सरनामी भाषा नमूना :

" इ बरीस दुनिया भर के नवजवानन के बरीस मानल गइल ह ।ओही के खातिर इ कहानी एक नवजवान लोंडा और एक नवजवान लड़की के बारे में बतावल जा है .....।

(पृष्ठ 15, सरनामी पत्रिका, अंक 1, 1986)

"त का करीं अब ओहीं कनतराक के काटै पाँच बरिस भैन ।फिर कागद पाएन, त बोले जाओ, तू हियाँ रहिहो तो खेत देइब ।आठ दुअन्नी रोज देइब ।बोले पाँच चवन्नी, डेढ़ रुपया रोज कमाइत हउ ।त किवड़वा से बतिया लगे पर एक खूब बढ़िया आदमी है..... ।

('पुरखन के याद में', पृष्ठ 42-43, सरनामी पत्रिका, अंक 1,1986)

त्रिनिदाड भोजपुरी और उसका संघर्षण - एन. जयराम (2004) त्रिनिदाद भोजपुरी आ मानक हिंदी के संघर्षण प अध्ययन कइले बानी| त्रिनिदाद में अनुबंध श्रमिक व्यवस्था के तहत श्रमिक, खेतिहर के पश्चिम बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश (सयुक्त प्रांत), दक्षिणी बिहार के छोटानागपुर पठार से हो, संताली, मुंडा, भोजपुरी, अवधी, मगही, मैथिली भाषा-भाषी लोगन के ले जाइल गइल रहे| बाद के दिनन में बंगाली, नेपाली आ दक्षिण भाषी लोगन के (यथा तमिल, तेलगु, मलयालम) के ले जाईल गइल ।खेती के दौरान आपसी बात-व्यवहार (लिंगुआ फ्रैंका) खाति भारतीय अनुबंध श्रमिक भाषाई गतिशीलता (कोईन निर्माण प्रक्रिया आ भाषाई समतलीकरण) के साथ एगो नई भाषा के विकास कइले जवना

में भोजपुरी भाषा के प्रधानता रहे, एह नया मिश्रित भाषा के ही त्रिनिदाद भोजपुरी कहल गइल ।एह भाषा के इतिहासकार लोग, औपनिवेशिक शासकन द्वारा 'प्लान्टेशन हिंदुस्तानी' भी कहल गइल।

त्रिनिदाद में प्रवासित भारतीयन के द्वारा आपसी बात-व्यवहार (लिगुआ फ्रैंच) खाति कोईन निर्माण प्रक्रिया आ भाषाई समतलीकरण के चलते स्वत:स्फूत रूप में जवन त्रिनिदाद भोजपुरी के जन्म भइल रहे ऊ अब संघर्षण के शिकार बिया ।एह संघर्ष के कारण के की पड़ताल से कईगो कारण नजर आवत बा, जवना में प्रमुख बा:-

1.शुरूआत से ही औपनिवेशिक सत्ता द्वारा त्रिनिदाद भोजपुरी भाषा के छोड़ के त्रिनिदाद क्रियोल अंग्रेजी अपनावे खाति भारतीय समुदाय प दबाव|

2.चूँकि भाषा के संबंध संस्कृति से ह ।भाषा संस्कृति के वाहक होखेले ।जवन भारतीय गइल रहलें, उनका प तरह-तरह से भारतीय संस्कृति, भारतीयता के छोड़ के दोसर अन्य औपनिवेशिक संस्कृति के अपना लेवे खाति दबाव डालल जात रहे|

3.औपनिवेशिक शासकन के प्रभावी मानसिकता के चलते त्रिनिदाद भोजपुरी के बोले वाला के निम्न जाति, गांव-गंवार आउर चमार हिंदी जइसन-शब्दन से संबोधित कइल जात रहे|

4.शिक्षा आ 'रोजी-रोटी' खाति एह भाषा के उपयोगी ना होखे के चलते भारतीय परिवार भी आपन आवे वाली पीढ़ियन के जिनगी के सुरक्षा खाति आपन बचवन के त्रिनिदाद भोजपुरी के सिखावे से पहिले त्रिनिदाद क्रियोल अंग्रेजी के सिखावल पसंद क रहल बाड़ें ।इहे कारण बा कि ई भाषा संघर्षण के शिकार होके दम तोड़ रहल बिया।

त्रिनिदाद में मानक हिंदी के संघर्ष - त्रिनिदाद में 'कनैडियन प्रेस वाईटेरियन मिशन' द्वारा भारतीय श्रमिकन के मानक हिंदी सिखावे के कार्य प्रारंभ भइल ।शुरू में त ई भारतीय समाज के बीच काफी फलल-फूलल बाकि आज एह भाषा के भी संघर्षण हो रहल बा ।एह भाषा के त्रिनिदाद संघर्षण के भी कुछ प्रमुख कारण बा, जो निम्न हो सकत बा।

1.भारतीय 'मानक हिंदी' भाषा के मिशन द्वारा सिखावाल जाए के चलते एकरा के क्रिश्चियन मिशन के धर्मान्तरण की क्रिया (भारतीय को क्रिश्चन) के साथ जोड़ल जला ।एह चलते औपनिवेशिक समय में प्रवासित भारतीय 'मानक हिंदी' भाषा के प्रति भयभीत रहलें।

2.औपनिवेशिक सत्ता द्वारा 'मानक हिंदी' के जगहा प्राथमिक शिक्षा खाति त्रिनिदाद क्रियोल अंग्रेजी आ उच्च शिक्षा अउर नौकरी व्यवसाय खाति अंग्रेजी के आवश्यक बनावल गइल बा ।एकरा से भी त्रिनिदाद में मानक हिंदी के संघर्षण भइल।

संदर्भ

1. *जयराम, एन. (2004), द डायनॉमिक्स ऑफ़ लैंग्वेज इन इंडियन डायस्पोरा : द केस ऑफ़ भोजपुरी / हिंदी इन त्रिनिदाद, डायनॉमिक्स ऑफ ऑफ़ लैंग्वेज इन इंडियन डायस्पोरा, जयराम, एन. (सं.) द इंडियन डायस्पोरा: डायनॉमिक्स ऑफ माइग्रेशन, सेज, नई दिल्ली।*

2. *जैन, रविन्द्र के.(2004), रेस रिलेशन, ईथनिसिटी, क्लास एंड कल्चर : अ कम्पेरेटिव ऑफ़ इंडियन्स इन त्रिनिदाद एंड मलेशिया, जयराम, एन. (सं.) द इंडियन डायस्पोरा: डायनॉमिक्स ऑफ माइग्रेशन, सेज, नई दिल्ली।*

3. *मेस्त्री, राजेंद (2007), लाइफ इन द डायस्पोरा, लाल बी.वी., रीव्स पी., और राय आर. (संपा.), द एनसॉयक्लोपीडिया ऑफ द इंडियन डायस्पोरा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।*

4. *ईसेन्होलर, पैट्रिक (2004), रजिस्टर लेवल ऑफ़ एथनो-नेशनल प्यूरिटी ; द एथानिजेशनऑफ़ लैंग्वेज एंड कम्युनिटी इन मॉरिशस, वॉल्यूम 33, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस , नई दिल्ली।*

5. *हूकूमसिंग, विनेश य, (2011), इंडिया – इन – डायस्पोरा : अ मॉरिशियन पर्सपेक्टिव , जयराम एन. (संपा.) डायवर्सिटीज इन द इंडियन डायस्पोरा, ऑक्सफ़ोर्ड , नई दिल्ली*

6. *चंद्रशेखर भट्ट एंड टी. एल. एस. भास्कर , 2011, लोकेलिटी एंड आइडेंटिटी इन द इंडियन डायस्पोरा : लिंगविस्टिक डायवर्सिटीज इन मॉरिशस, जयराम एन. (संपा.) डायवर्सिटीज इन द इंडियन डायस्पोरा, ऑक्सफ़ोर्ड , नई दिल्ली राय, राजीव रंजन (2014), भारत से दूर लघु भारत, जोशी राम शरण, राय, राजीव रंजन, चंद्रयान प्रकाश, खत्री प्रशांत, भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।*

7. *रस्तोगी, कविता, (2012), समसामयिक अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान अविराम प्रकाशन, दिल्ली ।*

8. *नारंग,वैश्ना, (2006), **समसामयिक** भाषा विज्ञान, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली।*

नवका च्चा

आज बाबूजी गीता के स्कूल से छुट्टी करा के गांवे ले जाए के तैयारी में जुट गईलन । पुछला पर कि- 'काहें बाबूजी, हमनिका काहें गावें जा तानी जा ?"

बाबूजी उनकर गोल-मोल जवाब दे देहलन।

गाँव के नाम से गीता के खुसी ओराते ना रहे। उहाँ ओकर असोक च्चा और चाची जे रहत रहे लोग। 7 साल बियाह के भईल बाकी अभी ले कवनो संतान ना रहे एसे गीता ओ लोग के दुलरुई रहली। असोक च्चा सांझे कान्हा प बईठा के बान्हा लिया जास पटउरा खियावे। बाकी कुछ देर बाद गीता उदास हो गईली ओके माई के इयाद आवे लागल परियार साल अंतिम बार माई के गाँव के अंगना में लेटावल देखले रहे।

ओकरा बाद पुछला प कि, "माई कहाँ गईल ?" सभे कहे "माई भगवान जी का लगे चल गईली अब न अइहें कब्बो ..."

ओकरा बाद उ बाबूजी के संगे कलकत्ता आ गईल पढाई लिखाई करे खातिर।

ए बार गांवे जाये के प्रयोजन ओके ना बुझाईल। गावें चहुपला पs ... दुआर-अंगना के चहल-पहल देख के गितवा के रहाईस ना भइल | चाची से अपना पूछ लिहली " ए चाची , आज कुछ बा का ? चाची अंकवारी में धर के पुचकारे लगली और कहली - "बनी, खुस हो जा तोहार नवकि माई आवSतारी।"

का ? नवकि माई माने ? गितवा चिहुंक के पुछलस ?

"हं बनी ! बाबूजी के बियाह होता, तोहार माई त तोहके छोडके भगवान् जी के लगे चल गइल नूं। अब तोहार देख भाल करे खातिर नवकि माई अवSतारी। तोहके खूब प्यार करिहें"

गीता जब से होस समहरली तब से आपन माई के खटिया पर ही देखली, टीबी के बेमारी के वजह से ओके माई के नेह छोह-दुलार से दूर राखल गईल। अब गीता के नवकि माई के देखे खातिर जीव छपुटाय लागल। कुल सगुन अउर रसम भईला के बाद बारात बिदा भईल दोसरका दिने भिनुसहरे कनिया दुआरे आ गईल ।

नाऊँन से पहिले गितवा के अगुताई रहल नवकि माई के लगे पहुचे के। कोहबर में पहुंचला प जब गोद भरे के समय आईल त आजी गोहरउली - 'अरे हाली से टरकसन आली के बचवा ले आवा सन गोद भराव "

अब गीता से कहाँ रहाईस होईत झटे नवकि माई के कोरा जा के बईठ गईली, सब केहू त हंस दिहल बाकी आजी के खीस बरल देखत बनत रहे । खिसिया के कहली -

"एके हाल्दे हटावा सन ना त दुल्हिन के फेर बिटीहिने होई"

गीता के चाची नवकि के कोरा से उठा के अपना कोरा में बईठा लेहली। गीता के कुछु बुझाईल ना , बाकी निक ना लागल। नया कनिया के नाम नवकि धरा गईल कुछ दिन बितला के बाद गीता नवकि माई बाबूजी के संगे कलकत्ता आ गईल। नवकि गीता के ख्याल दुलार में कवनो कसर ना रखली। गीता भी अपना नवकि माई के पा के बहुत खुश रहली। अभी छवे-छमास बीतल की फेर गांवे जाए के तैयारी



सरोज सिंह

बलिया , युपी के रहे वाली सरोज सिंह जी , हिन्दी भोजपुरी आ बंगला साहित्य मे उभरत एगो बरिआर नाव बानी। हाले मे इँहा के लिखल हिन्दी काव्यसंग्रह " तुम तो आकाश हो " आईल ह। भोजपुरी मे सैकड़न गीत गजल कविता कहानी के रचना कई चुकल बानी। पाक कला मे दक्ष सरोज जी एह घरी गाजियाबाद मे बानी।

होए लागल ए बेर बाबूजी के और माई के रोवत देख के गीता से रहल न गइल और नवकि से पुछ लिहली "नवकि माई काहें रोवSतारू बाबूजी भी रोवत रहले हाँ ?

नवकि अंचरा से लोर पोछ्त कहे लगली - "बुच्ची, तोहार असोक च्चा अब नईखन भगवान जी का लगे चल गईलन"

गाँव के दू गुट के झगड़ा,मार पीट सलटावे में एगो लाठी कपार प अईसन लागल कि जवन जमीनी पर गिरले के फेर उठ ना पईले "।

गीता त जइसे सुन्न हो गईली। गांवे चहुँपला पर हर ओरी मातम रहे। जवन आजी अभी एकदम टांठ रहली एकदम बेमरिया नियर हो गईली अउर चाची के दसा देख के गीता के एकदम नीक ना लागल सफ़ेद साड़ी में लपेटाईल देह न कवनो साज ना सिंगार। जवन की हमेसा सजल संवरल रहत रहली। गीता आखिर चाची से पुछ लिहली - "ए चाची तू काहें सफ़ेद साड़ी पहिरेलु, टिकुली केतना नीक लगेला उहो ना लगावेलु काहें ?"

एह प चाची उदास हो के कहे लगली - "केकरा खातिर साज सिंगार करी बनी , तोहार चाचा त चल गइले "उनके खातिर नु कुल साज सिंगार रहल हा "

गीता के अब कुछ-कुछ बुझाये लागल। कसहूँ तेरही बीतल।

कुछ दिन बाद गीता आ माई बाबूजी के कलकत्ता जाए के तैयारी होए लागल । जात समय गीता अपना बाबूजी से कहे लगली "बाबूजी, फेर त हमनी के आवे के होई जल्दिये ? "

काहें ? बाबूजी पुछलन

"नवका च्चा" के ले आवे खातिर " गीता कहली।

"नवका च्चा ... !!! माने ? बाबूजी हैरानी से पुछलन।

माने माई के मुअला के बाद नवकि माई अईली , ओही तरे असोक च्चा के गईला के बाद नवका चाचा न अइहें का? देखS त चाची केतना उदास बाड़ी रंगीन साड़ी भी नइखी पहिर सकत "।

गीता के बात पूरा होईत ओसे पहिलही बाबूजी जोर के झापड़ गीतवा के गाल पर मरलन । आजी , चाची, नवकि, सब केहू सकपका गईल ई का भईल ?

एसे पहिले गीता के बाबूजी कब्बो न मरले रहलन। गीता के समझ ना आईल की अइसन कवन गलती खातिर ई झापड़ बाबूजी मरले। दहसत के मारे आज ले ना पूछ पईलस कि उ का गलत कह देले रहल। ई बात के कई साल बीत चुकल बा बाकी गीता के आज ले आपन गलती ना बुझाईल।

अब चाची के सफ़ेद साड़ी में देखे के आदत हो गईल बा।



फोटो साभार : शशि रंजन मिश्र

www.bhojpurisahityangan.com

संवेदना के जोत जगावेवाला
चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी

प्रमोद कुमार तिवारी

बिहार के भोजपुर जिला के नोनार गांव में 2 जनवरी 1941 के जनमल चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी लगभग हर विधा में खूब कलम चलवले बानीं । उहां के कविता, उपन्यास, कहानी, एकांकी, नाटक, निबंध, बाल-साहित्य, गजल सब लिखले आ संजोए जोग लिखले बानीं । एह सब प उनुकर मुकम्मल किताबो बाड़ी स, हाल के दिनन में उहां के गोपी विरह प केंद्रित पद के रचना में लागल रहनी ह आ प्रचुर मात्रा में पद लिखले बानीं, उमेद बा जल्दिए ओहू के एगो संग्रह हमनी के सोझा होई । भोजपुरी के एगो पुरान कहावत ह कि 'आदमी चाम से ना काम से पहचानल जाला' आ एह बात के पूरा भोजपुरिया समाज मानी कि उहां के हाड़तोड़ काम कइनीं, कृषि विभाग के नौकरी आ घर-परिवार के भरपूर जिम्मेदारी के साथे-साथे भोजपुरी साहित्य के बढंती खातिर कुछुओ उठा ना रखनी । सबसे बड़ बात कि कन्हैया प्रसाद जी आत्ममुग्ध लेखक ना रहीं, उहां के हमेशा भोजपुरी भाषा आ साहित्य के बारे में सोचत रहीं आ एगो संस्था जइसन काम करत रहीं । अक्सरहां लोग सेवा वाला काम खातिर अकादेमी आ सरकार के सहयोग खोजत रहेला बाकिर उहां के 'भोजपुरी संदर्भ ग्रंथ', 'भोजपुरी इनसाइक्लोपीडिया' जइसन बड़हन काम में अपना दम प हाथ लगवनी । तीन खंड में प्रकाशित 'भोजपुरी साहित्य दर्पण' जइसन काम आसान ना होला बाकिर कन्हैया प्रसाद जी के समर्पण से ऊ पूरा भइल । इहां के आपन साहित्यिक नाम 'आरोही' रखले रहीं आ आरोहण इनका स्वभाव में रहे । बाकिर व्यक्तिगत आरोहण ना भोजपुरी साहित्य आ समाज के आरोहण खास तौर से दलित, दमित आ उपेक्षित समाज के ले के इनकर नजरिया एकदम साफ रहे । इहां के बहुत बढ़िया से जानत रहीं कि मुक्ति अकेला के ना मिलेला, जब तक समाज परेशान रही एक आदमी के सफलता, सफलता ना अश्लीलता कहाई । 'मरकरी चारो तरफ दुधिया जरत, भूख के मारे अंधेरा छा रहल' जइसन शेर अइसहीं ना लिखाला ।



कन्हैया प्रसाद जी कई गो विधा में भरपूर मात्रा में लिखले बानीं बाकिर उहां के कहानियन के बात निराला बा । भोजपुरी कहानी के जइसन ऊंचाई आ जइसन तेवर इहां के देले बानी, ऊ कवनो भाषा के कहानी के सोझा भोजपुरी के सीना तान के खड़ा होखे के ताकत दे रहल बा । चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के एगो कहानी बिया, बड़प्पन । एह कहानी से उनुका सोच आ दृष्टि के पता चलेला । बड़, छोट, ऊंच-नीच के बंटवारा अक्सर धन के आधार प लोग करे ले बाकिर एकर असली पता त लोग के सोच आ व्यवहार से चलेला । बहुते महीन ढंग से एह बात के चौधरी कन्हैया जी एह कहानी में उठवले बानीं । पाप आ पुन्य के अक्सर बहुते सतही ढंग से देखल जाला । एह कहानी के नायक गनिया जब अपना घोड़ा से कहेला कि 'चल बेटा, हीरा रे, एक जान के सवाल बा । बहुत पुनि होई ।' त ई बात स्वर्ग - नरक दियावे वाला पाप पुनि के ना एह धरती के स्वर्ग भा नरक बनावेवाला पाप पुनि के ओर संकेत करत बहुते ऊंच बात कहेला । सफेद कॉलर वाला डॉक्टर साहब

www.bhojpurisahityangan.com

आ दू रोटी खातिर संघर्ष करेवाला गरीब इक्कावान गनिया के ई कहानी असल में पूरा भारत के तस्वीर खींचत बिया जवना में अरबपति लोगन के संख्या लगातार बढ़त जा रहल बा बाकिर ओही अनुपात में गरीबी आ किसानन के आत्महत्या बढ़त जा रहल बा। कन्हैया प्रसाद जी बहुत महीन संकेत से दूनों पात्रन के चित्र खिंचले बाड़े। गनिया भूखे रहे काहे कि ऊ रात के दू तीन गो हित लोग के भोजन करावे में सब दाल चाउर ओरवा देले रहे। दूसरा ओर डॉक्टर साहेब मुर्दा के सूई खोभे में संकोच ना कइले काहे कि उनुका बाबूजी के मुकदमा लड़े खातिर पइसा चाहीं। एगो कहता कि भावुक बनला से पइसा कहां से आई आ दूसरका के पइसा दिहल जा रहल बा, ऊ भूखे काम कर रहल बा तबो पइसा नइखे लेत काहें कि तमाम कोशिश के बादो मरीज के जान ना बचा पावे के अपराध बोध ओकरा के कचोट रहल बा। असल में ई एगो मरीज, डॉक्टर भा गनिया के कहानी ना ह, ई आदमियत के कहानी ह जवना से हमनी के रोज जूझ रहल बानीं जा।

प्रसिद्ध आलोचक डॉ. विवेकी राय अपना किताब 'भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान' में एह कहानी के 'लघुमानवोन्मेष' वाला प्रवृति के कहानी कहले बाड़े। असल में ई कहानी बहुते कम शब्द में आंखि के सोझा समाज के यथार्थ चित्र खिंचत बिया। जवना घरी ई कहानी लिखाइल होखी, हो सकेला ओह घरी अइसन चित्र कम रहल होई बाकिर आज के समय में अइसन चित्रन के संख्या लगातार बढ़त जा रहल बा। कन्हैया प्रसाद जी के सार्थकता एही बात में बा कि उनुकर लिखल हमनी खातिर दिन प्रतिदिन जरूरी होत जा रहल बा। एगो लेखक के इहे आकांक्षा होला कि ऊ भावी पीढ़ी के जादे संवेदनशील, जादे इंसान बनावे। भौतिकता आ अंधाधुंध सुख के दौड़ में अझुराइल हांफत नयका पीढ़ी के सोझा अमावस के अन्हार छइले बा अइसन समय में संवेदना के जोत जगावे वाला कन्हैया प्रसाद जी के साथ छोड़ल बहुते बड़ क्षति बा। बाकिर शरीर से भले उहां के नइखीं रचनारूप में हमनी के बीच बानीं आ भरपूर बानीं।

आखर आ समग्र भोजपुरिया परिवार के तरफ से एह महत्वपूर्ण रचनाकार के श्रद्धांजलि। उहाँ के लिखल कहानी बड़प्पन के "प्रमोद कुमार तिवारी" जी आखर के जरी पहुंचवले बानी।

बड़प्पन - चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी (कहानी)

गनिया टमटम उड़वले चलल जात रहे। टमटम ढकर-ढकर करत रहे। ओकर पाट...पुर्जा बुझात रहे कि अलग-अलग हो जाई। सड़कि उभड़...खाभड़ रहे। टमटम पर बइठल डाक्टर मने-मन अनसात्त रहन। डाटे के मन करत्त रहे, बाकिर चुप रह जात रहन। जानत रहन कि एकर पुरान आदत ह। कतहूँ रोगी देखे जाये के होखी, त्तब असहीं करेला। कुछ कहला पर कह लागी- 'डाक्टर बाबू रउरा बाहर के हईं। इहाँ के लोग के नइखीं जानत। तनी-मनी कुछ हो गइला पर लोग डाक्टर के पास ना जाए। अब-तब के घरी लाग गइला पर लोग डाक्टर के पास जाला। रवे कहीँ कि अइसन में देरी करे के चाहीं? परान छुटे में का कवनो समय लागेला?

आ घोडा कं चाल आउर तेज कर दी। जबाब देत ना बनी। भर रहता बकत रही। 'चल बेटा'! हीरा रे! एक जान के सवाल बा। बहुत पुनि होई। लोग के ओठे पर तोर नाँव रही। देख के। गड़हा बा। ऊँचा बा। जोर लगा के। बहुत दूध पियले बाड़। आज मलीदा खिआइब। खुदा हो! दया कर। रोगी के उमिर द। डाक्टर के हाथ में जस द। तू मालिक हव। तोहरे भरोसा बा। गाडी से बच के। चल सुग्गा। किनारे से। बच-बच के। हाय हाया! ई का? अबहिएँ से थकान! खनदान के दीया बुताय मत्त। हाय अल्लाह! रहम कर। नूर द। परवरदिगार हव। ससुरी हवा बढ़ही नइखे देत। कइसन गर्मी पड़ रहल बिया। लोग रहता से हटते नइखे। सुराज नू हो गइल बा।

जब गनिया घोडा के मनावेला त्तब डाक्टर के बुझांला कि ऊ उनकरे मनावन करत्त होखे। सुरू-सुरू में उनका ओकर बड़बडाइल खराब लागत रहे। अब ऊ ओह पर धेयान ना देस। कबो-कवो ऊ अइसन बात बोलेला कि डाक्टर के हँसी हवा में पँवरे लागेले।

गनिया स्वभाव के खरा ह। केहू के चुगली करे के हाल ना जाने। डाक्टर ओकरा के अउर टमटम वालन से जेयादा एह

से मानेलन कि ऊ बहुत दिन से अस्पताल के डाक्टर लोग के चढावत्त आ रहल बा । चरित्र के अच्छा आदमी ह । विसवासघात्त करे के हाल ना जाने । कवनो समय कहल जाय त्तइयार रहेला । कवनो फरमाइस ना करे । गाँव-देहात के लोग ओकरा टमटम के सगुनिया मानेला । बड़-छोट के लेहाज ओकरा नजर में रहेला । महँगा-से- महँगा सवारी छोड़ के डाक्टर के ले जाये खातिर तैयार रहेला । कवनो गाँव के केहू के घरे जाये के होखे, ओकरा रहता पूछे के ना परे ।

गनिया के नजर में रोगी के ना जात होले. ना धरम । जवना तेजी से मुसलमान के घरे जाला, ओही तेजी से इसाई भा हिन्दू के घरे भी । नाँव से मुसलमान होइयो के ऊ हिन्दू ह । ओकरा माई के एगो फकीर पर बहुत बिसवास रहे । ऊहे फकीर एकर नॉव "गनिया' रखले रहले ।

" डाक्टर साहेब ! रउरा भगवान पर बिसवास करिला कि ना? "

डाक्टर के धेयान टूटल । पहिले त ओकरा सवाल के ना समझलन । फेर से पूछे के चाहत रहन । तबले खियाल हो गइल ।

"काहे ? का बात ह ?"

"कुछ ना ! असहीँ पूछत रही"

" हम भगवान के मानीला । ढकोसला के ना । एगो अनजान सक्ति कं आगा माथा झुकाईला । ओही सक्ति के भगवान जानीला ।"

"ठीक बा, मानी । रउरा मान सकीला । हमा-सुमा के त ढकोसला के मानहीँ के परी । "

डाक्टर के दिमाग गनिया के बात के साथ कदम-से-कदम मिला के ना चल सकल । मन में पूछ के समझ लेबे के लहर आइल । एगो बड़प्पन के चादर ओढ़ले रहन । ऊ घसकत बुझाइल । टाई ठीक कइले । कोट-पैंट पर के धूर रूमाल से उड़वले । मुँह पर रूमाल गते-गते चलावे लगले । मन में कुदार चलत रहे । अपना के ना रोक सकले –"काहे ?"

गनियो आदमी ह । सब कोई अपना के सबको से बड़ समझेला । हाथी भा कार पर चढ़ेवाला लोग सइकिलिहन के हटत देख के हँसेला । हमरो से बड़ लोग दुनिया में बा, ई भुला जाला; बाकिर अपना से छोट के नॉव अँगुरिये पर रहेला । डाक्टर के दिमाग में अपना बात के ना पकड़ात देख के गनियो के खुसी भइल । ऊ खँखार के गला साफ कहलस आ कहे लागल । - " केहू कहे कि मिठास होले । सभे कही ऊ कइसन होले ? मीठ लागे से मिठास ह । रउरा मान लेब । हमरा दिमाग में ना धँसी । केहू मिसरी खिया के कही कि जइसन लागत बा उहे मिठास ह । हम मान लेब । "

गनिया चुप हो गइल । डाक्टर के डर लागे लागल । ऊ गनिया के एके सवाल से डरेलन । ऊ जब पूछेला कि बबुआ लोग कब आई, मेम साहेब कब आएब, तब साँच बोले के साहस ना पड़े आ उनका झूठ बोले के पड़ेला ।

आजो उनका बड़का लइका के चिट्ठी आईल रहे । लिखल रहे कि बेबी जाये खातिर रोवेले । ओकरा के पढ़ते बूझ गइल रहन कि उनकरे लिखावल होई । आगे अउरी साफ लिखल रहे कि छुट्टी मिली त चल अइह चाहे केहू के भेज दीह ना त्त माई बरखा सुरू होते चल आई ।

अइसन बात ना रहे कि ऊ ले आइल ना चाहत होखस । कवनो तकलीफ ना होखे, कवनो खरचा कम होखे, कवनो अपना औरत से प्यार ना होखे, घर के लोग रोकत होखस, सेहू बात ना रहे । सोचत रहन कि ई लोग ना रही, तब खूब लिखाईत । अब बुझात बा कि ओही समय ढेर लिखात्त रहे । 'हजूर' रात दू-तीन गो हित लोग आ गइल रहन । दाल-चाउर सब राते में साफ हो गइल रहे । अब लौटब, तब खरीदाई । घर में पइसो नइखे । मिलबे का करेला कि बाँचो? महँगी जान मरले बिया ।

डाक्टर छुटकारा मिलल देख के अपना के हलुक महसूस कइले । बलाय टर गइल रहे । दोसर केहू रहित, तब बिसवास ना करतन । सोचित्तन कि कुछ माँगें खातिर बहाना कर रहल बा । गनिया पर बिसवास हो गइल । ऊ मांग के कुछ ना ले सके ।

"त्तब अनगुत्ते से असही बाड़ ?"

"आवत खा नथुन साह के दोकान पर चाय पी लेले रही । नथुन साह के जानीला नूँ? अस्पताले के पास में उत्तर भीरी दुकान बिया । बेचारा गरीब आदमी ह । दिल के खराब ना ह । हमरा साथे पढ़त रहे । मयभा मतारी के चलते ओकर ई हाल भइल बा, ना त ओकरा कवना चीज के कमी हइस ।"

टमटम के रूकते लइका घेर लेले सन । उतर के डाक्टर सीधे रोगी के पास गइले । बक्सा लेले पीछे-पीछे गनियों रहे । डाक्टर

के चपरासी टमटम के पास रह गइल रहे। रोगी के खाटी के दहिना और एगो कुर्सी पर डाक्टर बइठले । गनिया खाटी के सिरहाना बायीं ओर जाके खड़ा हो गइल। डाक्टर रोगी के कलाई देखत रहन आ गनिया उनकर चेहरा। उनकरा चेहरा पर उभरत भाव के उ पढ़ के समझत गइल। डाक्टर लोगन के साथ रहत-रहत बहुत कुछ जाने लागल रहे।

" सुसुम पानी चाहीं। जल्दी। हालत ठीक नइखे। गर्मी खातिर सूई देबे के परी।" -रोगी के छाती पर आला घुमा के डाक्टर बोलले।

सुसुम पानी तैयार रहे। तैयार ना करे के परल। जल्दिये मिल गइल। रोगी के दहिना हाथ डाक्टर के आगा उघार पड़ल रहे। उनका हाथ में सूई रहे। एक हाथ में स्पिरिट में भींजल रूई के फाहा रहे। साहस ना होत रहे कि सूई देस। मन के संस्कार मुर्दा के खोभे से मना करत्त रहे। गनिया के तरफ देखलन। ओकरा नजर में घिरना भरल रहे। ऊ दरवाजा तरफ बढ़ल। डाक्टर के बुझाइल जइसे कि ऊ उनकरा जइसन पापी के हत्या करे खातिर हथियार ले आवे गइल होखे ।रोगी मर गइल एह में हमार का दोष ?हमरा पास लोग गइल, तब हम अइबे कइनी।..... तनिको देरियों ना कइनी। हम त आइल बानी।..... हमार समय लागल।..... हमरा त फीस मिलहीं के चाहीं। कह देब कि मर गइलन..... तव के फीस दी?.....लोग रोवे-गावे लागी ।..... बाबूजी के मुकदमा खातिर, करज चुकाये खातिर रूपया चाही...

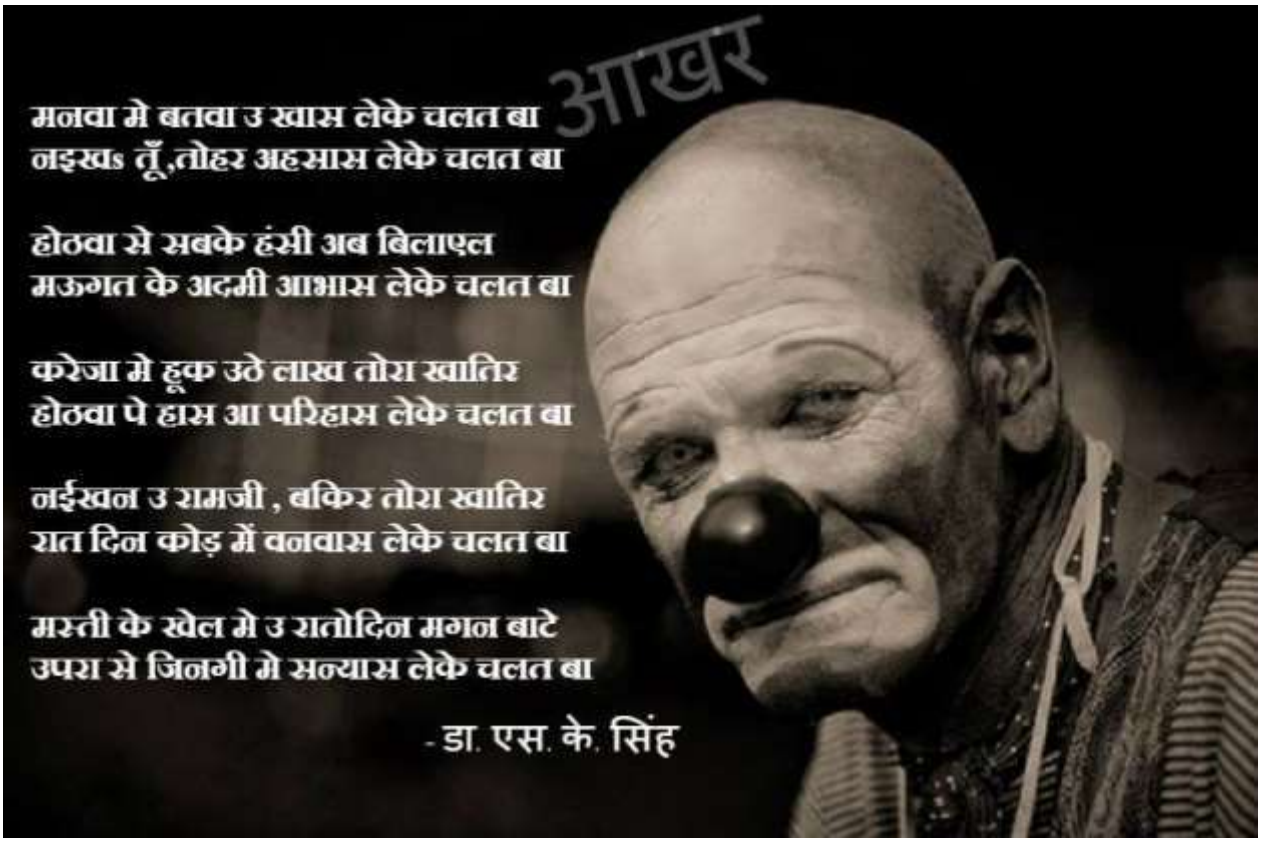
भाई के कॉलेज के फीस चाही। लइकी के 8-9 साल बादें भारी तिलक चाही ।.....भावुक बनला पर कहाँ से आई? हाथ पर स्पिरिट मलत देर भ गइल । मन कड़ा करके आँख मूँद के सूई धँसा देले। दवा के पुर्जा थमा के , खिआवे-पिआवे के तरीका बतला के, फीस टेंटिअवलन आ जाके टम-टम पर बइठ गइलन। गनिया से नजर मिलते नजर झुका लेलन आ दोसरा ओर देखे लगलन।

डाक्टर के बइठ गइला पर गनिया टमटम बढा देलस। लोग के तरफ देख के हाथ जोड़ के बोलल- 'तब हम जात बानी।'

एक आदमी घोडा के तरफ बढ़ल। हाथ में हरियर पाँच रूपया का नोट रहे, 'अपना टमटम के भाडा लेले जा।'

गनिया सुन के अनसुना कर देलस। घोडा के चाबुक मार देलस। हाथ के इशारा से बत्तलवलस कि भाडा ना चाहीं।

घोड़ा पर के चाबुक डाक्टर के अपना पीठ पर महसूस भइल। ऊ देखलन गनिया के आँख से झर-झर लोर बहत रहे। ऊ ओकरा बड़प्पन्न के ऊँचाई देखे लगलन ।





चित्र - स्वयंबरा बक्सी

दिल, जब बच्चा था जी (भाग –4)

(कथाकार आपन लईकाईं के बदमासी में आपन इयार के घरे के दूध जिआन कर देले रहन। फेर ओह घर से इनका के लगभग तड़ीपार कर दियाईल। उमीर भईला पे कथाकार के फेर उ घर में जाये के मौका मिलल आ फेर घटनाक्रम के फलैस बैक चलल बाकी एह बेर बाकि करुण रहल। ओह घटना से हट के फेर से कथाकार के लईकाईं के बदमासी में गोता लगाईं -)

1980-81 के बात ह , 8 पास कS लेले रहनी ,स्कूल तनि दूर रहे। बाबु जी से चिरौरी कईला पर एगो साईकिल किना गईल रहे। ओह घरी नया नया साईकिल मिल जाओ त, अगराये वाला बात रहे। हमहू खूब अगराई अपना साईकिल पर, केहू के छुवे न दी ; केहू के दी ना। रोज़ धोई पोछी।

हS, तS , एक दिन आवत रही स्कूल ले, रास्ता में एगो मुर्गा रोड पार करत रहे। आ हमार साईकिल के निचे आईये त गईल। फर-फर कईलस, आ ओकर पंखिया हमार साईकिल के रीम मे फ़स गईल। मुर्गा के मालिक ओही दरे, हमार साईकिल के हेंडिल धरा गईल। झाव-झाव कS के कई लोग घेर लिहल। हम ठहरनी लईका, बड़ा मुस्किल भईल।
कहS सन 10 गो रूपया निकाला। अब हमरा लगे चवन्नी ना... दस गो रूपया कहा पाई।

मन रोवायिन हो गईल। कहS सन साईकिलिया छोर लS। पूरा मुहल्ला मुर्गा वाला के साथे।

कहS सन, साईकिल धरा जाओ... पैसा लियाई तS साईकिल मिली। बड़हन फ़ेरा मे पड़नी...मने मन सोचSतानी.घरे पता चली त अलगा ले कुटाई होई।

सोचत सोचत, उ लोगन से कहनी कि चलS... पईसा घरे दिवा देब। बात फ़रिया गईल घरे, चल के पईसा देवे के। उ लोग एगो लईका के, जे कि हमरा ले तनि बड उमिर के रहे साथे लगा दिहल पैसा लियावे के आ हमरा साईकिल पर बैठ गईल। चल दिहनी.... फिर मन में आईल कि (जब मुर्गा के पैसा हम दे देब तब तS इ मुर्गा हमार ना हो गईल
हम कहनी मुर्गा साथे ले जायिब.) उ लोग कहल,बनबा ढेर हिरो अरे इ मुर्गा घायल होखे के पईसा बा... पूरा मुर्गा के 20 रूपया लागी बड़ा फेर में पड़नी, इ तS पूरा-पूरा बलजोरी होत रहे हमरा साथे। फिर कहनी कि मुर्गवा साथे ले जाये दS, ना त इ बात के बिस्वास घरे वाला लोग ना करी कि इ दुर्घटना हो गईल बा।

मुर्गवा देखा के पैसा दिवा देब ना तS कहि लोग कि झूठ बोलSता।हमार पोजीसन घर में बहुत ठीक नईखे।
एह पर लोग तैयार हो गईल , सईकिल के हैन्डिल पर मुर्गवा के टांग बांध के टांगल गईल और उ लईकवा बैठ गईल... आगे के फ्रेम पर। मन में बिचार बनSता कि अब का करी ...?
घरे तS जा ना सकेनी... एह हाल में, उहो मुर्गा लेके। बाबु जी तS काटिये के फेक देब हमरा के

कौनो बुद्धि काम ना करे। सोचत सोचत एगो प्लान मन मे आईल . कहनी ए भाई - आगे बैठला से दिक्कत होता आवऽ पीछे बैठ जा। पहिले तऽ उ ना नुकुर कईलस फेरु उतर के पीछे बइठ गईल। आधा काम तऽ हमार बन गईल। बस अब उ ढलान के जोहे लगनी... जवन रास्ता में पडत रहे।

ढलान आईल ....बाया हाथ ले साईकिल के हेंडिल पकड़ के पलट के दाहिना हाथ ले खीच के एक केहुनाठ दिहनी उनका के गर्दनिया पर... उ मुहे के भारी धडाम से गिरलन। हमार साईकिल के पायडिल और तेज़ हो गईल... कहनी , आवऽ तऽ। अब उ चिल्लात बा। हमार मुर्गवा आ आ आ आ .... हो दादा.. ले के भागऽता ... धरऽ धरऽ ....ले के भागल....(उ मरलस गोहार...) काहे के धर... अब हम फट दे हई गली ले हउ गली हो के चलऽनी पराय। गाजीपुर के कउनो गली ऐसन ना रहे जेकरा बारे में हमरा पूरा भूगोल मालूम ना रहे ...।

लेकिन, अब का करी ...? साईकिल में मुर्गा बान्हल बा... घरे कैसे जाई .? बाभन के लयिका... राम-राम... मुरगा के साथे ....!? घरवा वाला, मुर्गवा देखते घरे ले बहरिया दिही लोग... का करी ,का करी। सोचते रही कि सलीम मिया देखा गईलन।

देखते सलीम मिया ले कहनी- अरे एगो बात फस गईल बा सलीम भाई, निपटवाव।

कहले, का बात बा ..?

हम कहनी- अरे एगो लईका 20 गो रूपया लेले रहल हऽ.. पईसा मांगत रही, ना देत रहल। ओकर मुरगवा उठा लिहनी ह, एह्के कही बेचवा दिहिता। ना तऽ बाबु जी हम के बेदिन कऽ दिहन।

सलीमो मिया फेर में पड़ गईलन। लेकिन उहो का करस... हम एकदम ले पीछे पड़ गईनी कि बेचवावा ...बड़ी मेहनत कईके ,सलीम मिया एगो चिकवा के इहा उ मुरगवा केहु तरे 15 रुपिया मे बेचवईलन
फिर का !!!!

अब त हाथ में 15 रूपया..। दुनिया के सबसे अमीर लईका। दिनही सपना में लउके....का-का ना कीन ली। अब समस्या इ आईल की 15 रूपया लुकवाई कहाँ ...? घरे के लोग देख ली तबो ठीक नईखे। फेरु 15 रूपया के भाज(फुटकर) करईनी। एक एक रूपया के नोट के आ सब किताब कापी में अख़बार के गाता (cover) चढ़ऽवनी।

माई देखनी तऽ बड़ा खुस, कि लईका बड़ा बढ़िया से किताब कापी सहेज के रखेला। ओही गाता में एक एक रूपया स्टेपलर से स्टेपल कईनी। जब खर्चा करे के होखे एगो किताब आ कापी के गाता फाड़ी आ ओही से पार्टी होखो। अरे 10 पैसा में एगो पेडा मिले भाई ओह घरी... कुल मिला के दू महिना ले खूब रंग रहल।

त भाई लोग एक मुर्गा के पार्टी दू महिना ले मनावल गयिल।लेकिन फेरु "सियार" उ तरकुल के तरे ना गईले (हमार उ रस्तवा जिनगी भर खाति बन हो गईल)
कबो कबो पैसा के कमी बुझाव तऽ .....

मन करे- जानबूझ के केहू के मुरगवा चाप दी का ....?



बृज किशोर तिवारी

पलामू झारखंड के रहे वाला बृजकिशोर तिवारी जी एह समय शक्तिनगर सोनभद्र मे कार्यरत बानी। भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के रचना इँहा के एगो अलग आ उंच पहचान बनावेला। आखर पेज से जुड़ल बृजकिशोर जी भोजपुरी मे लगातार रचना कई रहल बानी भोजपुरी मे लिख रहल बानी।

भगवान जब चहीहें, सुधार दीहें !


फोटो साभार : गूगल

हमनी के उमर के लोग अइसन भूकम्प देखलहीं ना रहल ह काहे की उन्नईस सौ चौतिस के बाद ई सबसे बड़का भूकम्प रहल ह जवन एह इलाका में आइल रहल ह। कहल बा जे भगवान के आगे केहु के ना चले। भगवान के लाठी में खाली मार होला, आवाज ना होला। सेकूलर,समप्रदायिक, अगड़ा-पिछड़ा, दलित-पसमान्दा, हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक, मण्डल-कमण्डल के राजनीति आ रोज रोज के खुराफात भगवान जी दुइये मिनट में बराबर कर देहले। दू मिनट खातिर धरती का कांपल कि अफसर आ चपरासी दुनु एके रफ्तार में घर छोड़ के फिल्ड में भागे लागल लोग। केहु के केहु पुछवईया ना रहे। वाह रे भगवान जी के करिश्मा। जब भगवान जी चहीहें सबका के ओकर औकात बता दीहें। ना कवनो परदा रहे ना कवनो छेड़खानी। के जीन्स पेन्हले बा आ के सलवार-कुर्ता, ऐसे केहु के कवनो मतलब ना रहे। सभे आपन-आपन जान लेके भागत जात रहे। पले भर में भगवान जी सबका सुधार दीहले। पार्क में के ऊ नजारा त हमरा भुलात नइखे जब एके चटाई पर पंडित जी आ मौलाना साहेब दुनु जाना बईठ के रीलीफ में बटाइल बिस्कुट चुपचाप खात रहे लोग। ओह बेरा ना उ हिन्दु रहलें ना उ मुसलमान। पले भर के झटका में हो गइल रहे लोग सिधवा इंसान। ना पंडिताइन के चाय छुआत रहे ना शेखाइन के पर्दा बिना धरम नासात रहे। ना केहु कम्यूनिस्ट रहे, ना कोंग्रेसी, ना केहु भाजपाई। सभे चिल्लात रहे, बचाईं-बचाईं। बाह रे भगवान के ऐंटीबाइटिक दवाई। एके मिनट में सबका में मेल-मिलाप। माने सारा झगड़ा दू मिनट खातिर साफ। दरअसल आदमी के खुराफात जब हद से जियादा बढ़ जाला त भगवानजी आ चाहे अल्लाह मियाँ असहीं नू सुधार देले। ना ओह बेरा कवनो दरोगा के जरूरत रहे ना कवनो सिपाही के आ ना महिले पुलिस के। सभे असहीं सुधर गइल रहे। कवनो मीटिंग में अगर हजार दू हजार लोग इकट्ठा होला त एक सौ से जियादा सुरक्षा खातिर पुलिस होला, बाक़िर इहो एगो कमाल बा जे बीसन लोग बिना अपना घरे में ताला लगावले, घर छोड़ के सड़क पे बेतहासा भागत जात रहे लोग आ केहु से केहु के कवनो खतरा ना रहे। ओह बेरा केहु के बॉडीगार्ड के जरूरत ना रहे, ना गाड़ी, ना ड्राईवर। सभे एही तरे रफ्तार में रहे। साँचे कहल बा जे हमनी के केतनो बिगड़ जाईं सन, भगवान जब चाह दीहें त दू मिनट में सुधार दीहें। खैर, ई बूझइला के बात बा। ना त हमनी के उ जीव हईं सन जे अगर सब कुछ सामान्य हो जाव आ रीलीफ बांटे के मिल जाव त हमनी के ओहु माल में आधा माल मारे लागब सन। बहुत लोग ओहि में से आपन चुनाव लड़े के खर्चा निकाले लागी।

साँच त ई बा की दुइये मिनट के झटका में सारा लोग एतना घबरा गइल रहे कि बुझाट ना रहे कि के केने भागो। जेकरा जेने मौका मिलत रहे, ओनिये हताश भागल जात रहे। जब धीरे-धीरे धरती के खीस शांत भइल त जवन खिसि कांपत रहे तवन थोड़ी देर खातिर बन्द भइल। बाक़िर उ दर अइसन कि केहु घरे लौटे के नामे ना लेत रहे। सउंसे दिन बीत गइल, रात हो गइल। बिजली नदारद, कुछ-कुछ अनहरिया आ भूखे पियासे फक-फक परान। बाक़िर डरे घरे के चुहानी में के जाव आ नाश्ता खाना के बनाओ? दुकानो त ना खुलल रहे कि कुछ कीन के भूखाइल लइकन के दिआव। हाय रे मजबूरी ! अब पार्क में बइठल लोग का करो। हाय रे मजबूरी ! अब पार्क आ स्कूल के मैदान में बइठल लोग का करो ? जब कवनो उपाय ना सूझे त आदमी भगवान-भगवान करे लागेला,

बाक़िर उहो केतना देर? अब एक दोसरा से बतियावला आ हंसी मज़ाक के अलावा दोसार कवनो रस्तो ना रहे। आदमी थोड़े देर खातिर दुख मनावेला। दुखो मनावल देर तक सम्भव नईखे। मौका मिलते हंसी मज़ाक में लीन हो जाला। हाय रे आदमी ! तनी सा शान्ति का भइल कि मौका मिलते एक दूसरा से हंसी मज़ाक करे में आ कटाक्ष करे में केहु से केहु बाज ना आवत रहे। आखिर खलिहा बइठल मजबूर आ भुखाइल मनई आ करो ? इहे आदमी के फितरत ह। हमरा बुझाला कि इहे हंसी-ठहाका वक्त के बड़हन से बड़हन घाव के भी भर देला। मजबुरिये में आदमी रोएला आ घबराला बाक़िर जइसे तनी सा स्थिति सामान्य होला कि आदमी के चुहलबाजी शुरू हो जाला। पार्क में डरल-सहमल लोग बइठल त रहे बाक़िर धीरे-धीरे जिनगी लवटे लागल त चुप कइसे रहो। हमार पड़ोसिया मदन भाई उदासी तुड़लें। आपन छोटकी-मोटकी भउजी के टारगेट कइलें आ लगले कहे- जब छत हिले लागल ह त हमरा बुझाईल ह जे हमार मोटकी भउजी छत पर से धम-धम नीचे उतरतारी। सुन के सारा लोग ठहका लगा के हँसे लगुए आ भउजी लगली चुनचुनाए- जाईं-जाईं, लागता जे राउर मेहरारू त पाव भर के बाड़ी। आरे हमार बाबूजी खियावले बाडें तब नू अइसन देह बा। उदास टेंशन से भरल दिमाग के मौका मिलुए आ लोग खूब हंसुए। राम प्रवेश भी मौका ना छोडुअन आ ओह हंसी-ठिठोली में तनी आउर धार देहुअन- आरे भाई, जब धरती कांपे लगुए त मास्टराईन धाबाक से अपना चउकी पर से गिर गउई। हमरा बुझउए कि कहीं मास्टराईन के चउकी पर से गिरला से त ना धरती हिले लागल? राम प्रवेश के बात पे तनी आउर ज़ोर से ठहाका लगुए। मास्टराईन लगुई कहे- आउर केहु ना भेटाइल त हमहीं भेटाइनी ह? अपने त भागे के बेरी सीढ़ी पे तीन ढिमिलिया खउवन। एह नोक-झोंक में सबका मजा आवत रहे आ सबका ई बात बुझात रहे कि बोझिल दिमाग के हल्का करे खातिर एह से बेहतर कवनो उपाय नइखे। हरे राम ठाकुर एह सब के सिलसिला आगे बढ़उवन- जब धरती डोले लगुए त हमनी के घर में से निकल-निकल के भागे लगुईं सन त देखतानी जे मास्टर साहेब नंग-धड़ंग खड़ा होके लेक्चर दे रहल बानी- अरे भाई, घबड़ा लोगिन मत। इ भूकम्प ह। घबरइला से का होई ? थोड़ी देर में इ अपने ठीक हो जाई। घबरइला से का होई ? हिम्मत से काम ल लोग। अनेरे बेवकूफ लेखां चिल्ला तार लोगिन। एकदम घबरइला के जरूरत नईखे। हमनीए के साथे राम परीछन भाई भागात रहुअन। उनका से बर्दाश्त ना भइल त बोल पडुअन- खैर हमनी के त घबराइले बानी सन, रउरा जाईं आ घरे से धोती चाहे पैंट पेन्ह के आईं। सुनके लोग ढेर देर ले ठहाका लगउए। मास्टर साहेब हंसते कहे लगुईं- रे हमरो के ना छोड़बे सन का? एह मर-मज़ाक पर ओह अन्हारा में ढेर देर ले ठहाका लागत रह गउए। इहे ह आदमी के सुभाव। तनी भर मउका का मिलल, लोग अपना रास-रंग में आ जाला, आ चाहे इ कहीं कि एक-से-एक दुख के नदी हंसी-उछाह के समुन्दर में जाके लोप हो जाला।

अइसे इहों कहल बा जे दोसरा के हंसी-ठहाका देख के जे मुस्काइल ना आ दोसरा के रोदन आ दुख-दर्द में जेकर आँख नम ना भइल, उ आदमी कइसन ? आज, कई रोज एह बड़हन त्रासदी के गुजर गइल। बाक़िर जब-जब अपना पड़ोसी देश नेपाल के दुख टीवी पे लउकता तब-तब मन दुखी हो जाता आ मानवता के आँख लोर बहावे लागता। एह दुख में ना कवनों धरम के गंध बा ना जाति के तेवर। आँख के सोझा बस आदमी आ इंसानियत। एलान के मोताबिक दस हजार से जियादा लोग के जीवन-सफर अचानक रास्ते में रुक गइल बा। पता ना केतना लोग निःसंतान हो गइल बा आ केतना अनाथ। खैर, आदमी आदमी के खो देले बा इहे ऊख कम ना होला। एह त्रासदी पे खाली दुःखमनावल जा सकेला। कवनो विरोध चाहे एहतजाज नइखे कइल जा सकत। ईश्वरीय फैसला पे कवन विरोध आ कवन एहतजाज? रोज-रोज इन्कलाब जिंदाबाद मुर्दाबाद करे वाल लोग एक दम चुप बा, लाचार बा, हतप्रभ बा आ निरुत्तर बा। एह फैसला पर कवना संसद में हंगामा करी लोग आ विरोध में केकर पुतला जराई लोग ? हमरा स्व० मेराज फैजाबादी के एगो शेर याद आवता- “दिल



तंग इनायतपुरी

तंग इनायतपपुरी (सुनील कुमार तंग) जी आजू के समय में देश बिदेश में एगो जानल मानल कवि के रूप में स्थापित बानी। इंहा के सीवान के रहे वाला हईं आ पैतृक भूमि पिलुई (दाउदपुर) ह। पेशा से हस्तरेखा आ अंगुलांक विशेषज्ञ हईं तंग जी। हास्य-व्यंग के रूप में, मजाहिया शायर के रूप में आ मंच संचालक के रूप में इंहा के भोजपुरी, हिन्दी आ उर्दू के सैकड़ों कवि सम्मलेनन में देश-बिदेश में आपन एगो अलग पहचान बना चुकल बानी। देश के शीर्षस्थ पत्र-पत्रिका में तंग जी के रचना प्रकाशित होते रहेला। दु बरिस पहिले, भोजपुरी में उंहा के काव्य-संग्रह “केहु मन पड़ल” प्रकाशित हो चुकल बा। भोजपुरी खातिर आखर के संघर्ष में इहाँ के बहुत योगदान रहल बा शुरुए से।

को थाम लेने कि फुरसत भी वही देता है, औ धड़कने की एजाजत भी वही देता है। " आदमी उहे कर सकेला जवन ओकरा हाथ में बा। अइसन त्रासदी में मानवता पुका फार के रोवेला आ हर सम्भव मदद खातिर तत्पर हो जाला। इहो संच बा कि एह तरे के मदद में उ मलहम जरूर होला जवन वक्त के बड़हन से बड़हन घाव भर देला।

एह बारे में एगो बात के प्रशंसा जरूर करे के चाहीं जे पार्टी लाइन से ऊपर उठ के हमनी के केंद्र सरकार आ राज्य सरकार जवन भूकम्प पीड़ित आ लोग के सहायता में जुटल बा उ अपना-आप में एगो कमाल बा। पहिला बेरा राजनीति आम आदमी के संवेदना के, बिना कवनो राजनीति कइले अपना दरियादिली के परिचय देले बा। सब से कमाल इ बा कि अपना पड़ोसी देश के एह विपत्ति के समय में सहायता क के जवन विदेशन में धाक जमवले बा आ मानवता के परिचय देले इ कबहींना भइल रहल ह। अबगे बुझाता कि ई देश बुद्ध के ह, महावीर के ह, विवेकानद के ह आ महात्मा गांधी के ह। अब जरूरत एह बात के बा कि पक्ष-विपक्ष एक दोसरा के कोसल छोड़ के एह विषय में सकारात्मक सोच के साठे काम करे लोग ट ई ऐतेहासिक हो जाई। आ अगर फेर उहे नकारात्मक आरो-प्रत्यारोप करत रहल लोग, त जब भगवान चाहे अल्लाह मियाँ दू मिनट में करोड़न-करोड़ लोग के सुधार सकेले त मुट्ठी भर लोग के सुधारे में कतना पल लागी। खैर अबहूँओं से ऊपरवाला हमनी के सद्बुद्धि देस।

गाँधी जी के टूटल सपना

पियुष द्विवेदी 'भारत'

कबो रहे जे सोन चिरइया,
उहाँ न बा अब सोना चाँदी।
बहत रहे जहाँ नदी दूध के,
उहाँ भूखि से मरे आबादी।
चोर पहुँचि गइलन सन सत्ता, धरि नेता जईसन भेषवा।
गाँधीजी के सपना टूटत जाता, अन्हार में देसवा।

ढाई सदी रहे गोरन के,
फेर जाके आईल खादी।
लाख पूत आ सेनुर कीमत,
बड़ महंग बा ई आजादी।
बाकिर कीमत आजादी के, नाहीं समझे देस नरेसवा।
गाँधीजी के सपना टूटत जाता, अन्हार में देसवा।

भ्रष्टतंत्र के दीमक लागल।
खोखल हो गईल इमान सब।
पईसा की रँगन में रँगि के,
बा बदल गईल इंसान सब।
प्रेम, त्याग, सुख कमे लऊके, बस लऊके कलह कलेशवा।
गाँधीजी के सपना टूटत जाता, अन्हार में देसवा।

अनगिनत समस्या बादो भी,
बा झिलमिल आस के दीयना।
युवा खून, ई देश बचाई,
बा ई बिस्वास के दीयना।
युवा बनी जनता के सेवक, ना नेता जईसन बलेशवा।
गाँधीजी के सपना पूजी, उबरी अन्हार से देसवा।

निठाह चिंतन

एगो सिद्ध महात्मा से कोई पुछलक – " महाराज , मेहरारू के वश मे करे के कोई मंतर बताईं " ।महात्मा जी बोललन – " बचवा ! अइसन कौनों मंतर होइत तS हम घर से भाग के साधु बनतीं ?

ओने , जज साहब अपराधी से कोर्ट मे पूछलन – " तोरा पर आरोप बा कि तू अपना मेहरारु के कंट्रोल कईले बाड़S ? अपरधिया बोललक – "हजूर ई बात बा कि....."

जज साहब तुरत्ते बोललन – "सफाई मत द , तरीका बतावS मरदवा !"

कहला के मतलब ई बा कि आपन मेहरारू के खुस रखल ब्रहमाण्ड के सबसे पुरान समस्या बा । द्वापर, त्रेता, कलयुग सब मे दूल्हा लोग मेहरारू के खुस राखे खातिर लेटेस्ट तरीका अपनवलन बाकी मेहरारू लोगिन भी दूल्हा से खिसियाए खातिर नाया नाया खोज करत रहली , एह कारण से पत्नी-भगत मरद लोगन के संख्या किसन भगवान के जमाने से आज तक दिन दूना रात चौगुना बढ़त पर बा । आज अइसनके एगो मरद-महान से भेंट भएल रहे , उ ई समस्या पर कुछ उपाय बतवलन आ कहलन कि ई उपाय के अपना के घर के खाऊँ-खाऊँ से पक्का मुक्ति मिली , आ जऊन लोग "औरत-फोबिया" से परेसान बा , ओकर कल्याण होई , माथा के मूसर फूल मे बदल जाई , ई उपाय बिना काँट-छाँट के लिखाता कि जेकरा जरूरत बा , उ गते से पढ़ लीं आउर फायेदा उठा के आपन जीवन खुसहाल बना लीं :-

- भोरे भोरे उठके राम-राम जपत चाय बनाके मेहरारू के पियाईं , जब उ बिछौना पे बैठ के चाय पिये के शुरू करस त उहें नीचे जमीनवा पर आसनी बिछाके अनुलोम-विलोम करीं , दंडवतासन आ शवासन करीं !
- जदी उ जादे तेज-तराक बारी आ रऊआ कुछ सिमसिमाह हई त आपन बचल खुचल तेज उनके गोर मे हँस-हँस के डालके निस्तेज हो जाइं !
- उ चाहे जेतना करिया होखस , रऊआ कोसिस कर-कर के , मीठ बोल-बोल के ई बात उनका मन मे बईठावे के बा कि उरवसी, मेनका, राम्भा उनका से उन्नइस बारी लो !
- उनकर बनावल भोजन चाहे जेतना खकवा काहे न होए , पानी पी-पी के तारीफ करीं , हर घोंट मे ई जरूर कहाए कि जवार मे अइसन रसोई केहु न पकावेला ! ई बात बार -बार कहे के बा कि ई "रेसेपी" टीवी पर " मास्टर-सेफ" मे भेज देवल जाए , त बड़ा हिट हो जाई , पहिला इनाम मिली !
- जदी उनकर नईहर के लोग रावण के गुन पर भी गएल होखे तबहियों आपन वाकचातुरी आ क्रियाकलाप से उनकर नईहर के सब लोग के 'रामजी के अवतार' सिद्ध करे के कोशिश करीं आ ई कोशिश मे हरदम सचेष्ट रहीं !
- तनख़ाह के सब पईसा चुपचाप बिल्कुल सहज समर्पित भाव से मेहरारू के हाथ में अर्पित कर दीं और रोज आफिस जाए के टाइम लईकन लेखा गिड़गिड़ाके दू-चार रूपया मांगी ! ए काम मे होसियारी रहे काहे की जादे दाँत चीयरला से "ओवर-एक्टिंग" के खतरा बा !
- बराईं मत , सफलता मिली जरूर ! जादे घबराहट होए त उनका सामने ई गाना गावे के शुरू कर दीं – "रसिया के नार बनावो रे रसिया के .....!



डा. एस . के . सिंह

बलिया, युपी के रहे वाला डा. एस के सिंह जी एह घरी बनारस मे असिस्टेंट कमिश्नर बानी । भोजपुरी आ हिंदी साहित्य में समान दखल राखेनी । भोजपुरी भाषा प लगातार लिख रहल बानी ।आखर पेज प इँहा के लिखल कई गो विवेचनात्मक लेख , भोजपुरी कविता आ चुकल बा ।

करम

लिखल करम के
अब तऽ पोछहीं के पऽरी
जीऐ के बा तऽ
मरहीं के पऽरी

ढेला ढुक्कुर
छोड छाडि के
आमदी भा ईमदी के
पुजहीं के पऽरी

कहऽ तारे "भूषण"
करि के सँउसे मनन
अब तऽ कान्हा से कान्हा के
जोरहीं के परी

अंजुरी भरल
सोना चानी के
नईखे अब
दरकार

हो सके तऽ
माड भात से
भरि दींहीं
सरकार

अब तऽ
लाद का सोझा
जात धरम
हमके ना सोहाता

बुधुआ देखीं
खाली पेटे
पीअला अस
लोटियाता



चंद्रभूषण पाण्डेय

आरा , बिहार के रहेवाला चंद्रभूषण पाण्डेय जी , भोजपुरी मे ठेठ आ गहिराह रचना खाति जानल जानी । भोजपुरी कविताई के एगो बरिआर ठेहा के रुप मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह घरी इँहा के बेगुसराय मे बानी ।

पाती

स्वस्ति श्री सरब उपमा जोगे
सउसे कुल देवता गोहराके
जे सुनि के मन खुश होक्खे
"भूषण"से खबर लिखावत बानी

भईसिया अबकी पाडी बिआईल
हरदी गुर पिआवत बानी
बबुनी के पाहुन साईकिल खाति
दुआरे रग्गर बेसहले बानी

सोचब मति जनि तनीको अपने
कसहूँ काम चलावत बानी
गोईंठा दूधवा घीउवा बेचि बेचि
सभके दाम चुकावत बानी

रउवो खातिर भरि के शीशी
घीउवा हम चोरवले बानी
चईत में बरखा से अबकी
ईच्ची भ गेंहू बचवले बानी

राडी बुधुआ बऽ के कोंहडा फेर से
छान्हें लत्तर चढवले बानी
बुढउ-बुढियो के देह-नेह कई के
फरहर फेनु बनवले बानी

सीमा पर जे जे पहरा दे ता
सभे के गोडवा लागत बानी
अनकर देश से काहे के झगरा
हाकिमों के खबर पेठवले बानी

चिट्ठी के तु तार जनि बूझीहऽ
छुट्टी होक्खसु तब्बे अईहऽ
आँचरा से तोहार गोड पखारत
नन्हका के माई बोलत बानी

खोईंछा

बसावन आपन बेटी के विदाई के तइयारी में लागल रहन, बियाह त बियाह होला बाकी अब त बेटी के गवनो करे में एड़ी से पसेना छूटे लागत बा। भिनसहरे से झापी - बक्सा, डाल - दउरा, खटिया - बिछावन , तोसक - तकिया सब एक जगह करत रहन। मने - मने विचारत रहन की दू गो बैलगाड़ी में त मय चलिए जाइ। बुचिया के जाये वाला गाड़ी में ओहार तनवा देले रहन।

अभी इहे सभ विचारत रहन की बुचिया के माई आके पुछ देली- " बुचिया के खोइछा देवे के बा , पईसा दिही ना "।

बसावन एक हाथ से पियरी धोती के खुटा टोवत बुचिया के माई दने ताक के पुछले- "कतना चाही ?"

बुचिया के माई अपना अचरा के गेठी खोलत कहली- "पवनी - पंडी जी के देवे खातिर जवन काल्ह देले रही वो में से 5 रुपया बाचल बा, अउरी कुछुओ दे दिही त फेट के खोइछा में डाल देहब।

बसावन के मन करत रहे की आज हजार - दू हजार रहीत त बुचिया के खोइछा में डाल दिहिति बाकी असो त दु बखत खाए के भी मोहाल बा । अभी हलुवाई के मजुरी , बाजार प के बनिया के डालडा-चीनी के पइसा अउरी ह। इयाद परल बढ़ई के खटिया के बनाई भी देवे के बा। अपने त आदमी बसखटवो पे सुत जाला बाकी बेटी के ससुरा बसखट दे के विदाई ना नु होई। दुवार प के पलानी में सीसो के धरन रहे उहे देई के बढ़ई के कहलन की पावा - पाटी बना द , खाली सुतरी किने के पड़ल। अब दुवारो उघार हो गइल बा बाकि अब कवनो चिंता नइखे। अब कवनो माल - गरु बाड़न स की पलानी के चिंता करसु। असो जेठ - बइसाख ले कही से कदम भा आम के भी लकड़ी धरन खातीर जोगाड़ हो जाइ त बुनी-बदरी में उठे-बइठे खातीर एगो पलानी के जोगाड़ कइल जाइ ।

बसावन के आपन काम त कसहु बनिहारी क के चल जात रहे । रोज चोकर वाला पाव भर पिसान से बनल रोटी पनपिआइ में मील जाला, तीन सेर खेसारी भा धान बनि में मिल जाला। बनिहारी में 2 बिगहा कोला मिलल बा ओहि पे असरा लागल बा। बइसाख खतम होत -होत बरखा होखे लागेला, रोहिनी नक्षत्तर में धान के बिअड हरिअर हो जाला। महीना डेढ़ महीना में हाथ-हाथ भर के धान रोपनी लायक हो जाला। जब ले बिया बोवे लायक होला तब ले निचे के खेत जोत-जात के रोपे खातिर तइयार कइल जाला। असाढ़ में रोपनी सुरु हो जाला , सावन तक चलेला। सब गिरहथ के इहे कोशिश रहेला की ओकर आपन रोपनी पहिले हो जाओ। अगात हो जाओ। अब त जिए खातिर अबही से धान के खेती के सपना देखे के परी। रोपनी में चार सेर मजूरी अउर मेढ -आरी पे बइठा के दाल - भात तरकारी - अचार मलिकार खिआवे लन । पहिले महीना दू महीना रोपनी चलत रहे बाकी अब बड़की मलिकिनी अपना नइहर से मजूर मंगवा लेत बाड़ी । बड़ा कठजीव हई , कतनो हाथ - गोड़ जोडला पे दू सेर उसीना चाउर पइचा ना देली । पर साल कतनो कहनी की मलकिनी जतने रउवा से बने ओतने पइचा दे दीही , पूस में हम राउर पइचा फेर देहब। बाकी बड़की मलकिनी के पेट के पानी ना हिलल। बसावन के चुहानी पाँव डेढ़ पाँव आनाज से बेसी ना होखे , वोही में से छटाक - छटाँक भर बना के काम चलत रहेला। अब साग - तरकारी के का कहल जाओ। नेनुआ - लउका अब लउकत नइखे , मचान बान्हे के जगह होखे तब नु। पहिले महीना दू महीना में मछरी- भात भी भेटा जात रहे। कबो पोठिया , कबो दू चार गो गरई,सिंगी , टेंगरा भी मिल जात रही स। बाकि अब त लागत बा की मछरियो के आकाल पर गइल बा। बुढ़िया पोखरा में अब पानी ना रहे , पछिम भर के आहर भी सुखा गईल , पानी अतने रहेला की बइठलो भईस नइखी स भींजत, असही



शशि भूषण

डुमराव , बिहार के रहे वाला शशी जी , व्यपार के क्षेत्र मे बानी , भोजपुरी भाषा मे लगभग हर मुद्दा हर पहलू प निबंध शैली मे इँहा के लिखेनी। एह घरी इँहा के हाँगकांग मे बानी।

लेवाड़ मांज के चल आवत बाड़ी स । अब का कइल जाउ कसहु गोसाईं जी के नाव लेके जियल जात बा । गरीब आदमी के अकील हरदम भुलाईल रहेला । मालिक - मलकिनी के का कहे के बा । ओह लोग के बाल - बच्चा त , जवन हमरा बुचिया के देखे के ना मिलल होइ वुहे भकोसत रहेला लो । हमार मेहरारू अपना बेटी के खोइछा खातीर छिछिआइल चलत बिया वोने काल्हे देखनी मालिक के छोटका भाई जवन सहर में बड़का नेता बाड़न उनकर मेहरारू अउरी बेटी ठोर रंग के , गाल पोत के अइली हा स । हमनी के मेहरारू, लइकी के ठोर लाल तबे होला जब कईसहु कतहू भुभुन फुट जाला । बड़का लोग से का कुफुत करे के बा, कसहु बेटी के पार लगा देनी, रेल - ठेल के हमनी के दुनो बेकत के भी जिनगी पार लाग जाई ।

ले दे के बनिहारी में जवन दु बिगहा खेत मिलल बा वोही पे आस रहे । सोचले रही की गेंहू बेच के बुचिया के गवना फरिया देब । जब गेहूँ पटावे के रहे तब नहर में पानी ना आइल , अब बहंगी पे पानी ढो के केहु खेत के पटवन कइसे करो । अइसन पाला परल की गेहूँ कहा से होइ , अब त ऊपर से बरखा बरिस गइल । गेहूँ करिया होके खेते में सुत गइल । बसावन के बनिहारी में मालीक गड़ही वाला खेत देले बानी , अइसन पानी लागल की अब गेहूँ त दुर, दू चार मोटरी भूसा भी ना होई । मालिक के खेत के पटवन त कसहु पम्पिंग सेट से हो गइल , खेत उचास प बा ये ले पानी निकस जाला, बरखा से ओतना नुकसान ना भइल । पइसा के बल बा | पाला के दवाई मार के जवने बाचल उ मालिक लोग बचावल । अब त मालीक से ही कसहु करजा भा पइचा मांग के साल लगावे के पड़ी ।

बसावन के सोच में पडल देख के उनकर मेहरारू टोकली "का सोचे लगनी जी ? पइसवा दिही... किरिन फुट गइल , सर सेकराहे विदाई हो जाइ त खाए-पिए के बेरा ले अपना घरे पहुंच जाइ लोग "। बसावन के लागल की करेजा भारी हो गइल । बुचिया के माई ठीके कहत बाड़ी, देरी हो जाइ त अब नास्ता पानी के जोगाड़ करे भर कुबत नइखे । आपन पियरी के खूंटा खोल के दस-दस रुपया के ममोराइल - चमोराइल दु गो कागज के नोट रहे , ऊ बुचिया के माई के हाथ प ध दिहलन । जब घर के हाड़ - मांस के लछिमी दोसरा के अंगना जात बाड़ी त धोती के खूंटा में कागज के लछिमी बान्ह के का करब । गोसाईं जी के गोहरा के हाथ जोडले , आँख में लोर भर के बेटी के बिदाई कइलन ।

बारात बिदाई करके बसावन सीतलपाटी बिछा के आँख मूंद लेले । सोचलन की तनी हाथ - गोड सोझ क लेवल जावो । आँख भारी भइल आवत रहे बाकी करेजा अइसे धक-धक करत रहे जइसे ढेका के मुसर गिरत होखे । सोचत रहन की कसहु दिन काट लिहल जाओ त सांझी के बुचिया के माई से कहके खुदी के भात बनवा के माड़ , नून संगे खा लेब । अतने में उनका कान में मालीक के बोली सुनाइल "बसावन... ये बसावन सूत गइले का रे ? अब त बेटी के गवना हो गइल अब तनी देह झार । बसावन झटके पे उठ के खड़ा हो गइले । मुंह से खाली अतने निकलल- " जी मालीक "।

मालिक बसावन के तनिका भीरी आ के कहलन- "अच्छा सुन , आज हाकिम लोग गावँ में आइल बा फसल देखे खातीर, ऊपर से आदेश भइल बा की किसान के मुआवजा दिहल जाओ । एह साल अगर किसान के मुआवजा सरकार ना दिही त हमनी के काम त कसहु चल जाइ बाकी तहनी के त सभ लीलाम हो जाई ।

अब बसावन का कहस , अतने कहले- "अब का करे के होइ मालिक ?"

मालिक बोले शुरू कइले " देख साहेब लोग घूम घूम के खेत देखि लोग अउरी रिपोर्ट बना के कलेटर साहेब के दिही लोग तब मुवावजा मिली । हम हाकिम लोग के दुवार पे बइठा के चाय नास्ता करा देले बानी , उ लोग बढ़िया से रिपोर्ट बना के कलेटर साहेब के दे दिही लोग । रिपोर्ट लिखे के साथे - साथे हाकिम लोग के खेत में से खराब भइल गेंहू के नमूना भी ले जाई लोग । जेकर फसल जतने खराब रही ओकरा ओतने पइसा मिली । अब सुन, तोरा के जवन हम कोला देले बानी ओकरा के काट के चटाई - चटाई भर गेहु हमरा सभ टोपरी में किनारे - किनारे बिछा दे । अइसन मराइल फसल से रिपोर्ट अउरी तगड़ा बनी । बसावन हसुवा उठा के चल देले । जइसे - जइसे मालिक कहले वोइसे - वोइसे कइले । साहेब लोग आइल, कागज पे लिखल लोग , बसावन के छिटल मुवार में से नमूना खातिर बोरा में भरवा लिहल लोग , बधार घुमत - घुमत बसावन के खेत दने भी चल आइल लोग । वोह में गेहू के एको डाठ ना बाचल रहे, सभ मलिकार लोग के खेत में

बिछ गइल रहे। अब अइसन खराब फसल गाँव भर में केहु के ना रहे। हाकिम पूछ देहलन "ई केकर खेत हा जी , सबके गेहु खेते में मारा गइल , ये में त कटनी हो गइल बा।" मालिक जवाब दिहलन - हुजूर ई हमरा बनिहार के कोला हा , अब एहनी के जीमे इहे बिगहा , दु बिगहा खेतिए बा। कसहु जीव जान लगा के जतना बाचल बचवलन स।

हकिम गाँव के लोग के लिस्ट में से बसावन के नाम खोज के लाल निसान लगा देहले। आखिर सरकार के इहो त बतावे के बा की 5 से 10 प्रतिशत फसल के क्षति नइखे भइल। आखिर 100 % क्षति के रिपोर्ट काल्पनिक लागी , मुआवजा के मंजूरी भी रुक सकेला , फिर से जाँच हो सकेला।

बसावन चुप-चाप अपना मालीक के मुँह ताकत रहन। उनका इयाद पड़ल कि एक बेर मालिक उनका के समझावत रहन "झूठ बोलल अउरी गुह खाइल बराबर होला।"

के सरिहारी ,
कहा सहारा मिली ,
जवना के छुवनी ऊहे बिला गइल ;
खोजत रही सावन के फुहार ,
धधकत माटी धरा गइल।

दहेज़ (राजीव मिश्र)

ए गो किसान बासी भात में पानी आम के एगो फांकी मीस के भा रतिया के बाचल लिट्टी के खा के पानी पी के की खराई जनि मारो लउर कान्हा पे लिहले अपना खेत बधारी जाला। दुपहरिया में मिलो भ जनि मिलो खाए के अपना माई माट्टी के संजोइ गोडी, पानी लगाई की चैती के फसल तक ले बहिनी के बियाह बा। रोपया कौड़ी जोड़े के बा। सुते के परयास करी बाकी नींन कहँवा ? आँख मुदाईल ना की सपनवे में देखीहें !

ओहो पलेट जनि कम परी जाउ।गाँव के लोग आ हीत-नाता का कही ? कवनो जमाना रहे की दुआरे बरियात लागो त दू चार डिराम सरबत घोराउ सोंउफ डारी के। अतना ना नीक लागत रहे कि का कहल जाव। बड़ा परेम से लोग चार पांच पतई पुड़ी बंसीपुर वाला कटहर के तरकारी जरे खा लेत रहे। बह बही होत रहे। नादि मही के निकलो त , इ फलनवा भइया फलनवा काका बाबा के चार पांच अंजुरी डार भैया आठ जोड़ी मरले बाड़े पची जाइ।

ओने से भी - मरदे हम अतना कहां खानी ! उ त ठनढई (उ हे सरबत सोंउफ वाला) पचा देले रहे !!
आजु प्लेट के चक्कर अलगा, अवरू आजु त दू जगहा से अएगा आइल बा | का दो फलनवा पटना -रांची से हलवाई बोलवले बाड़न। लिट्टी चोखा पोलाव दाल, पूड़ी आ पनीर के तरकारी।उनका किहाँ के जाइ अवरू दोसरा किहां के जाइ उहो जंजाल बा।

बाकी बूढ़ पुरनिया लो एह के तुरल चाहत बाड़न। एगो बाबा कहलन अजी इ मय पईसा के बोखार ह आपन संस्कृतीयो नसाता अवरू एके पतल पे मय गाउंज माउज। दोसरका काका - सही कहनी रउवा कच्ची पक्की सभ मेरा के बूढ़ पुरनिया के इज्ज़तों त जाते बा। सभे एके जरे ? बन होखे के चाहीं ई कुल्ही !!

नीन खुलल फेरु उहे खेते। दू चार गो नवहा- का हो भईया प्लेट ओलेट के केहु से कहाईल बा ? हलवाई भइल बा ? तिलक के सामान के पूरजी लईका किहां से आइल होखे त अबहिये से कुछु बयना दे द ना त बाद में सब नखरा करीहन सन। महंगो परी। अब बेचैनी अवरु बढ़ल। मन में सोचले पईसा कोडी जवन जोराइल रहे ओह में से अधवा त लईका के दे दियाईल। अधवा तिलक प नु देबे के बा। ओही में से कुछु काढ़ि के बायना दे आवत बानीं काल्हुवे। खेत तब ले कटा जाई पइसा के इंतजाम हो जाइ !!

अवरू परदा गीर जात बा जब आन्ही ओला से फसल खेते में सूत जात बा !

अभी बाक़ी बा :-
अब एह के पूरा रउरा सभे के करे के बा
एगो डेग दहेज के बिरोध में

रउरा सभे के आपने

www.bhojpurisahityangan.com

अनाथालय

ओ दिन हम एगो अईसन जगह पहुचनी जहाँ एगो आदमी दोसरा खातिर मरत रहे दोसर आदमी तीसर खातिर आउर तीसर चौथा खातिर । उहाँ हर पल हर कोई मरत रहे मगर जियत कोई ना रहे । हम एगो अईसन परिवार से मिलनी जहाँ किश्तों में भी जिनगी हर कोई के नइखे मिलल बाकि प्यार के धागा से सब केहू बंधल रहे , एगो अइसन परिवार जे अनाथ रहे। उ परिवार अपना लोगन से बिछड़ के अपना लोगन के एगो अलग दुनिया बना लेले बा, ओह परिवार में चीख ना सन्नाटा शोर करत रहे ,उहाँ एगो के रोअल दोसरा खातिर लोरी बन जात रहे केहू के रोटी केहू के भुख मिटावत रहे। पूरा भीड़ के चीरत आ खींढी के गिनत हम चौथा माला ले त पहुच गईल रहनी बाकि अबो एगो खामोशी रहे , सन्नाटा रहे आ दूर तक फईलल अन्हार भी जेकरा दूसरा ओर कुछ लईकन के मुस्कुराहट टीम-टिमात रहे। ओह लईकन के आरी -कगरी कुछ अइसन शब्द घुमत रहे जवन ओकनी के नादान से बचपन के बाँध देले रहे , जईसे निरीह , गरीब , डर , अनाथ आउर सांच आ उ शब्द उ सहमल लईकन के आँख में लउकत रहे जवन एगो खंढहर भईल देवाल के पाछे से हमरा जईसन अनजान आदमी के झाँकत रहे।

कौनो नया चीज लईकन खातिर बहुत प्यारा होला आ उ चीज पावे खातिर कौनो लईका कौनो कोशिश ना छोड़ेला ,शोर मचाई , जिद करि आ ना पईला पे चीखी आ चीलाई उहाँ हमनी के पास कैमरा रहे , हमनी के गाड़ी रहे चारोतरफ हमनी के हीं शोर रहे आउर उ लईकन के सन्नाटा । आज उ हमनी से मिले के तईयार ना रहलेसन , उ हमनी के पास आवे से भी डरसन । खैर हम कारण त नईखी जानत मगर हमरा अईसन लागल की हमनी के नया कपड़ा लत्ता हमनी के अलग करदेले रहे आ चाहे इ कहीं की हम्हीं समझ ना पईनी की ओकनी के एतना शान्त जिनगी अब कौनो अनजान हलचल के अपनावे के तईयार ना रहे। उहाँ हरतरफ एगो नया कहानी रहे। कोई इ नइखे जानत की ओकर नाम का ह ,कोई इ नईखे जानत ओकर घर कहाँ बा , कोई अपना बाबूजी के नईखे जानत त कोई मई के नईखे जानत ,कोई नईखे जानत की ओकर पहचान का ह लेकिन एगो सवाल जे हर के चेहरा पे साफ़ – साफ़ लउकत रहे की "हमार गलती का ह ?" "हम गुनेहगार बानी त काहे बानी ???".....।

कुछ दिन पहिलेहिं एगो लईका उहाँ आईल रहे। सब लोग मिलके ओकर नाम राजा रखले रहे ओकर उमर इहे कौनो 14 - 15 साल के रहे। हम उ लईका से मिले के चाहत रहनी लेकिन उ कोई से मिले के ना चाहत रहे कोई बतावल की उ लईका अपना अनाथ होखे के चस्मदीद गवाह बा। उहाँ के लोग इहो बतावल कि ओकरा कैंसर बा। सांच कहीं ओकरा सांच के जाने के ताकत ना रहे लेकिन ओकरा से मिले के हमार एगो चाहत रहे, हम ओह लईका के जरी पहुंचनी। उ चुप बईठल रहे हम ओकरा से बात करे के कोशिश कईनी मगर उ तबो चुप रहे ,हमरा पास एगो टॉफ़ी रहे हम उ टॉफ़ी उ लईका के देहनी तब उ कहलस "त ईहाँ के लोग रउआ के सब कुछ बता देहलस ?" हम हिम्मत जुटावत ओकरा से पूछनी " तहरा डर ना लागेला " "डर ....." उ जोर - जोर से हंसे लागल , ताली बजावे लागल आ फेर अपना आप के सम्भालते बोललस "हम मानतानी की मौत के सन्नाटा में सुकून ना होला त का इ जिनगी खामोश बा ?" "आ जौन डर के बात रउआ करतानी उ डर त हमरा से बेसी रउआ चेहरा पर लउकता इहाँ खड़ा हर कोई के चेहरा पर दिखता एही से अब त डर से डरे लागल छुट गईल बा " उ कुछ आउर भी कहे के चाहत रहे मगर कहते -कहत उ अपना गम के छुपा लेलस सायद इहे गम ओकरा जिये के सहारा होखो।



स्वस्ति आनयन

सिवान बिहार के रहे वाला स्वस्ति आनयन जी अभी इंजीन्यरिंग के पढ़ाई कर रहल बानी आ भोजपुरी, हिन्दी में लघुकथा लिखेनी। ए घरी इहाँ के भोपाल में बानी।

हम एगो पत्रकार हई रोज बहुत से जगह पे जानी आ बहुत से जिनगी के बहुत करीब से देखेनी आ फेर उ सब जिनगी के टटोलेनी आ खंघालेनी मगर पहिला बेर ओह अनाथालय के जिनगी के एतना करीब से देखला के बाद हमार खुद के जिनगी तार-तार हो गईल। इहे सब सोचत - सोचत ना जाने कब सांझ हो गईल आ तबे एगो आवाज आईल " देख लोग इ राजा के का भईल " सब केहू दउरल आ हमहूँ भागते - भागत राजा के कमरा ले पहुंचनी उहाँ राजा लम्बा - लम्बा सांस लेत रहे। कुछ लोग डाक्टर के लेवे खातिर भागल लेकिन अन्त त सब केहू जानत रहे एही से हमनी के मायूस होके इन्तजार करे लगनी सन अब अब अब .... आ फेर एगो चीख उ सन्नाटा के चीरत ओहि सन्नाटा में कहीं लुका गईल ,सब केहू ओह गमगीन माहौल में डूब गईल रहे। केहू रोवत रहे त केहू विश्वास ना कई पावत रहे। आज तकले केहु राजा के हंसत ना देखले रहे बाकि पता ना मरला के बाद राजा के चेहरा पर कवना बात के मुस्कुराहट रहे।

गते-गते एहिन्ग दू दिन बीत गईल आउर आज हम आ हमार टीम ओह अनाथालय के कुछ खोखला वादा दे के लवट आईल बिआ, आ अब हम कुछ खाली पन्ना में ओह जिनगी के उतारे के कोशिश करतानी ताकि कुछ लोग आवे वाला समय में इ महत्वपूर्ण विषय के आपन - आपन मुद्दा बना सको चाहे सीधे - सीधे इ कहीं की एह विषय के कुछ लोग आपन जीत आउर दोसरा के हार के कारण बना सको बाकिर का कहीं उ जिनगी के हम चरितार्थ कई नईखी पावत काहे कि एहसास के कौनो चित्र ना होला ,एहसास निराकार होला , बिलकुल निराकार , एकदम निराकार .....।



आहि रे बालम चिरई (अंतिम भाग)



चित्र : शशि रंजन मिश्र

अब ले रउरा पढ़नी कि बाबू किरिपाल सिंघ के दुयार पे चम्पा बाई के नाच के तैयारी होता । मय गाँव जवार जुटल बा । ओहि बीच में देस के परधानमंत्री के मरे के सूचना मिलल । दारोगा आ एस डी एम के कहला पे बाबू साहेब नाच रोकवा दिहले। अब एहिजा से आगे पढ़ीं-

उहे दुआर बा । आ दुआर प दरी समियाना सब ओहितरे बा। बाकिर अपना नेता के गईला के दुख लउकता बेकती बेकती के चेहरा पर। चंपाबाई के बर-बिदाई हो गईल बा। ठाकुर साहब नेग-जोग में कमी ना करे वाला हऊवन। लेकिन रात के इगारह बजे से गईल ठीक ना रहे। त सभकर सूते के बेवस्था पुरनका हवेली में हो गईल। दुगो हरवाह चंपा के देख-रेख में तैनात बा लोग। चंपा सुतल बाड़ी। बाकिर नींन बा कि आवते नईखे। अजबे अभाग हो गईल। आजु ले अईसन ना भईल रहल ह कब्बो कि स्टेज पर से बिना नाच-गाना के चंपा उतर गईल होखस। बाकिर ऊपर वाला के हाथे सभे मजबूर बा।

हरवाह आ के पूछि गईल ह कि-पानी-ओनी ना नु पियब रऊवां। चंपा फेरु सुते खातिर आँखि बंद करतारी।

तले कहीं दूर से माईक पर हल्लो-हल्लो के आवाज सुनाईल। आ दु-चार मिनट के बाद एगो सुरीली आवाज सुनाये लागल- आहि रे बालम चिरई...।

चंपा आँख बंद के सुतल चाह तारी। तबले गवईया उठान लेता- कवनी खोतवा में लुकईलू आहि रे बालम चिरई...।

गजबे जादू बा एकरी आवाज में। अगर एकरी साथे रायसाहब अतुल बाबू के तबला के संगत हो जाव त सुनवईया ऊठे के नावे ना ली। ईहे खूबी होला संगीत में। बिदवान से ले के निपढ़ ले,लईका से लेके सयान ले, जीऊ से लेके जन्तु ले सबका प एकर परभाव परेला। अनगुते चंपा के गरदन प कुछ गरमाहट के अहसास भईल। हाथ से छुवला प बुझाईल कि अरे ई त लोर ह। जवन बेकहले-पूछले आँखि से निकल गईल बा। उठ के पानी पियली। हरवाह के बोला के पूछली-ए काका! ई के गावता हो?



असित कुमार मिश्र

सिकंदरपुर बलिया युपी के रहे वाला असित कुमार मिश्र जी भाषा हिन्दी आ भोजपुरी प बरिआर पकड़ रखले बानी। भोजपुरी मे ठेठ आ खांटी भोजपुरी के अपना लेखनी से परोसे के क्षमता इँहा के लेख मे देखल जा सकेला। स्वतंत्र रुप से कई गो पत्र पत्रिका अखबार मे इँहा के लेख आ चुकल बा। एह घरी इँहा के बलिया मे ही बानी।

हरवाह कहलन-आरे ई सूरवा ह । नीमन गावेला । नोनियाटोला में आजु बिटोर भईल बा । आज खाली निरगुन गवाई,परधानमंतरी जी खातिर ।

चंपा कहली कि -ए काका हमहूं सूने चलब । लिया चलS हमके ।

हरवाह भौंचक ! कहलन कि-अरे चंपाबाई रऊवां ई का कहतानी । एगो सूर के सुने खातिर रऊवां जाईब । गांव-जवार सभ ओहिजा बिटुराईल बा । दोसरे में राऊर सुरच्छा...ठाकुर साहब जानि गईनीं त हमार जाने ले लेब । चंपा कहली कि- केहू ना जानी । हम चदरा ओढ़ि लेतानीं । आ मेहरारुन के भीड़ में सबसे पाछे रहब । हरवाह के अकिल फेल... ।

हार मानि के हरवाह आगे आगे चले लगलन । आ पाछे पाछे चंपा ।

जो रे सूरवा तोर भाग जाग गईल । रुप आ गुन के खान चंपा, जेके देखे खातिर लोग मतवाला हो जाला । ऊ चंपा आज एगो सूर के सुने खातिर जा तारी । तबले चंपा के डेग पनरोहा में परल,गिरला से बचली । मुँह से छी! छी! निकलल । सूतल कुकुर भूँके लगलन स । हरवाह दूर-दूर क के कहे लागल कि- दुअरिका के पनरोहा ह । डहरिये प बही । एने चंपा संगीत के नासा में चुपचाप चलत जा तरी ।

गेहूँ के कटाईल खेत में एगो चौकी बिछल बा । एक ओरी पांच गो ईंटा साज के तीनगोड़वा चौकी पर एगो छब्बीस सताइस साल के सुन्दर लईका गावता । अँजोर के नांव प एगो गेस जरतिया आ देखवईया भुँइया बईठल बा । कुछु ढ़ेर रसदार लोग घर से बंसखट लेके आईल बा । मेहरारु लोग तनि दूर से लुग्गा से मुँह तोप तोप देख रहल बा । अईसन स्टेज आ अईसन माहौल देखके चंपा चिहा गईली । एकबारगी मन में आईल कि- ना हमरा लाएक नईखे ई । बाकिर मन कहलस कि- ना ई एगो कलाकार के अपमान हो जाई । हमरो के देखे खातिर त लोग एहीतरे आवत होई । हरवाह चंपा के मेहरारुन की ओर बईठे के इसारा क के मरदनन में चलि गईल ।

चंपा भुँइया बईठ के अँचरा से मुँह ढ़ंकि के सुनतरी । चंपा के मन इस्थिर नईखे । सोचStारी कि गजब के राग आ दरद देले बाड़ी सरसती जी इनके । ना माएक ठीक बा, न अँजोर, ना इस्टेज, ना सुनवईया । बाकिर तब्बो एगो जादू बा ए सूरदास में कि हतना लोग दीवाना बा ईनकर ।

भोर में चार बजे जब गेस बुताये लागल त कारिक्रम बंद भईल । हरवाह इसारा से चंपा के बोला के कहलस कि- अब चलीं ना त केहू जान जाई त हमरा के फजीहत हो जाई । बेमन से चंपा के आवे के परल । एक घंटा बाद चंपा अपना मंडली के साथे सहर चल गईली ।

सहर के बातिए कुछु अऊर ह । लोग राति के राति मनबे ना करेला । एगो अजबे नासा बा सहर के जिनिगी में । कहवाँ जाए के बा पते नईखे,बाकिर भागमभाग मचल रहेला । सौ घंटा के एक दिन होईत त का जने लोग तनि खलिहर मिलित । लेकिन सहर के अईसनो रंगीनी में चंपा के दिन-रात नईखे कटत । आजु पांच दिन हो गईल चंपा ना ठीक से खातारी ना पियतारी । राणा समर बहादुर सिंघ के कारिंदा आ के लवट गईल,बाकिर चंपा मिले से माना क दिहली । तीन गो साटा के बेयाना फेरा गईल । आज सबेरे से चंपा के मन अकुलाता । सूरदास के चेहरा रहि रहि के याद आवता । चंपा अपना कारिंदा सुमेसर के बोला के कहली-हरे सुमेसरा! ठाकुर किरपाल सिंघ के गाँव देखतारे?सुमेसरा कहलस कि-हं । देखतानीं । चंपा कहली कि-ओहिजा नोनियाटोली में एगो सूरदास रहेलन । बड़ी नीमन राग बा उनुकर । साच्छात सरसती जी बाड़ी उनुका पर । जो लिया आऊ उनुके ।

सुमेसरा कहलस-चंपा ई ठीक नईखे । कहां ऊ सूर आ कहवाँ तूं । देखS नाचे गावे वाली जबले इस्टेज प रहेले तबले मरजाद बनल रहेला । जहां इस्टेज से उतरल कि ओकर पतन सुरु । तू ओके छोड़ द । का धईल बा ओकरा में !

चंपा के मुँह लाल हो गईल । खिसिया के कहली-तूं हमके कानून मत सिखाउ । जेतना कहतानी ओतने सुन ! सुमेसरा ठीक बा कहि के चल गईल ।

दियाबरान के बेरा बा । चारों ओर संझवत बराता । पिरितिया बता गईलि ह कि-सुमेसर आ सूरदास जी बईठका में आ गईल बा लो । चंपा नास्ता-पानी के इन्तजाम करे के कहि के खुदे तैयार होखे में लागल बाड़ी । सोचतारी कि कां पहिरीं ? ऊहे नीला लंहगा ठीक रही जवन ओहि दिन रहे । अनगुते चंपा के होंठ पर एगो दुख के हंसी आईल । ओह ! सूरदासजी के लऊकबे ना करेला । हम कुछऊ पहिर लेईं का फरक परी ।

सूरदास चंपा के सोझा बईठल बाड़न । दुनु लोग चुप बा । सूरदास कुछु देर के बाद कहलन-रऊवां हमके ईयाद

www.bhojpurisahityangan.com

कईनी,हमार भाग बा। अब आदेस करीं। का करे के बा हमके। चंपा कहली-देखीं सूरदासजी! हम बाति के घुमा फिरा के ना कहब। ई सही बा कि हजारों लोग हमरी रुप देह के लालची बा। हमरी एक एक अदा पर लोग आह भरेला। बाकिर ओहि दिन हम राऊर आवाज सुननीं त हमके लागल कि राऊर जगह ऊ ना ह। एगो मिठास आ एगो कसक बा रऊरी आवाज में। सही पूछीं त हम तहिए से बस रऊरे बारे में सोचतानीं। आजुले अईसन कब्बो ना भईल रहल ह। केतने रुप के कदरदान ईहंवां से खाली लवट गईल लोग।

सूरदास कहलन-बाई जी ! ई त राऊर बड़कपन बा जे हमके एतना मान-सम्मान दिहनीं। रऊवां का चाहतानीं हमसे?

चंपा कहली- देखीं हमरी लगे कवनो बात के कमी नईखे। हम बस रऊवां से बियाह कईल चाहतानीं। सूरदास के चेहरा के रंग उतरे लागल।

सूरदास कहलन-देखीं! चंपाबाई हम सूर हईं ,गरीब हईं। लेकिन इजतदार हईं। रऊवां से बियाह क के हम बिरादरी से बहरा हो जाईब। रऊवां बहुत सुघर बानी, बाकिर हम राऊर सुघराई देखिये ना पाईब। हमके माफ करीं। आ फेरु कब्बो मत बोलाईब हमके इहवां। चंपा के कटला पर खून ना। सूरदास के बाति बजर नियर करेजा पर घाव कईलस। चंपा उठ के खड़ा हो गईली। उनुसे रोवाई रोकाते ना रहे। तुरंते दोसरा कमरा में चलि गईली। समसेरवा आके सूरदास के लिया गईल।

सबेरे घाम चढ़ला ले जब चंपा के केवाड़ी ना खुलल त पिरितिया समसेरवा से कहलस कि-आजु ले कब्बो एतना देर ले चंपा ना सुतली। तनी देख त का बात ह?

समसेरवा पीछे खिड़की से जाके केवाड़ी खोललस। चंपा अपना बिछौना पर आराम से सुतल रहली। मुँह पर अजबे सान्ति। पिरितिया दौरि के उठवलस। चंपा के गरदन एक ओर उझुकि गईल। सगरो देह नीला परि गईल रहे। बगल में मूस मारे वाला दवाई रहे। आ सीसी के नीचे एगो कागज। पिरितिया पढ़े लागल-

प्रिय सूरदासजी।

रऊवां एके झटका में हमके हमार औकात बता दिहनी। राऊरो दोस ना। हमहीं भुला गईनी कि हम नाचे गावे वाली हईं। समाज में हमके जगह ना मिली। राऊर बिरादरी दोसर बा,हमार बिरादरी दोसर...।

हमरी बिरादरी में रऊवां नीयर हजारों सूरदास के जगह बा। बाकिर रऊवां नीयर हजारों बिरादरी में एगो चंपा खातिर जगह नईखे। रऊवां बहुत इजतदार बानी। बाकिर हमरी ईजत के नीलाम करे वाला समाज त राऊरे ह। केकर मन ना होला कि उहो केहू के माई बेटी बहिन के नांव से जानल जाव। हमनीं खातिर लोग आपन मेहरारु छोड़ देला, बाकिर मेहरारु नीयर मानेला ना।

लेकिन तब्बो हमके रऊवां से कवनो सिकाईत नईखे। हम जानतनीं कि हमरो लगे एगो हिरदय बा। ओमे प्यार बा आ ऊ प्यार बस रऊवां खातिर बा। हम जातनीं एह दुनिया से। हो सके त हमरा खातिर एक हाली ऊहे वाला गीत गा देब-आहि रे बालम चिरई....।

-एगो अभागिन

www.bhojpurisahityangan.com

जंगल राज

निराला (बिदेसिया के पाती)

जंगलराज... ! पिछिलका कुछ साल से ई एगो अईसन शब्द हो गईल बा, जेकर सबसे बेसी ढिंढोरा पिटाला। पूरा हिंदी इलाका में एह शब्द के फैशनेबुल तरीका से प्रयोग कइल जाला। कई बेर त सनकाह लेखा लोग भी जंगल राज-जंगल राज रटत रहेला। बिहार-उत्तरप्रदेश आउरी झारखंड खाति एह शब्द के लोकप्रियता तनी बेसी बा। आउरी आजकाल बिहार में एह शब्द के मान बढ़ल बा। जेकरे बुझाता, उहे ताश के पत्ता लेखा जंगलराज शब्द के फेंट देता। एह शब्द के प्रयोग राजनीति के लोग दिल खोल के करत बा आउर मकसद बा एह शब्द के अलोत में कानून के राज खतम हो जाये के बतावल, अंधेर नगरी-चउपट राजा के बारे में बतावल। चाहे अईसनका राज होखे, जेकरा में केहू केहू के सुने खातिर तइयार ना होखे, गुंडा-बदमाश राज कर सन, शासन अकर्मण्य हो जाओ, ओही के बतावे खातिर जंगलराज शब्द के इस्तेमाल हो रहल बा। बिहार में पिछिलका कुछ साल से लालू जी के राज खतम भइला पर भाजपा आउरी नीतीश कुमार के पार्टी के लोग एह शब्द के हवा में उछलले रहे आउर ओकरा बाद तो नीतीशजी के राज आईल तो लालूजी के पार्टी के लोग भी जंगलराज-जंगलराज के गाना गावे लागल रहे लोग। लेकिन एहू कहे में कउनो संकोच ना होखे के चाहीं कि एह शब्द से सबसे जादा प्यार भाजपा के लोग करेला। बिहार में छुटभइया नेता से लेकर बड़का नेता माने मोदीजी तक ई शब्द से प्यार करत रहल बा लोग। आउरी आजकल त मत पूछीं, महक रहल बा ई शब्द। रोजे रोज अखबार में आवेला कि जंगलराज के खिलाफ लड़े के बा, जंगलराज के वापसी हो गईल बा, जंगल राज के वापसी होखी। लेकिन जंगलराज के बारे में कुछ जानकारी अगर नेता लोग जुटइले रहित त एकरा के एतना बेर, एह तरीका से बोले में लजाईत लोग।

रोजे रोज अखबार में आवेला कि जंगलराज के खिलाफ लड़े के बा, जंगलराज के वापसी हो गईल बा, जंगल राज के वापसी होखी। लेकिन जंगलराज के बारे में कुछ जानकारी अगर नेता लोग जुटइले रहित त एकरा के एतना बेर, एह तरीका से बोले में लजाईत लोग।

जंगलराज सच्चो में एगो राज रहे। जैन साधु-संत खातिर एक जमाना मे सबसे सुविधाजनक, सुगम आउरी सुघर राज। जानकारी ई बा कि 232 ईसापूर्व में जब चक्रवर्ती सम्राट अशोक के मृत्यु भइल त मौर्य सम्राज्य के पतन भी शुरू हो गइल। कुछ कालखंड के बाद अशोक के पोता मध्यप्रदेश,गुजरात, दक्खिन, मैसूर आदि इलाका में आपन प्रभाव बढ़ावे शुरू कईलन। उ आपन राज के साढ़े 25 राज में बंटले आउर एह बंटवारा में जैन साधु लोगन के सुगमता के ध्यान रखले। ओह राज्यन में मगध, अंग, कौशल, कुस, विदेह, कुरू, काशी आदि के साथे एगो प्रमुख नाम जंगलराज के रहे। तब जंगलराज के राजधानी अहिच्छता होखत रहे। एह राज में जैन साधु लोगन खातिर सबसे सुव्यवस्थित आउरी सुगम्य वातावरण रहे। ओही तरी जंगलराज के विकसित भी कईल गईल रहुवे।

एह प्रसंग के पूरा चरचा सार्थवाह नाम के एगो किताब में बा। सार्थवाह कउनो साधारण किताब ना ह। एकर लेखक भी कउनो साधारण आदमी ना रहले। सार्थवाह- प्राचीन भारत में पथ पद्धति नाम से जवन किताब बिया, ओकर लेखक मोतीचंद्र जी रहनी। एह किताब में मोतीचंद्रजी यात्रा, यात्री लोग, रास्ता, रास्ता के पद्धति आदि के रख के प्राचीन भारत



निराला

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं। इँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी। एह घरी पटना में निवास बा

के कई गो महत्वपूर्ण अध्याय के खंगललले बानी आउर सामने लावे के कोशिश कईले बानी। गंभीराह तथ्य आउरी तर्क के साथे। मोतीचंद्रजी आपन समय में विख्यात विद्वान रहलीं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के परिवार से रहले बाकिर इनकर आपन पहचान भइल। भारत के वेशभूषा आउरी भारत में पथ पद्धति, दुई गो इनकर किताब दुनिया भर में चर्चित भइल। जवन पुस्तक के इहवां बात होखत बा आउर जेकरा में जंगलराज के बारे में विस्तार से चरचा बा, ओह पुस्तक के भूमिका वासुदेव शरणजी जईसन विद्वान लिखले रहलन।

इ त एगो किताब के बात भइल, जेकरा में जंगलराज के चरचा बा। अगर एकरो से समझ में ना आवे तो बिहार के नेता लोगन के अंग्रेजी में लिखल जगदीश चंद्र जैन के किताब ‘ लाइफ इन एनसिएंट इंडियाः एज्ड डिपिक्टेड बाई जैन केंस’ भी बंचवावल जा सकत बा।

अब एह किताब के बारे में जनवावे के काम बा। खास कई के अभी बिहार में। काहे कि बिहार चुनावी मोड में घुस चुकल बा आउरी रोज-रोज एक-दोसरा के गिरावे-पटके के खेला शुरू हो गईल बा। एह खेला में जंगलराज एगो सबसे जादे प्रयोग में आवेवाला शब्द बा आउरी होखी भी। कम से कम ई बतावे के काम बा कि तु लोग एह शब्द के गारी लेखा बोल के आपन समृद्ध इतिहास के गरिआवत बाड़ जा।

दुनिया कहाँ से कहाँ जा रहल बा

डा० रीता सिन्हा



दुनिया कहाँ से कहाँ जा रहल बा। बिज्ञान के चमत्कार देख आदमी चकरा जाता। लेकिन किसान के हालत में कवनों सुधार नईखे होत। किसान के जीवन के हर छन जोखिम से भरल बा। देह तोड़ मेहनत कइला के बादो जब ले अनाज घरे आ के धरा ना जाव तले छातिये पर प्राण रहेला। असो के लहलहात खेत पर ओला पड़ल आ फसल करीया हो गइल। ये बेरा हाकिम के , के पूछो कृषि सलाहकार भी झांकी पारे ना अइले।

बिहार आ यू पी के मुख्य फसल धान, गेंहू, मकई, उरद, मसूर, रहर, मटर, जौ, बूट, मुंग, खेसारी, राई, सरसों आ तीसी ह। किसान के सारा दारोमदार इहे फसल पर टीकल बा। सब नीमन, बेजाय एही पर बा। झुराइल देह लेले किसान आपन जिनगी ओरवा देव त ओकर दोष केकरा पर बा? ई दुःख कहे मान के बा? गाछ के आमो गिर गइल। चटनियों दुलम।

किसान के सामने पांच गो समस्या बा-

पहिलका - हर साल मौसम आ बाढ के मार
दुसरका- जंगली जानवर आ कीडन के प्रकोप
तीसरका- सरकारी नलकूप आ नहर से पानी ना मिलला से निजी बोरिंग पर बढ़ल खर्चा
चउथका- फसल बीमा ,अनुदान,बीज,खाद मिले में दिक्कत
आ पांचवा- सरकारी क्रय केन्द्र पर के बिचौलिया।

गावन में आज भी किसान 'फसल बीमा'ना जाने। बेमौसम बरखा से पीड़ित किसान के पहिले के मुकाबिल डेढ़ गुना मुआबजा आ पचास के जगे तैतीस प्रतिशत नुकसान के भी छति पूर्ति के दायरे में ले आवे के प्रधान मंत्री के घोसना राहत भरल बा। साथे रिजर्ब बैंक के निर्देसों संतोष देबे वाला बा। राज्य सरकार के चाही कि केंद्र सरकार के सही जानकारी तत्परता से देबे। राज्य सरकार चाही त बिजली,पानी के बिल माफ़ क सकेला।

असो के बरखा पिछलका सौ साल के रेकाड तुडले बा। मौसम बिभाग आपन पूर्वानुमान ठीक करो। बीमा कम्पनी सचेत होखो। एक दोसरा के माथे खेलला से ना होई।

किसान जमीन के करेजा ह। एकर दुःख सबकर पेट के दुःख ह। आ करेजा के महिमा के नइखे जानत ?

www.bhojpurisahityangan.com

बाल परदेसी

तेरह बरिस के बुचुन अपना भटकोईआ निअर आंख से फाड़ -फाड़ के एने-ओने देखत बारे , बाकिर उनकर सवलिया चाचा के देखाई नईखे देत । बेचारा बुचुन के गला रुन्हाए लागल आ आंख में से लोर के नदी बहे खातिर हुमचे लागल । बुचुन केहुंग हिम्मत कके अपना जरी बईठल आदमी से पुछुवन कि -रऊरा ,हमार चाचा देखाई देतारे का ? लाल गमछी वाला जिन होही सीटवा के लगे खड़ा होके खईनी बनावत रहले हऽ । बगल आला आदमी सीधे कह देहलस- ना हमरा नईखे मालूम ।

जनसेवा ऐक्सपरेस के सीवान जक्सन से चलला चार-पाँच मिनट हो गईल रहुवे , बुचुन के चाचा सवलिया पानी भरे खातिर सीवान जकसन पर उतरल रहुवन, बाकिर अभी पानी अधे जरकिंग भरले रहुवन तलेक ले टेरेन चल देहुवे । ऊ केहुंग जल्दी से चढ़ुवन बाकिर टेरेन में एतना भीड़ रहे कि उनका बुचुन के लगे पहुंचे में पनरह मिनट लाग गऊए । ऐने एह पनरह मिनट में बेचारे बुचुन के सिसकी आ रोआई देखके अगल-बगल के लोग उनका के समझावत आ चुप करावत रहुए । चाचा जल्दीए आ जईहें , ऊ अगिलो टीसन पर दोसरों डिब्बा में चढ़ल होईहे तऽ आ जईहे । तु चुप हो जा बबुआ - कहत महातम समझावत रहुवन । महातम के औरत रामाउती अपना झोरी में से निकाल के दु गो ठेकुआ बुचुन के ओर बढ़वली , लऽ बबुआ हई खा लऽ । बुचुन उ ठेकुआ ले लेहुवन , तलेक ले सवलिया गिरत- भहरात ,उबिछात - फानत सीट के जरी पहुचुवन । सवलिया के देख के बुचुन के जान में जान आईल । पाम्हीं निअर मोछ पर फईलल नाकी के पानी के बाएं हाथ के कलाई से घसीट के पोंछ के आपन चवनिआ मुसुकी चाचा काऊर छोड़ुवन । भटकोईया आंख के निकलल पानी हसला पर उठल गाल पर चमकत रहे आ ओहींग ऊपर के कोना में बेतीं वाला आधा टुटल सीट पर से बुचुन पुछुवन -कहां चल गईल रहनी हऽ ?हमरा तऽ बड़ी डर लागत रहल हऽ ।

सवलिया- अरे बुड़बक , ऐमें डेराए के का बा । भीड़ देखत नईख , ऐमें में लात रखे के जगहे नईखे । केहुंग-केहुंग ससर के पहुचल बानी ।लऽ हई पानी पी लऽ । आ ई ठेकुआ कहां से ?

बुचुन - हिंहा के देनी हऽ । रामाउती के ओर इशारा क के बतऊन ।

सवलिया बड़ी गौर से रामाउती कावर देखुवन आ फेनु कहुवन आच्छे चलऽ ठीक बा , ऊ बाद में खईहऽ अभी राख दऽ ।

सवलिया बुचुन के सामने वाला ऊपर के सीट पर केहुंग जुगाड़ भीड़ा के बईठ गऊवन ।

महातम - भाई जी कहां ले जाए के होई ?

सवलिया- दिल्ली ले जाएम सन ।

महातम- ई बबुआ बड़ी रोअत रहल हऽ । बड़ी मनवनी हऽ सन । ई रऊरा संगे रह के पढ़े ले का ?

सवलिया- ना भाई जी , ई गांवही रहत रहले हऽ । हमारा रामखेलावन भईया के चार महीना पहिले टीवी के चलते जान चल गईल । अब इहे ऊनकर एगो बबुआ बारे , तीन गो ईनकर बहिन बारी सन । इनकर महतारी जिद कके हमरा संगे नोकरी करे खातिरा भेजले बारी । का करेम बिना नोकरी- चाकरी के घर - दुआर कईसे चली ।

महातम - बाकिर भाई जी ई तऽ अभी एकदम छोट लईका बारे , ई कवन नोकरी करिहे अभी , ईनका के पढ़ईती लोगीन , पढ़ - लिख के ठीक -ठाक उमर हो जाईत तऽ अच्छा नोकरीयों मिल जाईत । सरकार काऊरी से पढ़ाई , कपड़ा , खाना सब मुफुत में मिलते बा । रऊरा ईनका महतारी के समझावे के चाही ।

सवलिया- का कहीं भाई जी , पढ़े मे तऽ ई ठीके रहल हऽ , सातवां के ईम्तिहान अबगे पास कईले बा । बाकिर खाली



प्रभाष मिश्र

छपरा, बिहार के रहे वाला प्रभाष मिश्रा जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बनी आ आखर के साथे जुड़ल बानी। इहाँ के कहानी आ कविता दुनु में हाथ सधल बा। फिलहाल इहाँ के नासिक में कार्यरत बानी।

पढ़ाई -लिखाई से घर -दुआर नानु चली | घर के खर्चा ,बहिन सन के बिआह -शादी , ई सब तS करे खातिर पैसा -कौड़ी चाही , तS ई ना कमईहे तS कईसे होई |एही कुल्ही से इनकर महतारी हमरा संगे भेजले बारी |

रामाउती- रऊरा कोशिश करेम की एह बबुआ के आसान काम मिलो , ना तS इ तS फुल निअर बबुआ खिले के पहिलही सुखें लगीहे | ईनका के अपना लगे पढ़ावहु के इंतिजाम करेम केहुंग , मैटिक ले पढ़ा देम तS आगे कबो सरकारीयों नोकरी मिले के राहता खुलल रही |

सवलिया- अरे बहिन जी , आपना तरफ से तS आदमी ऊठा ना धरी बाकिर कवनो फैकटरी मे दस- बारह घंटा से कम काम ना करे के पड़ेला , आ ओकरा बादों इ पढ़ीहे तS जरुर आदमी पढ़ाई | का कहेम पेट के आगी , दिमागी के तेजी के भोथर कई देला |

एहींग कुछ- कुछ बतिआवत राहता कटे लागल | रात भईला पर बुचुन आ सवलिया घरे से बना के मिलल लिट्टी आ खजूर खा के बईठले - बईठले किकुर के सुतत- जागत रात काट देहुवे लोग |

अगिला दिने टेरेन दिल्ली पहुंचल | सवलिया , बुचुन के ले के अपना डेरा पर आ गईले | ओजी उनका गावं के आऊरी छह-सात जाना रहत रहुए लोग बुचुन के देख के बुटुला कहलस- अरे सवलिया भईआ , हेकरा के दिल्ली घुमावे ले आईल बार का ?

सवलिया- ना बुटुल , अब इहो एहीजी हमनीए के लगी रही | एकरो के अब एहीजी कवनो नोकरी लगावे के बा |

बुटुल - का हो बुचुन तहरा गांवे मन ना लागल हS | चल एहुजी गांव के ढेर लोग बा , गावे आला मजमा मिली | जा नहा लS , फेनु खाना खाईल जाई | भूख तS लागीए गईल होई |

सवलिया आ बुचुन नहा- धोआ के अपना डेरा (कमरा) के चारु लोग के संगे खाए बईठले | गरमागरम भात-दाल आ चोखा के स्वाद खूबे नीक लागत रहे| तले एही बीच में माकान मालिक बिसेसर के नजर कमरा के बाहर पड़ल चप्पल पर पड़ल |ऊ तुरत बुटुल के आवाज देत कमरा के दरवाजा खोल देहुवन | ई हेतना चप्पल कहां से ?

केहु नया आईल बा का | बीचे में सवलिया कहले हS ई हमार भतीजा आईल बारे , अब ईहो एहीजी रहीहे |

एहपर बिसेसर तीन सौ रुपिया किराया बढ़ावे के कहले | केहुंग मनावत - समझावत अढ़ाई सौ पर बात बन गईल | अब डेरा के भाड़ा एह महीना से ग्यारह सौ से बढ़के साढ़े तेरह सौ हो गईल रहे |

ई सब बात बितला पर फेनु सभे खाए लागल | खा - पी के सवलिया आ बुचुन सुत लेहुए लोग |

अगिला दिने सवलिया आ बुटुल , बुचुन के लेके फैक्टरी-फैक्टरी घुमें लगुए लोग नोकरी खातिर | जब दु-तीन दिन में कहीं बात ना बनल तS उनके गांव के ओही जी रहे वाला अवधेश अपना जान पहचान के एगो सरदार जी किंहा कपड़ा के दोकान में नोकरी लगावे के बात करे खातिर सवलिया आ बुचुन के ले गउवन | सरदार जी किंहा बात बन गईल | अगिला दिन से बुचुन सरदार जी के कपड़ा के बड़हन गोड़ाऊन से दोकानी ले कपड़ा पहुंचावे लगुअन | बेचारे बुचुन के पगार बाईस सौ रुपिया तय भईल रहे | खाए के खोराकी बीस रुपिआ रोजो अलग से | सबेरे नौ बजे से रात के नौ बजे ले |

पहिला दिने काम कके जब बुचुन डेरा पर अईले तS रोआईन मुंह बना के सवलिया से कहले - चाचा हमरा से ई काम ना होई |बड़ी मेहनत बा |मलिकवा आ आऊरों लोग छोट-मोट गलतियों पर डांटत रहेला लोग | आ ओजी हमार मन नईखे लागत |

सवलिया - देख बुचुन बेटा , ई परदेस हS , हमनीओं के जब आईल रहनी सन तS बड़ी गंजन रहे , धीरे -धीरे तु काम सीख लेब तS आराम मिले लागी , आ पैसा बढ़ जाई | घरे पईसा के जरुरत बावे | तु ओजी नोकरी करत रह तलेक ले हम दोसरों जगह तहरा नोकरी खातिर बतिआएम | कहीं ठीक-ठाक नोकरी मिल जाई तS ई छोड़ के ऊ करे लगीह | बाकिर बेटा , कवनो काम से घबराए के ना चाहीं | धीरे-धीरे ई सब काम के तहरा आदत हो जाई | तु आज ले एंहग कवनो काम नईख कईले एह से दिक्कत होता | जा हाथ - मुहं धो लS |

बुटुल खाना बन गईल का ? - सवलिया पुछुवन |

हS अब बनीए गईल बा , चल अब बईठल जाव - बुटुल कहले |

सभे जाना एके संगे बईठ के खाना खाए लगुअे लोग |खातों समय सभे बुचुन के हिम्मत बढ़ावत रहे लोग | खाना खा के बुचुन सवलिया के संगे चदरा ओढ़ के सुत गगईले , बाकिर एतना थकान के बादों बुचुन के नींद ना आवत रहुए | उनका शायद ई लागे लगुअे कि ऊ अब जिनगी में आगे पढ़ाई ना कर पईहें , ऊ कवनों अच्छा नोकरी ना कर पईहें | गांव के सभे साथी ,खेत-दुआर , बगईचा -गछुली उनका आंखी के जरी आवत रहे | केहुंग करवट बदलत -बदलत ढ़ेर रात में उनका नींद आ गईल |

बाकिर आज जवन घटना बुचुन के संगे घटल बा ऊ रोज हमनी के देश में हजारों लईकन के संगे घटता | बुचुन जईसन हजारों लईका रोजों अपना जिनगी में कुछ करे-बने के सपना देखे के पहीलहीं , मैटिकों ले पढ़ाई पूरा करे के पहिलहीं , मोछ -दाढ़ी पर पाम्हीओं आवे के पहिलहीं लाचारी में बाल मजदूर बने , आपन खेत-खरिहान , स्कूल -आंगन , बगईचा -मैदान छोड़ के हरमेशा खातिर बाल परदेसी बने के राहता पर टेरेन में ठुसाईल बड़की -बड़की नगर में पहुंच रहल बारे |

माई दिवस (असित कुमार मिश्र)

सबेरे सात बजे से दस बजे ले हमार कलास रहेला। तीन घन्टा लगातार टर्र-टर्र करेनीं। फेरु घामा में अईला प मुँह झुरा जाला घरे आके मेज प किताब पटकनी हं। कुरता के बटाम खोलते बानी कि तले माई लोटा में पानी आ टटका गूर ले के कपार प खाड़ा...। ईहो न ! रोज के इहे हाल बा। एबेरा कहि दिहनीं हं-का रे ! तनीं सुस्ता लेबे दे। तूं त आवते हाजिर हो जाले। माई कहतिया-आछा ठीक बा। तनी बादे में पी लिहS। ध देतनीं।

मन थाकि गईल बा। देवाली के टेक लेके बईठ जातनीं। आ तकिया उठावते बानी कि एक अँगुरी के बिच्छी लऊकतिया। अब का करीं ? मेज प से कटोरी उठा के सिउठां से बिच्छी के ओमे डाल देतनीं। अब कटोरी में बईठल बिया बिच्छी। हम ओके देखतानीं। पहिले त का जने केतना हाली देखले होखब। कुछु बीतल बाति मन पर गईल। हम इंटर में बिग्यान बर्ग से रहनीं। डाक्टर बने के बड़ा सवख रहे। प्रोजेक्ट वर्क में ईहे बिच्छी मिलल रहे। केतना पढ़नीं एकरा बारे में। लागातार आधा घंटा एक्जामिनर के सोझा बोलले रहनीं हम एकरी बारे में। गरदा हो गईल रहे। सबसे ढ़ेर नम्बर हमरे रहे प्रोजेक्ट वर्क में। आर्थोपोडा संघ में सामिल बिच्छी निसेचन से पहिले नाचे ले। एकरी एही नाच से नर बिच्छू आकर्सित होला। ई एरेक्डिना वर्ग के जन्तु ह। एकर बैज्ञानिक नांव पैलेम्नियस बेन्गालेन्सिस ह...। आह ई समय कहवाँ ले के आ गईल हमके। अब हम साहित्य के बिद्यार्थी बानीं। हमके अब ई बैज्ञानिक बिबेचना से का फायदा बा।

अनगुते मन परता कि 'आखर'खातिर मातृदिवस पर लेख लिखेके बा। बे ! हेतना कठीन चीझु प के लिखी जी। आ हम मर्दाना होके। छोड़S मना क देतानीं। तबले बिच्छी पर धेयान जाता। ई अब खरखरातिया। साईद भागे के फेरा में बिया। छोड़ दी का एके। एकर लईका-लईकी एके खोजत होईहन स। ओह!इयाद आईल! ई त अपना लईकन के जनम देते मर जाले। अपना लईका लईकी खातिर हेतना बड़ त्याग ? तब कांहे खातिर जनमे देले। आपन जीवन बचावे के अधिकार त सभकर बा नु। आह!ईहे त ह मातृत्व सुख। जवन अपनी मरला में भी अपनी लईकन के जीवन देला। खुद मर जाला,एसे कि हमार लईका लईकी दुनिया देखे। ओह ! हमरी आँख में आंसू ! कटोरी उठा के बँसवारी के जरी बिच्छी के छोड़ दिहनीं हं। घरे आ के देखतनीं कि माई बंसखट पर निर्भेद सुतल बिया। ना,आजु ना जगाईब एके। आज अपने खाना निकाल के खा लेब। आ माई उठी त ओसे माफी मांगब। माई रे तू महान बाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

रंगून यात्रा संस्मरण



फोटो साभार :आशीष राय

सुभाव से मधु खाति लरियाईल आ शिकारी वाला सुभाव जाने कि " चरन वे मधु विंदति" माने कि जे चले उहे मधु पाई वा ला नारा के स्वीकार कईल जरुरी बा आ हम अपना के ओहि प्रजाति के मानेनी । गोड़ मे आभासी चाका, आ किस्मत मे धुरि फांके के जुगल जोड़ी हमार तबियत अईसने बना गइल कि हमरा घुमे मे बड़ा माजा आवे लागल। हरमेसा डांण मे फेंटा बान्हि के तइयार रहेनी आ इंकलाब बोली के निकले खाति बेचैन । हमरा गुरुदेव टैगोर के कहल एगो लाइन अबहियो मन परेला कि " आमि जन्मे रोमांटिक, आमि सेई पथे पथिक, जे पथे देखाय चले दक्खिन वातासे, पाखिर इशारा जाय जे पाथेर अल्क्ष्य आकाशे " माने कि हम जनम से रोमांटिक आ ओह राहि के राही ह ई जवना ओर हवा के इशारा होला आ जवना अनंत आकास के ओर चिरई इशारा करेली सन ।

उपरा लिखलका गुरुवर के कहल बात के रउवा सभ हलुक मे ले सकेनी कांहे कि उ माजा देबे वाला बात नइखे अईसन हम मानत बानी आ उमेद बा कि रउवा सभ के भी अईसने लागत होई । हातना लाम चाक बतियावला के माने इहे बा कि हम खुब भटकेनी बाकि अपना अनुभव के शब्द रुपी फुल बना के गुहे यानि कि लिपिबद्ध करे मे एक नमर के असकतियाह हई आ डर लागेला कि ओह अनुभव मे शब्द अबर भा कम जनि परि जाउ । काल्हु बतकही के बीचे शिखा वाष्णेय जब रंगून के बारे मे हमरा से लिखे के निहोरा कईली ह त सोचनी ह कि चलS कोशिश कइल जाउ, का पता सियाही बहि निकले आ कलम हमरा के देखि के आपन धनि मनावे लागो ।

मार्च के महीना मे हमरा लागल कि बिजनेस के सिलसिला मे हमरा मलय देस (मलेशिया) आ म्यांमार (वर्मा) जाये के बा । कुआलालमपुर आ यंगून (रंगून) हमरा राहि के तई पड़ाव रहे जहाँ जाये के ही रहे । रंगून के बारे मे हम अतने जानत रहनी कि ओजुगा



आशीष राय

गाजीपुर , युपी के रहे वाला आशीष राय जी , हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य जगत मे एगो जानल मानल नाव हई , इँहा के पेशा से इन्जिनियर बाकी व्यवसायी हई । व्यसाय के सिलसिला मे देस-विदेस के यात्रा प रहेनी । एह घरी इँहा के कानपुर मे बानी ।



जाये वाला हर पति के अपना मेहरारु से " मोरे पिया गये रंगून, सुने खाति टेलीफोन करे के पड़ेला। आ अंतिम मुगल शासक के फिरंगिया भारत से बगा देले रहले सन त उनुका रंगून जाये के परल रहे। हंसी मजाक से अलग रंगूनके बारे मे कवनो बरिआर जानकारी ना रहला के व जह से कई गो संघ तिया लोगन के फोन करे के परल आ संघतिया लोगन से सुनला के बाद शाकाहारी खाति तरसे वाली हमार जीभी सुखे लागत रहे। कीरा-फतींगा खाये के शौखीन देस मे हमरा लेखा घास फुस खाये वाला के लाज बचावे खाति हमार अर्धांगनी हमार मेहरारु किचन मे पलासी आ पानीपत के युद्ध लड़े लगली आ एगो सांच हिंदुस्तानी यायावर के यायावरी खाति अउलाहे जेवानर बन्हा गईल ।

बेरा प हम दिल्ली के इंदिरा गांधी हवाई अड्डा से मलेशिया एअरलाईंस के हवाई जहाज मे बईठ गइल रहनी आ उहो बेरे प कुआलालम्पुर खाति निकल गइल। एने कई दिन से हवाई जहाज के गिरला भुलइला के घटना दिमाग मे घुमत रहे बाकि बरिआरी ओकनी के एक लंगे सरिहावत, मुस्कियात खुबसुरत चेहरन के नमस्कार देखत मन हरिअर हो गईल। एहि मुस्कि प त कवि लोग मय लुटा दिहल, अईसे हमहू कबो कबो उपर झांप लिखिये लेनी त फेरु हम लुटवनी त का लुटवनी। अगिला पांच घंटा खात पिअत गाना सुनत सिनेमा देखत निकल आ मलय देस पहुंचे के खुशी हम अपना मोबाईल के फ्रंट (एह घरी सेल्फी कैमरा कहाता) कैमरा मे देखि के गील भईनी । कुआलालम्पुर के एअरपोर्ट, गजबे लागत रहे,हम त बस एक टक ओहि के निहारे मे लागल रहनी (हम पहिलहु आईल बानी आ हर बेरि हमार इहे हाल रहेला)। तलेले हमार एगो सहयोगी जे हमरा के होटल पहुंचावे आईल रहले, उनुका आवाज से हमार एकटक लागल आंखि राहि छोड़लस आ हम उनुका संगे निकल गईनी ।

अगिला दू दिन बिजनेस के काम मे बुड़ल रहनी आ मलय देस के पहिले के यात्रा के वजह से लगभग मय चीझू देखल रहे त उहे कुल्हि दिमाग मे घुमत रहे। एहि कुल्हि मे रंगून जाये के दिन नजदिका गइल, आ एक हाली फेरु से कुआलालम्पुर एअरपोर्ट प हम रहनी। मय मिला के 2 घंटा के यात्रा रहे, आ 2 घंटा बाद जब हम रंगून एअरपोर्ट प रहनी त हमरा पारपत्र (वीजा) खाति जवन कि आन एराइवल (पहुंचला प मिले के सुविधा) रहे, हम रेरि मे खाड़ हो गईनी। वीजा बनवावे मे लगभग 1 घंटा लागि गइल। म्यांमार से भारत के सीमा लागल बा, कई शताब्दी से दुनो देस के बीचे सम्बंध रहल बा , आवाजाही रहल बा बाकि पिछिला कुछ समय से चीन के प्रभाव के कारन ई सम्बंध तनि थीरा गइल बा । जइसन कि पहिलही से हमरा लागत रहे, एअरपोर्ट कुछ खास ना रहे, साधारण एअरपोर्ट ओह देस के आर्थिक अवस्था के बारे खुदे कहत रहे। एअरपोर्ट से निकलला के बाद हमरा बिजनेस के सहयोगी श्रीमान लुइस महोदय अपना गाड़ी ले के आईल रहले, आ उहे हमरा के, हमरा रुके वाला जगहि प, जवन एअरपोर्टसे लमसम 20 किलोमीटर प रहे ले के अईले। राहि मे बतियावत घरी लुइस जी बतवले कि होटल से आधा किलोमीटर प हिंदुस्तानी रेस्टोरेंट बा जवना के नाव "कोरियेंडर लीफ" ह। हिंदुस्तानी ओह रेस्टोरेंट के चला रहल बा आ स्वादिष्ट शाकाहारी खाना ओजुगा रहे वाला हिंदुस्तानी लोगन खाति आकर्षण के केंद्र बा। रउवा सभे बुझि सकेनी कि नाव सुनते हमरा चेहरा प खुशी के लाली पसर गईल रहे।

होटल चहुंपला के बाद नहा धो के सोचनी की मेहरारु के यंगून पहुंचला के सुचना पठा दिही, आ जानल पहचानल आपन उ गाना भी सुन ली , बाकि ई हो ना पावल, कांहे कि

मलय देस मे नीमन से काम करत हमार फोन रंगून अईला के बाद खतमे दाखिल रहे । अंतराष्ट्रीय रोमिंग के सुविधा प एजुगा बैन बा , आ एहि बात से हमरा दिमाग मे घुमे लागल कि म्यांमार कांहे एगो बंदिश वाला देस बा , आ बड़हन भौगोलिक क्षेत्रफल के संगे संगे अउलाह मात्रा मे खनिज पदार्थ रहला के बादो इ देस कांहे अतना पिछड़ल बा । एजुगा देखावटी लोकतंत्र बा जवन पहिले के सैनिकन के चलते, अधिकतर नागरिकन के अधिकार के सुली प चढा देले बा । सरकार के खिलाफ कवनो विचार के कुंचे खाति ओजुगा के कानून आ ओजुगा के सैनिक सरकार फरहर बिआ। खैर एहि कुल्हि सोच मे हमरा मन परुवे कि व्हाट्स-अप से बतियावल जा सकेला बाकि ई सुविधा भी आई फोन प अभी आईल नइखे। बाद मे ई सोचाहट भउवे कि होटल के फोन से फोनिया लिहल जाई, ओकरा बाद एगो लोकल सिम कीन लिहल जाई ।

हमरा लागत बा हम ढेर गहिराह बतकही करे लगनी, का करी, तकनीकी के विद्यार्थी रहल बानी एकरा बादो हमरा इतिहास आ संस्कृति मे घनघोर रुचि बा आ अईसन सामयिक भटकाव त रउवा सभ सहिये जाईब । बर्मा के मरदाना लोगन के स्थानीय पहिरावा लुंगी आ शर्ट ह । एजुगा शर्ट के उपर लुंगी ओइसही बन्हाले जइसे हमनी के ओर पैंट के उपर शर्ट, बस लुंगी प बेल्ट ना पहिरे ला लो। मेहरारुन के पहिरावा घाघरा चोली ह जवन दक्षिण भारत के पहिरावा से मैच करेला। स्थानीय पहिरावा के शवख अतना बा कि सरकारी आ निजी कम्पनी मे काम करे वाला कर्मचारी आ अधिकारी लो भी इहे पहिरे ला। लईकिनियन के छोट होत पहिरावा भले पछिम के खोज होखे बाकि दक्षिण पुर्व देसन मे ओकरा के बरिआर चुनौती मिल रहल बा । हमरा देखे से भड़काउ भा ओइसन पहिरावा एजुगा खाति कवनो माने ना राखेला। एजुगा के जेवन के बारे मे हम ईमानदारी से कहि तएक दु गो रेस्त्रा के मीनू देखला के बाद, पुछ ताछ कइला के बाद हमरा लागल कि एह प उहे लो लिखो जे हमरा बाद आई । मय मीनू मे कीरा फतींगा,चिरई चुरुंग के बनल खाना के बारे मे पढला के बाद हमारमन भिनुक गउवे, आ सोचे लगुवी कि एगो शाकाहारी जीउ का जाने कतना अनुभव से बांचले रहि जाई ।

पुरान रंगून के नाव बदल के यंगून कई दिहल गईल बा , जवन एजुगा के मेन नदी ह। नदी प एगो पूल बनल बा जवना के देखि के हमरा आपन हावड़ा पूल मन परि गउवे, बाद मे पता चलुवे कि एकरो के अंग्रेजवे बनवले बाड़न स। सांझि के पांच



बजे लागल रहुवे, हमार स्थानीय सहयोगी मिस नेय रहुवी, उ अंग्रेजी भाषा मे बड़ा तेज रहुवी आ एहि वजह से उ हमार दुभषिया बननि गउवी।

उहे रंगून के खास खास देखे वाला जगहि के बारे मे आ बिश्व प्रसिद्ध बुद्ध के मंदिर श्वेडेगन पैगोड़ा देखे के कहुवी। शहर के बीचो बीच मे सिंगतुरा पहाड़ी प बनल एह सुनहरा बुद्ध के मंदिर के उंचाई लमसम 100 मीटर बा, जवना मे 6000 किलो के सोना के प्रयोग भइल बा । एह मंदिर के गुम्बद शहर मे केनियो से लउक सकेला । ई मंदिर म्यांमार मे बौद्ध धर्म के आस्था के देखावेला। मंदिर के आहाता मे बिदेशी पर्यटकन खाति फीस लागेला जवन 10 डालर ह । मिस नेय, तीसरा शताब्दी मे बनल एह मंदिर के बनावे से ले के एकर ऐतिहासिक जानकारी हमरा के देहुवी, बदला मे हम हिंदुस्तान मे बौद्ध धर्म के उदय आ फेरु प्रभा हीन भईला प आपन ज्ञान झरुवी।

मंदिर के आहाता मे एगो युरोपियन जोड़ा के बुद्ध के बारे मे बतावत एगो गाइडके टोकि के कुछ देर खाति हम आपन ज्ञान जवन सारनाथ आ बोध गया से मिलल रहुवे झारे लगुवी आ संगे संगे सारनाथ के पड़ोसी भईला के आपन शान, ज्ञान के रुप मे ओह लो के सोझा रखुवी, जवना के सुनि के मिस नेय

हमरा के मंदिरवे मे बौद्ध भिक्षू बने के सलाह दे देहुवी। बुद्ध के भव्य मुर्ति के देखि के, हमरा उनुकर मुर्ति पुजा विरोध वाला सोच के बात अपना मने मे राखे के परुवे कांहे कि कहला प धार्मिक भावना आ आस्था प घाव लागे के खतरा रहुवे।

अपना अधजल गगरी छलकत जाय वाला ज्ञान प मने मन खिलखिलात कोहनात मंदिर मे 3 घंटा बीता के आपन आध्यात्मिक थातीके अपना संगे ले के होटल मे आ गँउवी।

अगिला दिने अनगुते हलाहे उठि के हम पैदले टहरे चलि गंउवी। साफ सुथरा चाकर सड़क, धुल धुंवा धक्कड़ से दूर, सगरे से सजावल चौराहा , खुबसुरत पार्क, देखि के लागत रहुवे कि अबहियो एजुगा के लोगन के हरिअरी खटके ला ना । हमरा मालूम ना बाकि दुनिया भर के कई गो शहर देखला के बाद हमरा ई पहिला शहर लउकुवे जवना मे कानूनी रुप से दुपहिया आ तिपहिया गाड़ी बैन बाड़ी स। सिगनल प कई हाली गाड़ी के लमहर रेरि लउकुवे बाकि मय एक लाईन मे, केहू के पहिले निकले के अकुताई ना आना ही कवनो लाटसाहेब पेंउ पांउ हार्न बजावत लउकुवन । तेल एजुगा हमनी के देस से आधा दाम मे बा । गरीब देस भईलाके बादो सड़क प गड़हा ना लउकुवे,हो सकेला भ्रष्टाचार के इंडेक्समे म्यांमार नीचे होखे। फिरंगियन के बनावल मकानन के संगे संगे आधुनिक तरिका से बनल उंच उंच मकान, यातायात के पालन करत सतर्क नागरिक, शापिंग माल के फूड कोर्ट मे अंतराष्ट्रीय खान-पान आ ओकर गमक, स्ट्रीट फूड के शौखीनी से भरल रंगून के गली लउकुवे बाकि शाकाहारी खाये वाला के मुह रिगावत। तनकी देर मे काम प जात लोग लउके लगुवे, जवना मे लगभग 70 परसेंट मेहरारु रहुवी स जवन देखावत रहुवे के समाज महिला सश्क्तिकरण के ओर डेग धई रहल बा । भाषा के समस्या से हमरो भीड़े के परुवे, जब हम फल के दोकानि से संतरा कीने के कोशिश करुवी त इशारा मे बात करे के परुवे। अंग्रेजी जाने वाला लोग एजुगा कम बा, शायद अबहिनो स्कुलन मे अंग्रेजी ना पढावल जाला भा कम स्कुलन मे पढावल जात होई। बहरी घाम कड़ेर होखे लगुवे त हम होटल आ गंउवी आ नहा धो के उपवास तुरे खाति डाईनिंग हाल के ओर बढि गंउवी।

मयांमार आपन नया साल के स्वागत के तइयारी मे जुटल रहुवे,जवना के " वाटर फेस्टिवल " के नाव से जानल जाला । अगिला 2-3 दिन बाद एजुगा के मय सरकारी, प्राईवेट संस्था संस्थान 10 दिन खाति बन हो जइहन स। एह तेवहार के रुप रेखा अपना ओर के फगुआ से मिलत जुलत ही बा। सड़क के किनार प बनल मचान से, सड़क प आवे जाये वाला लोगन प पानी फेके, पानी से भेंवे के रेवाज बा। चुकि मयांमार के समाज, कट्टर बौद्ध समाज ह एहि से एजुगा अल्प –संख्यक लोगन खाति ओतना सौहार्द नइखे । एहि से एजुगा बेसी तेवहार ना मनावल जाला।

मयांमार मे अंतिम दिन रहे, घर से निकलला हफ्ता भर से बेसी हो गइल रहे, अब घरे जाये खाति मन बेचैन होखे लागल रहे। आपन बिजनेस के काम हाउ हाउ ओरियाई के ओह जगहि प जाये के रहे जंहवा हमनी के इतिहास के पाना के एगो अजीम शख्सियत आ अंतिम मुगल आपन निर्वासित जिनगी बीतवले रहले आ अंतिम सांस ले ले रहले। आजू मिस नेय के जगहि प मिस थंडार रहली आ उनुकर अंग्रेजी हमरा के आश्वस्त करत रहुवे कि हम उनुका से आपन बात ठीक से कहि सकेनी।

पेशा से केमिकल इंजिनियर मिस थंडार के अंतिम मुगल के बारे मे कुछउ जानकारी ना रहे। रास्ता मे जात घरी हमनी के एगो रेस्त्रा प रुकुवी जा , मिस थंडार अपना खाति मांसाहारी खाना आर्डर करुवी आ हम बहुत सोच समझ के



अपना खाति शाकाहारी नुडल्स । नुडल्स हमरा हिसाब से तनी बेसी पनिगर रहुवे, जवना के चमच आ कांटा से खाईल दुरह काम रहुवे। पेट भरि गइल बहाना कई के हम ओकरा के ओहि पानी मे उछाह मारत छोड़ि के अंतिम मुगल वाला जगहि खाति निकल गंउवी जा । 10 मिनट गाड़ी चलला के बाद एगो मस्जिद लेखा घर के सोझा गाड़ी रुकुवे त सोझा मौलवी साहब के ई कहत कि “तशरीफ लाइये “, उर्दू सुनिके तनकी देर खाति अपना देस जइसन लगुवे । कही त रेगिस्तान के बंजर क्षेत्र मे हरिअरी । खैर हम मौलवी साहब के संगे संगे उनुका पाछे पाछे जाये लगुवी, एगो हाल मे पहुंचते, मल्लिकाये हिंदुस्तान जीनत महल के कब्र,उनुका दुनो बेटा के कब्र से घेराईल, आ ओह हाल के देवाल, बदनसीब बादशाह के अंतिम दिनन के बेबसी के कहानी सुनावत रहुवे ।

एगो सम्राट के अपना अंतिम दिन मे अपना देस से निकाला हो के दफन खाति दु गज जमीन ना मिले के बेबेसी के आलेख पढि के शायदे कवनो पथर दिल के करेजा ना पसीजी । हाल से उतरत खींढी हमरा के अंतिम मुगल के कब्र ले, ले के गउवे । अजीज शायर सम्राट के हम पुष्पांजलि भेंट करुवी । इतिहास के एजुगा हम जीअत देखुवी,सांझि हो गइल रहुवे, हम अपना होटल खाति निकल गंउवी, कांहे कि हमरा लउटे के रहुवे अपना देस,अपना वतन , हिंदुस्तान खाति ...

लघु कथा

कुक्कुरजात

"मुखियाजी, ई स्साला रॉकिया 'कुक्कुरजात' के इज्जत खराब करे प तुलल बा."

"अरे का भइल रे शेरुआ..... तनिका सोझ-सोझ बताउ.."

"मुखियाजी, ई ससुरा काल्हु राह चलता एगो छोट लइका के बेमतलबे काटि लिहलस"

"हँ रेऽऽऽ ? सही बात ?....," मुखियाजी गरजले.

"मुखियाजी, गलती भ गइल.. दरअसल उ लइकवा के गोड़ से एगो ढेला लड़ि के हमरा लागि गइल आ हमरा बुझाइल जे ऊ जान-बुझिके मरलस हऽ. एही भरम में हबका गईल."

"हूँऽऽऽ.. समझ-बुझि के नू कवनो काम करे के चाहीं, ना त हमनी भा 'आदमजात' में का अंतर रहि जाई ? ओइसहूँ ई बात पंचायत में कई हाली कहाइल बा जे मेहरारू, छोट लइकन आ बूढ़-पुरनिया के गलतियों प नइखे काटे के.. बाकिर तहनी लउंडा-लफाड़ी के त कुछऊ सुनाते नइखे.. दिन-प-दिन तहनी प 'अदमीपन' हावी भइल जा रहल बा. हम फेनु कहि रहल बानी.. सुधर जा स, ना त कहियो 'अदमी' के मउअत मरबऽ सऽ.."

"माफ़ क दीं मुखियाजी, आगा से अइसन गलती कबो ना होखी."

असर

पचीस बरिस पहिले राजेश्वर सिंह गाँव छोड़ बम्बई के एगो उद्योगपति के दमाद बनि ओहिजे बस गइले. हाइ-फाइ माहौल में जनमल आ पढ़ल-बढ़ल सिंह साहब के बेटा जिद करे लागल जे ऊ होली गाँवे में मनाई. बबुआ केनियो पढ़ लेले रहे जे गाँव में होली मस्त होला.

एक हप्ता के बाद बबुआ होली मना के वापिस बम्बई चहुँपल आ चहुँपते अपना डैड आ मॉम के गोड़ धइ के परनाम कइलस. हाय-बाय करे वाला लइका प गाँव के रंग आ बसंती बयार के असर साफा लउकत रहे.



गणेश जी बागी

www.bhojpurisahityangan.com

लड़ाइयो में जूझे किसानवे के बेटा

लड़इयो में जूझे किसनवे के बेटा
मड़इयो में ओकर रकतवा पिसाले
जिनिगिया किनाले जिनिगिया बिकाले।

आज भोजपुरी के यशस्वी कवि जगदीश ओझा सुंदर जी के याद आवत बा। अबूझमाड़ के जंगल में चाहें लेह लद्दाख में मरे वाला कवनो भी जवान...अम्बानी आ अडानी के लइका ना होला...उ बलिया गाजीपुर बक्सर जइसन गाँव देहात के कवनो किसान के लइका होला। जेकर बाबू जी करजा लेके ओकरा के पढ़वले रहेलन...की उ फौज में भर्ती होके उनकर सपना पूरा करी...इहाँ गरीबी आ आभाव के मड़ई आपन मेहनत के बांस आ पतलो से छावेलन। ..बाकी दुनू जगह किसान के दुरदसा बा. सीमा पर भी आ खेत में भी...एक जगह बेटा मरेला एक जगह बाप।

एक तारीख के दुनिया विश्व मजदूर दिवस मनाई। कभी दुनिया के साम्यवाद के मायने समझावे वाला मार्क्स एगो नारा दिहले की..."दुनिया के मजदूरों एक हो" लेकिन आज दसा बदल गईल बा.हाल इ बा की मजदूर से भी बत्तर हाल आज किसान के हो गइल बा..रउरा आठ घण्टा मेहनत मजदूरी करम त ओकर पइसा रउरा के मिल जाइ। बाकी कर्जा लेके हाड़ तोड़ मेहनत से अन्न उपजाए वाला के गारंटी नइखे की खेती से ओकर कवनो लाभ होई की ना.. सोचे वाला बात बा...अबकी बलिया गइल रहनी जहिया गइनी तहिया मंझउवाँ गाँव में एक आदमी आत्महत्या क लिहल। तीन दिन में तीन आदमी आपन जान ले लिहल...बाकी देस के बात छोड़ दिहीं। आखिर काहें? दू महीना में लगभग दू हजार किसान आपन जान दे देहले।

एकही कारण बा...सपना जब टूट जाला त जियल बेकार लागेला..केहू सोचले होइ की उ गेंहू बेच के बेटी के बियाह करी। केहू इहो सपना देखले होइ की एह बेरी के मड़ई छवा ली.केहू लइका के फीस जमा करी...सभ के कवनो ना कवनो अरमान तबे पैदा हों जाला जब उ खेत में बीज रोप देला..
लेकिन आखिर में जब अनाज काट के घरे ले आवे के बेरा होला..त कुदरत के कहर से ज्यादा उ सतावेला जे रहम करे के सरकारी ठीका ले लेहले बा।

अब कवनो किसान जान ना लिही त का करी। फिर भी सियासी रोटी सेक के आपन कुर्सी चलावे वाला लोग ओकरा लाश प राजनीती कइला से बाज ना आवेले..

कुछ दिन पहिले दिल्ली में गजेन्द्र आत्महत्या क लिहले। .त सबके होश उड़ गइल..उहो रोवे लागल जे गेंहू आ जौ ना चिन्ह पाई.. उहो अपना के किसान बताई जेकरा ई पता नइखे की कवना खेती में कब कब पानी खाद दिहल जाला। लेकिन एसी में बइठ के गाँव के विकास के चिंतन करे वाला लोग के झकझोरे खातिर इ जरूरी बा की रउरा दिल्ली में आत्महत्या करीं ना त केहू प कवनो असर ना पड़ी...किसान आज हाशिया प बा...मजदूर से भी बत्तर हाल में..केहू दुःख दर्द बुझे वाला नइखे...असमय बारिश पाला..से ओकर कब फसल नुकसान हो जाइ ई भगवानो नइखन जानत। दोष केकर बा एकरा प लम्बा बहस हो जाइ।

बस राजेश जोशी के एगो चार लाइन के कविता से हम सब असमय काल के गाल में समा गइल किसान भाई लो के श्रधांजलि अर्पित करत बानी।
देस के बारे में लिखल गइल एक हजार निबन्ध में एगो अमर वाक्य फेर से दोहरावत बानी..
भारत एगो कृषि प्रधान देस ह
दोबारा ओके पढ़े खातिर जइसही आँख झुकावें नीं।
तइसही लिखल पावेनी की
की पिछला कुछ वर्ष में डेढ़ लाख से अधिक किसान आत्महत्या क लेले बाड़े।



अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। फिलहाल बनारस मे निवास बा।

कहानी अउरी कहानी के नायक

लोग कानाकानी सुनल । मुंहा- मुँही कहल । आ कहानी के महक हावा में फइल गईल । ऊँघाईल-अलसात गांव एकबैक जागि गईल । लईका-सयान-मरद-जनाना सब लोग रस ले-ले के बतियावे लागल ।जेतने मुंह ओतने कहानी उपट गईल ।केहु धरफसरी करत देखले रहे त केहु चूमाचाटी करत । एहुतरे पिछला होली में उ दुन्नून के आपस में अझुरा के रंग लगावत खुलेआमे लोग देखले रहे । एह से कहानी के केहु झूठ ना मानत रहे ।

सब लोग के इशारा उ रहरी के खेत के तरफ रहे, जवन कानून के भाषा में मौका- ए वारदात रहे ।मौका-ए-वारदात अपनहि में फाँफर आ गोट दुनू लउको ; एही से कहानी के असलियत भी अपने आप में फाँफर आ वजनदार दुन्नु बुझाउ । चनिरका काका मौक़ा-ए-वारदात में तहकीकात करे खातिर ढुक गईले । उनका उ जगह के मुआयना करे के रहे ,जहाँ अनेत भईल रहे ।चनिरका काका अपना गांव के हर लईका-लईकी पर नजर राखेले । ई घटना उनका आँखि के सोझा से कैसे बिचिल गईल , एह बात के उनका बड़ा अफ़सोस रहे । के लेखां-दुनी उनकर मन हो गईल ।ई बात के परवाह ना करते हुए कि रितावा उनकर भतीजी लागेले , उ रहरी के खेते में लगले गरियावे । जब उनकर गारी केहु ना सुनल , जब उनका मौका-ए-वारदात से कउनो सुराग ना मिलल ; त घिरना से ,कि बिखि से , कि जुगुप्सा से , उनका लघुशंका लाग गईल । उ मौका-ए-वारदात पर लघुशंका कS के चल अईले ।

बुधना के मेहरारू हाथ झमका-झमका के सगरो गांव में कहत फिरे -"ई अनेत के कवनो ओर-छोर बाS ? पहिले रात के अन्हारा में , आँख के अन्हे ई कुल्हि काम होत रहल हS ; अब अइसन ज़माना आ गईल बा कि खुलेआम .....।"

ओकर लिपस्टिक के चटख रंग आ कंगन के झमक के सोझा मरद लोग के बुद्धि हेरा जाऊ आ जानना डिपाटमेंट फरके से सलाम करे ।कहानी के जेतना रसगर बुधना के मेहरारू बना देहले रहे ओतना रसगर का केहु बनायीं ?

जीतन अहीर रामअवध से पंचाईती में हार गईल रहले । आपन हार के बदला चुकावे खातिर जीतन के मौका मिल गईल । कहानी त सब लोग सुनावते रहे बाकिर दुश्मन के जरला पर नून डाले खातिर जीतन कहले --"का हो रामअवध तहार भईसिया पाल खोजतिया काs ?" रामअवध मुड़ी निहुरा के चुपचाप टकस लेहले ।

गांव में जवन कहानी के चर्चा रहे उनको सुने के मिल गईल रहे । बाकिर करSस त काS करSस । अपने बहिन कुलबोरनी हो जाए त गांव नगर हंसबे नु करी ? बाकिर जीतनवा के कहल उनकरा करेजा में बरछी नियर लाग गईल । फनफनाते घरे गईले आ रितावा के लाते मुक्के मारे लगले -- "कुलच्छनी ,कहाँ-कहाँ जाके मुंह में करिखा पोतवावत बाड़े ? गाव -नगर में हमार इज्जत के मटियामेट करि देहले । "
"हम का कईले बानी ?" --- फेंकरत रितावा बड़ी मुश्किल से कुछू बोल पवलस ।
" काS कईले बाड़े ? ....तोरा नईखे पता ? सगरे गांव कहत बा जे बिलास के सार के संघे ....." --- काS कहस रामअवध एकरा आगे..... ? अपने बहिन के छहत्तर से बिखिया गईले । एगो टांगी उठा के मारे धवले-- "रहु, तोरा के मुवाईए देतानी। ना ते रहबे ;आ ना झगरा के जर बाँची ।"
"हS मुवा दS ।तहरो जिमेदारी ख़तम हो जाई ।"- नागिन लेखां फुफकारत रितावा सांचहूं सामने आ गईल ।
उ त भल मानल जाऊ राम अवध के मेहरारू के , जे बीच में आ के राम अवध के हाथ से टांगी छीन लेहलीं ।ना त



विंध्य मिश्र

सिवान, बिहार के रहे वाला विंध्य मिश्रा जी भोजपुरी में कविता आ कहानी लिख रहल बानी । आखर पेज पे इहाँ के कविता लगातार प्रकाशित होला। ए घरी इहाँ के तेजपुर आसाम में रह रहल बानी।

रामअवध रितावा के नट्टी काटिये देहले रहिते । आपन खींस केहु तरे रोकत रामअवध घर से बहरा निकल गईले । कहानी के अंत खोजल जरूरी रहे ।

भौजाई के दुलरुई रहे रितावा । बाकिर गाँव नगर के अफवाह से भौजाई के मन खट्ट हो गईल रहे ।तनी डाँटिए के पुछलि – "रीता बबुनी , गांव नगर के लोग जवन कहत बा तवन झूठ कहत बा का ?"
सिसकत-सिसकत रितावा पुछलस --"लोग काS कहताS ,भौजी ?"
"इहे जे तू बिलास के सार के संघे रहरी के खेत में ..... ।"
"तहार मन साँच पतियाताS एह बात के, भौजी ?" अब रितावा के सिसकी बंद हो गईल रहे ।
-"भौजी हम तहार कसम ..... अपना मरल माई बाप के कसम खा के कहत बानी ।हम खाली बिलास के सार से एतने पुछले रहनी कि अभी ले कुंवारे बाडS का हो ?..... आ ओहिजा गांव के अउरी केहु ना रहे ।खाली हमार सहेली लोग रहे ।हम मजाक कईले रहनी भौजी । हम ना जानत रहनी जे एतना छोट बात के लोग भारी बतंगड़ बना दिही ।"
भौजाई अपना ननद के बढ़िया से जानत रहली बाकिर तबो उदास मन से कहली –"हम लोग के मुंह नईखी नु बंद कर सकत । अब शादी बियाह में दिक्कत होई, बबुनी! लोग कई गो कहानी निकलले बा .....।"
कहानी के नायिका अचम्भा में पर गईलस ।

एही बीचे राम अवध चनिरका काका के लग से वापस लौट अईले । रितावा के बियाह चनिरका काका के सर -पूत से फाइनल कर के । भलही दूल्हा पत्नीहंता आ दुहाजू रहे ;कहानी के दोसरा गांव में फइलला से पहिले रितावा के बियाह निपटा देहल जरूरी रहे..... ।

बियाह तय भईला के बाद से कहानी के महक हावा में धीमा परे लागल । मौक़ा-ए-वारदात रहरी के खेत काट दिहल गईल । नियत समय पर बारात आईल आ रीता के बियाह चनिरका काका के सर-पूत से ख़ुशी ख़ुशी हो गईल । बारात ओहि रहरी के खेत में टिकावल गईल ।बारात के हलचल में मौका-ए-वारदात के ठूंढही --खूंटी सब कचरा- पिचरा गईल । हावा में कहानी के जगह पूड़ी मिठाई के महक फइल गईल । एह तरह कहानी ख़तम हो गईल , बाकिर कहानी के नायक के हउए - एकर तलाश अबहिंन लेक जारी बा ।



www.bhojpurisahityangan.com

सौ साल के भइल भोजपुरी पत्रकारिता

पंकज भारद्वाज

आज से सौ साल पहिले सन् 1915 में 'बगसर समाचार' के शुरूआत भइल रहे । एकरा के भोजपुरी पत्रकारिता के क्षेत्र में पहिला कदम मानल जाला । बक्सर के रहेवाला मास्टर जयप्रकाश लाल के एकर श्रेय जाला । ऊ गांधीवादी क्रांतिकारी रहन आ अंगरेजी हुकूमत से लोहा लेबे खातिर ही समाचार पत्र निकाले शुरू कइलन । तब पूरा देस में अंगरेजन के खिलाफ बगावत के बयार बहत रहे । 1914 में पहिलका विश्व युद्ध शुरू हो चुकल रहे । भारत के साथे-साथे दुनिया के कइगो गुलाम देसन में आजादी के आग लहक गइल । गुलामी के जिनिगी से तंग आ चुकल लोगन के मन में आजादी के सपना हिलोर मारे लागल । भारत में भी अंगरेजन के खिलाफ गोलबंदी तेज हो चुकल रहे । अइसने में मास्टर जयप्रकाश लाल शाहाबाद के लोगन के अंगरेजी सत्ता के खिलाफ एकजुट करे खातिर 'बगसर समाचार' निकाले शुरू कइलन । बतावल जाला कि एकरा चलते शाहाबाद के पूरा इलाका में क्रांति के आग एगो अलगे रूप ध लेहलस ।

मास्टर जयप्रकाश लाल बक्सरे के रहे वाला रहन । हालांकि तब शाहाबाद जिला रहे आ बक्सर ओकर एगो अनमुंडल रहे । बक्सर के डुमरांव थाना के चकनी गांव में 28 मार्च 1888 के उनकर जनम भइल रहे । फिलहाल उनकर गांव डुमरांव अनुमंडल के सिमरी थाना में परेला । जयप्रकाश जी के बाबूजी के नाम रामानंद लाल रहे, जे डुमरांव महाराज के एगो कर्मचारी रहन । इनका तीन लइका-जयप्रकाश लाल, हरिहर लाल आ उदय प्रकाश लाल । जयप्रकाश जी सबसे जेठ रहन । उनकर पढ़ाई-लिखाई भोजपुर मदरसा में भइल । एहिजे से ऊ उर्दू आ फारसी के पढ़ाई कइलन । एकरा बाद डुमरांव हाई इंग्लिश स्कूल में इनकर दाखिला भइल, जहां से एंट्रेंस के परीक्षा पास कइलन । एकरा कुछ दिन बाद ऊ बक्सर के भूमिहार ब्राह्मण मिडिल इंग्लिश स्कूल में शिक्षक के पद पर बहाल हो गइलन आ मास्टर साहेब के नाम से मशहूर हो गइलन । बाद में ऊ एह स्कूल के हेडमास्टर बन गइलन । मास्टर साहेब हिन्दी, भोजपुरी, संस्कृत, उर्दू, फारसी आ अंग्रेजी जइसन भाषा के बढ़िया जानकार रहन । कहल जाला कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन उनका से अंगरेजी सीखे बक्सर आइल रहन ।

खैर, 1905 में जब बंग-भंग आंदोलन भइल, तब मास्टर साहेब के उमिर मुश्किल से सत्रह-अठारह बरिस रहे आ ऊ हाई स्कूल में पढ़त रहन । लेकिन, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के भाषण सुन के उनका पर अइसन असर भइल कि एहिजे से उनका जीवन में नया आ क्रांतिकारी मोड़ आ गइल । ऊ अंगरेजन के खिलाफ छिड़ल लड़ाई में सक्रिय हो गइलन । 1908 में राजेंद्र बाबू, जे आजादी के बाद देस के पहिला राष्ट्रपति बनलन, अपना बड़ भाई महेंद्र प्रसाद के साथे डुमरांवे में रहत रहन । राजेंद्र बाबू से जयप्रकाश जी के एहिजे पहिला मुलाकात भइल । 1912 में जब बिहार बंगाल से अलग भइल, तब जयप्रकाश जी खूब खुश भइलन । बक्सर में 'यंग मेन एसोसिएशन' के गठन कइलन, जेकर मुख्य मकसद रहे भोजपुरांचल के जवानन में राष्ट्रीयता के भावना के संचार कइल । एह बीच महात्मा गांधी भी दक्षिण अफ्रीका से भारत लवट आइल रहन । गांधी जी के आह्वान पर पूरा देस अंगरेजी हुकूमत के खिलाफ लोहा लेबे खातिर एकजुट होखे लागल । देस के कोना-कोना में क्रांतिकारियन के जुटान होखे लागल । बक्सर में जयप्रकाश लाल भी मास्टर के नोकरी छोड़ आजादी के लड़ाई में कूद परलन । ओह घरी टेलीफोन-मोबाइल के जमाना ना रहे । अखबार, पत्र-पत्रिका के भी ओइसन धमक ना रहे । अइसना में क्रांतिकारियन के आपन



पंकज भारद्वाज

संराव , बक्सर , बिहार के रहे वाला पंकज भारद्वाज जी , प्रतिष्ठित हिन्दी दैनिक मे वरिष्ठ पत्रकार बानी , भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य प बरिआर पकड़ रखले बानी । बक्सर के साहित्यिक इतिहास प गहिराह जानकारी रखले बानी । एह घरी इँहा के बक्सर मे बानी ।

बात लोगन तक पहुंचावे में बहुत दिक्कत महसूस होत रहे। एहसे निपटे खातिर आ भोजपुरियन में क्रांति के भावना भरे खातिर मास्टर साहेब 'बगसर समाचार' निकाले शुरू कइलन। 'बगसर समाचार' पहिले हाथे से लिखल जात रहे। मास्टर साहेब आ उनकर चेला लोग कैथी लिपि में अपना हाथे समाचार पत्र तैयार करस जा आ घूम-घूम ओकरा के बांटस जा। बाद में बनारस के सरस्वती प्रेस में एकर छपाई होखे लागल। तीन-चार साल तक अनियतकालीन रूप से 'बगसर समाचार' छपत रहल। 1918 में एकर प्रकाशन बंद हो गइल। लेकिन, अतना जरूर भइल कि मास्टर साहेब के 'बगसर समाचार' भोजपुरी पत्रकारिता के शंखनाद क दीहलस। भोजपुरी के एह पहिला अखबार के एगो-दूगो प्रति मास्टर साहेब के घर के लोगन के पास रहे। लेकिन, मास्टर साहेब के नाती आ बक्सर कोर्ट में ओकील सुधीर कुमार श्रीवास्तव बतवले कि करीब तेइस साल पहिले बक्सर के तत्कालीन कलक्टर दीपक कुमार के कहला प ऊ लोग उनके के कुल्ही दे दीहल। एह से अब 'बगसर समाचार' के ले के कवनो प्रमाण ओह लोग भिरी नइखे रहि गइल। ओइसे कइगो भोजपुरी लेखकन के आलेख में 'बगसर समाचार' के जिकिर मिलेला। कुछ लोग मानेला कि 1914 से इ निकले शुरू भइल रहे। चूंकि अखबार के ले के कवनो शोध ना भइल, एहसे एह संबंध में कुछऊ साफ ना कहल जा सके।

जे होखे, लेकिन भोजपुरी के जाने-समझे वाला लोग अतना जरूर मानेला कि मास्टर जयप्रकाश लाल ही भोजपुरी के आदि पत्रकार रहन आ 'बगसर समाचार' पहिलका समाचार पत्र। एकरा बाद करीब तीस-पैंतीस साल तक भोजपुरी पत्रकारिता के क्षेत्र में कवनो खास काम ना भइल। नियमित रूप से दैनिक समाचार पत्र त कबो ना निकलल। 1948 में पटना से महेंद्र शास्त्री एगो द्विमासिक पत्रिका निकाले शुरू कइलन, जेकर नाम रहे 'भोजपुरी'। भोजपुरी के मशहूर रचनाकार डाॅ गुरूचरण सिंह 'बगसर समाचार' के कवनो पुष्ट प्रमाण के अभाव में एहिजे से भोजपुरी पत्रकारिता के ठोस शुरूआत मानतारन। बहरहाल, 'भोजपुरी' के एकही अंक निकलल आ इ बंद हो गइल। 1949 में बक्सरे के रहे वाला अवधबिहारी सुमन (जे किसान नेता सहजानंद सरस्वती के सहयोगी रहन आ बाद में दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती के नाम से मशहूर भइलन) फागू राय 'विशारद' के संगे 'कृषक' निकाले शुरू कइलन। 1952 में 'भोजपुरी' के प्रकाशन फेर शुरू भइल। एना पारी आरा के रघुवंश नारायण सिंह एकर प्रकाशन मासिक रूप से शुरू कइलन। डाॅ सिंह के मोताबिक एकरा पहिलका पांच अंक के संपादन विश्वनाथ प्रसाद सिंह कइलन। बाद में रघुवंश बाबू संपादक बनलन। 1958-59 तक 'भोजपुरी' निकलल, फेर बंद हो गइल। तिबारा 1963 में एकर प्रकाशन शुरू भइल आ 1973 तक जारी रहल। दस साल के बाद एकर प्रकाशन फेर से बंद हो गइल। चार साल बाद, 1977 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन 'भोजपुरी' के प्रकाशन के जिम्मा उठवलस, जे आज तक छप रहल बा।

देखल जाव त, सौ साल के एह सफर के दौरान भोजपुरी में दैनिक समाचार पत्र के कवनो ठोस प्रमाण नइखे मिलत। हं, पत्र-पत्रिका खूब निकललीसऽ। सौ साल में करीब पवने दू सौ से जादा पत्र-पत्रिका के प्रकाशन भइल। एह में ढेर साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका बाड़ीसन। एकइसवीं सदी के शुरूआत होते, भोजपुरी के एगो नया धार मिलल। फिलिम जगत में नया क्रांति आइल आ एहके चलते भोजपुरी भाषा-संस्कृति के नया आयाम मिलल। भोजपुरी के प्रभाव भारत के अलावा दुनिया के कइगो देसन में बढ़ गइल। बाजारवाद के दौर में भोजपुरी के डिमांड खूब बढ़ल। एहसे मीडिया हाउस भी अछूता ना रहल। 2008 में देस के सबसे बड़ मीडिया हाउसन में गिनाए वाला अरिंदम चैधरी के प्लानमैन मीडिया भोजपुरी में 'द संडे इंडियन' पत्रिका के प्रकाशन शुरू कइलस। इ राजनीतिक-सामाजिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक सरोकार के पत्रिका रहे। एकर कार्यकारी संपादक बनावल गइल मूल रूप से भोजपुर जिला के आरा निवासी ओंकारेश्वर पांडेय के, जे पत्रकारिता के क्षेत्र में एगो बड़ नाम बाड़न। एहमे दू राय नइखे कि भोजपुरी पत्रकारिता के क्षेत्र में इ पत्रिका मील के पत्थर साबित भइल। पहिला बेर भोजपुरी में अइसन पत्रकारिता शुरू भइल, जे वैश्विक बोध से लैस रहे। भोजपुरी से संबंधित कइगो मुद्दन पर विशेषांक निकालल गइल, जेकर खूब बड़ाई भइल। एह तरे 'द संडे इंडियन' भोजपुरी पत्रकारिता के नया अध्याय बन गइल। भोजपुरी पत्रकारिता पर लंबा समय से परल धुंध साफ करे वाली इ पत्रिका देस के कोना-कोना तक पहुंचल। अमेरिका, यू के, माॅरीशस सहित दुनिया के दस-बारह देसन में भी इ भेजल जात रहे। हालांकि पांच साल बाद 2013 में एकरो प्रकाशन बंद हो गइल। फिलहाल यूपी के लखनऊ से जनार्दन सिंह एगो साप्ताहिक समाचार पत्र निकालेलन, जेकर नाम ह 'भोजपुरिया अमन'। एकरा अलावा दिल्ली से भी भोजपुरी में साप्ताहिक समाचार पत्र निकल रहल बाड़सन, एहमें 'न्यूज बिंदु' आ 'हमारा पूर्वांचल' प्रमुख बा। दिल्ली से एगो मासिक पत्रिका निकल रहल बिया-'हेलो भोजपुरी'। इलेक्ट्राॅनिक मीडिया में भी भोजपुरी के धमक बढ़ल बा। महुआ, गंगा, अंजन टीवी सहित

भोजपुरी में समाचार प्रसारित कइल जा रहल बा। इंटरनेट के प्रभाव बढ़ला के बाद इ-पेपर के जमाना आइल त भोजपुरी एहू से अछूता ना रहल। भोजपुरी में ऑन लाइन न्यूज पोर्टल आ पत्रिका के भी शुरूआत हो चुकल बा। 'द भोजपुरी डॉट कॉम' आ 'आखर' एह दिशा में एगो बेहतर कदम साबित भइल बा।

कहे के मतलब ई कि मास्टर जयप्रकाश लाल के 'बगसर समाचार' से शुरू भइल भोजपुरी पत्रकारिता सौ साल में बहुत अच्छा-बुरा दिन देखलस। हालांकि हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू आ अन्य क्षेत्रीय भाषा लेखा भोजपुरी पत्रकारिता के ऊ धार ना मिल पावल, जेकर दरकार रहे। एह दिशा में अभी बहुत काम कइल बाकी बा। लेकिन, सकून एह बात के बा कि भोजपुरांचल में पैदा भइल लोग एह खातिर लगातार काम क रहल बा। एहसे उमेद बनता कि भोजपुरिया ताव-तेवर लेखा एक दिन भोजपुरी पत्रकारिता भी दुनिया से आपन लोहा मनवाई। एकर राह बन चुकल बिया आ कारवां भी निकल चुकल बा।

भोजपुरी क्षेत्र के पत्र-पत्रिका :

कइगो चैनलन पर

- अंजोर
- उड़ान
- कविता
- कृषक
- खोंईछा
- गाँव-घर
- गाँव-जवार
- झंकोर
- टटका राह
- द संडे इंडियन
- दिल्ली न्यूज ट्रैक
- दुलारी बहिन
- निर्भिक संदेश
- पनघट
- परिछन
- पाती
- पुरवइया
- पूर्वांकुर
- बिगुल
- बिपना
- भिनसहरा
- भोजपुर संवाद
- भोजपुरिया अमन
- भोजपुरी कहानियाँ
- भोजपुरी चबूत्तरा
- भोजपुरी जनपद
- भोजपुरी जिनगी
- भोजपुरी दर्शन
- भोजपुरी माटी
- भोजपुरी लोक
- भोजपुरी वानी
- भोजपुरी वार्ता
- भोजपुरी विश्व
- भोजपुरी संबाद पत्रिका
- भोजपुरी संसार
- भोजपुरी संसद
- भोजपुरी संस्कार
- भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
- भोजपुरी साहित्य
- भोजपुरी सिटी
- भोर
- भोर भिनसार
- भोरहरी
- महा भोजपुर
- माई
- ललकार
- लाल माटी
- लुकार
- विभोर
- बीर भोजपुरिया
- सनेस
- समकालीन भोजपुरी साहित्य
- समाचार विंदु
- स्वतंत्र दस्तक
- हमार इंडिया
- हमार बोल
- हमारा पूर्वांचल
- हालचाल
- हेलो भोजपुरी

हथेली में समय

(भाग –4)



फोटो साभार : ड्रीम टाइम

कहानी अब ले – बदलत सामजिक परिवेश में व्यक्ति के चेतना के निर्माण हो रहल बा, एक बालक कनिष्क, एक युवा द्वारिका, एक बुजुर्ग बाबू काली चरण लाल तीनो जाना के जिनगी आगे बढ़ रहल बा आपन आपन आशा, आकांक्षा आ संघर्ष के साथ। आजादी के लडाई में भाग लिहल महापुरुष लोग के प्रभाव इंद्रपुर के जनता पर बा, ज्ञानदेव बिहारी आ पंडित मंगल दत्त जईसन प्रबुद्ध लोग नवका पीढ़ी के लोग के मन में त्याग आ सामाजिक प्रतिबद्धता के भावना भरे के चाहता। इंद्रपुर में राजनीतिक आ सांस्कृतिक माहौल बा। ओह समय में मध्यमवर्गीय परिवार एक अइसन ईकाई रहे जहाँ लड़िकन के भौतिक अभाव के बीच भी बौद्धिक विकास के सामग्री में कवनो कमी नइखे कइल जात। **अब आगे पढ़ीं....**

1964

द्वारिका के अपना पढ़ाई में जे रिक्तता आ गइल रहे ओकरा के भरे खातिर उ ओहबेरा के जेतना मशहूर किताब रहली सन ओकरा के कीनस आ पढ़स आ अपना मित्र लोग से ओहिपर चर्चा करस। ठाकुर-घर में उनका पास कुछ अइसन किताब रहली सन, जइसे वेलेस हेगेन के After Nehru Who (1963), सुधीर धर के Gandhi's Emissary (1967), डी. एफ. कराका के Out of Dust (1944), डॉ राम मनोहर लोहिया के Guilty Men of India's Partition (1970), मुहम्मद करीम छागला के Roses in December (1973) आ एकरा अलावा प्रेमचंद, विमल मित्र, यशपाल, आशापूर्णा देवी, शिवानी, कृष्णा सोबती, अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास आ अउरी तरह के किताब भी रहली सन। जब तिझरिया अखबार देबेवाला रामगोपाल जी आवस ता उनका से कहल रहे कि उनका आ बाबू कलिका चरण लाल खातिर Illustrated Weekly of India, Reader's Digest, दिनमान, धर्मयुग, हिंदुस्तान, कादम्बिनी, नवनीत आ लड़िकन खातिर चंदामामा, पराग, नंदन, चम्पक, बालक आ लोटपोट जरूर दे दिहल करस। द्वारिका में सदाशयता आ उदारता बहुत रहे जेकरा से लोग नाजायज फायदा भी उठावे। ऊ अपना व्यवसाय आ राजनीतिक काम में एतना व्यस्त हो जास की अपना लड़िकन के बहुत ध्यान ना दे पावस। गार्गी के एकर चिंता बराबर लागल रहे। ऊ अपना लड़िकन के सब क्षेत्र में आगे बढ़ावे के चाहत रहली। ऊ आपन चिंता के बात अपना श्वसुर से ना कह सकत रहली। एक दिन ऊ खिड़की से देखली कि बाबू कालिका चरण चार्मिंग के साइकिल चलावे के सीखावत रहले ई देख के उनका मन के चिंता थोड़ा कम भइल। कालिका बाबू पहिले कनिष्क के ट्रायल देहले कइसे साइकिल पर चढ़ल जाई। उ जेंगा सभे साइकिल पर चढ़ेला ओंगा ना चढले। उनकर

www.bhojpurisahityangan.com

तरीका दोसर रहे। उ पायडिल पर पैर ना रख के पायडिल के घुंडी पर आपन पैर टीका के रेले साइकिल के हैंडल कस के पकड़ले आ लंगड़ी काटत जब पूरा स्पीड पकड़लस तब फान्ह के सीट पर बइठ गइले ! देखते देखत इंद्रपुर बाजार के ओर जाएवाला सड़क पर तेजी से जाए लगले, साथे–साथे आपन मोतियाबिंद के भारी चश्मा के एक हाथ से ठीक करत अचानक कचहरी के सामने के फौबारा के दायें मुड़के पारबती जी के पोखरा के कीनारे-कीनारे साइकिल चलावत कटहरी के बीच से निकल के अपना घर के सामने अइले। साइकिल के थोडा धीरा कइले आ पायडिल के घुंडी पर पैर रखके जेंगा एगो घुड़सवार रकाब पर पैर रख के घोडा पर से उतरेला ओहिगां उ एक छलांग में साइकिल पर से उतर गइले। चार्मिंग आँख-मुंह खोलले अचरज से उनका के साइकिल पर चढ़त, साइकिल चलावत, साइकिल पर से उतरत देखत रह गइले। कालिका बाबू चौड़ा कन्धा, छोटा कद के गठल शरीर के आदमी रहले उनकर हाथ के चौड़ा कलाई के गुदगर हथेली पर दूनू मजबूत अंगूठा उनका अभाव आ अवमानना के जिनगी से बचावत हमेशा सिपाही जइसन खड़ा रहे।

बाबू कालिका चरण लाल बहुत आत्म-निर्भर आ निष्कपट आदमी रहले। ऊ अपना ईमानदारी के साथे कोई समझौता ना कइले। अपना अभाव के जिंदगी में सुखी रहले। खाली समय में ताश आ शतरंज खेलना उनकर शौक रहे। कभी-कभी लड़िकन के साथ कैरम भी खेलस, खासकर के अतवार के दिने। अतवार के दिन के खाना खइला के बाद ठाकुर जी के कमरा के सामने बरामदा में कम्बल पर सोलापुरी चादर बीछा के कैरम खेलल शुरू हो जाव। उ हमेशा अपना साथे कनिष्क के पार्टनर बनावस। शुरू में उनका ना बुझाइल कि कनिष्क बायाँ हाथ से खेलतारे बाद में जब ऊ देखले ता उनका ई बात पसंद ना आइल काहेकी उनका समझ से बायाँ हाथ से कवनों काम कइल अच्छा ना होखे। कनिष्क स्वाभाविक रूप से बयांहत्थी रहले ऊ गेंदा भी बाएँ पैर से खेलस, शटल कॉक भी बाएँ हाथ से खेलस। कालिका बाबू कनिष्क के बहुत समझवले, मनवले की बाएँ हाथ से ना खेलेके। असल में कनिष्क के जब भट्ठा छुआइल तब ऊ बाएँ हाथ से लिखेके कोशिश कइले लेकिन पंडित मंगल दत्त उनका के दाहिने हाथ के ऊँगली से अबीर के एक परत लगावल स्लेट पर 'रामS गति देहु सुमति' लिखववले। बात आइल गइल हो गइल। लोग ओहिपर ध्यान ना दिहल आ ओह समय के मानसिकता के अनुसार कनिष्क के दाहिना हाथ से लिखे-पढ़े के परल, लेकिन ऊ खेले में बायाँ हाथ आ पैर के इस्तेमाल करस। एक दिन के बात ह उनकर बाबा कलिका बाबू उनका के हिंदी में लिखना लिखावत रहले ओही समय 'मित्र' शब्द आइल कनिष्क ओकरा में दीर्धआकार लगा के लिखले 'मीत्र'। अचानक कनिष्क के दिन में तारा लउके लागल आ उनका गाल पर कालिका बाबू के थप्पड़ के आवाज द्वारिका के बनावल दुमंजिला घर में चारो तरफ सुनाइल। ओहि दिन के बाद से कनिष्क के एक मित्र के खोज के शुरूआत भइल जेकरा नाम आ व्यक्तित्व में स्वर आ व्यंजन के सही मेल होखे। कालिका बाबू कनिष्क के अच्छा मित्र भी रहले लेकिन घर से बाहर उनका अकेलापन रहे, उनका एगो साथी के जरूरत रहे।

कालिका बाबू एक बहुत अच्छा गणितज्ञ रहले, इंद्रपुर दरबार में ई बात सभे जानत रहे कि कालिका बाबू हिसाब-किताब एकदम पक्का रहेला आ कोई उनका रहते हिसाब में गड़बड़ी ना कर सकेला। ई दक्षता उनका परिवार में एक पीढ़ी से दोसरा पीढ़ी में आइल रहे लेकिन कनिष्क हिसाब में कमजोर रहले उनका हिसाब में मन ना लगे। उनकर कल्पनाशील मन के अतितार्किक ज्ञान ओतना भावे ना। ओकरा ठीक उल्टा उनका अंग्रेजी, संस्कृत आ इतिहास में बहुत मन लागे। बाबू द्वारिका प्रसाद के मन में ई बात रहे कि उनकर लड़का पढ़ के अच्छा करे लोग। कालिका बाबू के शरीर अब थाकत रहे। एही बीच में लड़का लोग के खेले में ज्यादा मन लागे आ खासकर के कनिष्क के जासूसी उपन्यास पढेके के आदत लाग गइल। बाबू द्वारिका प्रसाद अपना व्यवसाय आ स्थानीय राजनीतिक काम में व्यस्त रहस आ लड़िकन के पढाई पर ओतना ध्यान ना देस उनका अनुसार लड़िकन के ज्यादा टोक-टाक ना करे के चाहीं। एक दिन उनकर तबीयत खराब रहे आ ऊ घरहीं रहले ओहिबेरा



अनिल प्रसाद

मूलतःहथुआ, बिहार के रहेवाला हयीं। अंग्रेजी साहित्य में शोध। साहित्य अकादमी खातिर यशपाल के 'झूठा सच' के कुछ अंशन के अंग्रेजी में अनुवाद। भारत, मिडिल ईस्ट, अमेरिका, चाइना, कनाडा अउरी ऑस्ट्रिया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनन में पेपर प्रेजेंटेशन अउरी कविता पाठ।अंग्रेजी, हिंदी अउरी भोजपुरी में लेखन। यमन, लीबिया, पटना अउरी मुंबई के विश्वविद्यालयन में अध्यापन। सऊदी अरेबिया में अंग्रेजी भाषा आ साहित्य के प्रोफेसर बानी।

लड़का लोग के ट्यूशन पढ़ावे मास्टर श्यामल घोष अइले । द्वारिका बाबू आपन आँख बंद कइले पलंग पर लेटल रहले आ नीचे चटाई बिछा के लड़का लोग बइठल पढ़त रहे लोग, घोष बाबू Stories from East and West के कहानी Dick Whittington and his Cat पढ़ावत रहले । द्वारिका बाबू आँख बंद कइले सब सुनत-समझत रहले । उनका बड़ा आश्चर्य भइल ई देख के कि लड़का लोग के ना कहानी बुझाता, ना शब्दार्थ मालूम बा, ना स्पेलिंग के कवनो ज्ञान बा आ ऊ लोग एगो वाक्य भी अंग्रेजी में नइखे लिख सकत । ओहिदिन से ऊ लड़का लोग के पढाई पर ध्यान देबे के सोच लिहले । उनकर आपन पुरनका दिन याद आ गइल । खाली इच्छा रहला से का होई ? खाली तेज भइला से का होई ? अगर लड़िकन के पढाई-लिखाई पर ध्यान ना दिहल जाई त कुछ ना हो पाई । पढ़े में तेज रहला के वावजूद भी ऊ अपना बाबूजी के सपना ना पूरा कर सकले । तबीयत ठीक भइला के बाद ऊ अपना लड़िकन के पढ़े खातिर रूटीन बनवले आ घर के लोग के लड़िकन के पढ़े के बेरा काम करवावे से मना कइले । लड़िका लोग के अलग कमरा में पढ़ेके व्यवस्था कइल गइल । एक दिन कांता ओ लोग के पढ़े वाला कमरा में अचानक अइली त उनका शक भइल कि उ लोग कोर्स के किताब नइखे पढ़त लोग, कवनो दोसर किताब पढ़ता लोग । ओहिबेरा कनिष्क कोर्स के किताब के बीच में जासूसी किताब रख के पढ़त रहले कि केहू के शक ना होखे । ऊ बाद में ई बात अपना बड़ भाई द्वारिका के कहली । फेरु ई बात के शिकायत ऊ अपना बाबूजी कालिका बाबू से कइली । कालिका बाबू कहले कि ऊ का कर सकेले बबुआ एह लोग पर ध्यान नइखन देत । एक दिन द्वारिका गार्गी के संगे अचानक ओह लोग के कमरा में अइले, कुछ देर पढाई के बारे में पूछला के बाद कनिष्क के चौकी पर के तोशक उठवले । तोशक के नीचे कुशवाहा कान्त आ कर्नल रंजीत के उपन्यास छुपावल रहे ! ई देख के द्वारिका बाबू बहुत हंसले, उ सब किताब जब्त क लेहले आ कनिष्क के समझवले कि उपन्यास पढ़ल कवनो ख़राब बात ना ह । उपन्यास इम्तहान ख़तम हो गइला के बाद पढ़े में कवनों खराबी नइखे, लेकिन पढ़े के बेर पढ़ला से बहुत नुकसान बा । एही बीच में कांता तेजी से कमरा में अइली आ जोर-जोर से बोले लगली आ द्वारिका के ओर मुखातिब होक कहे लगली,

"ना भईया, ई अच्छा बात नइखे, नावेल पढ़ला से बहुत खराब असर पड़ेला ।'"

द्वारिका कांता हे हाथ से ईशारा कइले चुप रहेके, लेकिन कांता चुप ना भइली । कांता अपना आदत के अनुसार अपना ऊँच आवाज में बोलते गइली । कांता द्वारिका-परिवार के स्वघोषित प्रॉक्टर रहली । उनका गार्गी से परिवार के मलिकाई में प्रतिद्वन्दिता रहे । कवनो भी काम बीना हल्ला कइले ना हो सकत रहे । एह हस्तक्षेप के असर द्वारिका-परिवार पर बहुत दूरगामी परल, शुरू में केहुके बुझाइल ना आ बाद में लोग समझ के भी समझे के कोशिश ना कइल । आदमी अपने आपन हितैषी आ अपने आपन दुश्मन बा । आपन आपन अहम् के अन्हार कोठरी में सभे अपना अंतरात्मा के बंद कइले रहे । जब स्वार्थ पड़े त कोठरी से निकल के बाहर आवे लोग आ फेरु ओही कोठरी में जाके बंद हो जाव लोग । पूरा संयुक्त परिवार के बोझ बाबू द्वारिका प्रसाद पर लदा गइल, आ कुछ बोझा ऊ एहसे उठवले कि उनका मन में समाज सर्वोपरि रहे जे उनका मन में हमेशा प्रतिध्वनित करत रहे कि अगर ई हम ना करेब 'त लोग का कही ।' स्वार्थ के धामिन साँप दुधारू गाय के पैर में छाना मार के ओकर दूध पिए लागल, स्नेह के गाछ में इर्ष्या के कोंढ़ी घरे लागल ऊ फुलाइल जब ओहबेरा ओकरा के तुर के फेंकल संभव ना रहे, ओकर जड़ काफी गहीर ले फइल गइल रहे । ई बात सही रहे कि बाबू कालिका चरण लाल घर के बुजुर्ग रहले लेकिन असली मालिक द्वारिका बाबू रहले । द्वारिका बाबू हमेशा ओह बेरा के 'लोग का कही' के मानसिकता से प्रभावित रहले । अपना आ अपना परिवार के आगे ऊ समाज आ इंद्रपुर बाज़ार के रखले । उनका लगे कवनो पढाई के बड़का डिग्री ना रहे, लेकिन ऊ बहुत ऊँचा स्तर के पढ़ल-लीखल आदमी रहले आ ओहसे भी उपर ऊ एक बहुत उम्दा इंसान रहले । अकेले ही बहुत कम उमिर में उ बाबू कालिका चरण के जिम्मेवारी के अपना कान्ह पर उठवले परिवार के समाज में एक स्थान बनवले । उनकर आश्चर्यजनक उपलब्धि से इंद्रपुर ही ना बल्कि पूरा इलाका के लोग के मन में उनका प्रति प्रशंसा आ आदर के भाव रहे, साथ ही लोग पर उनकर रोब-दाब भी रहे ।

(क्रमशः)

www.bhojpurisahityangan.com

भारत में किसान आत्महत्या के मूल वजह

अभी हाल में देश के राजधानी में घटल घटना कई गो प्रश्न खड़ा कर रहल बिया । उ घटना अब पूरी तरह से राजनीतिक घुटी पी चुकल बिया । खैर , हमार मुद्दा ओने नइखे अलग बा, कौनो समस्या के खाली राजनीतिक कारन आ हल ना होला ओकर तकनीकी कारन भी होला अउरी तकनीकी सुझाव भी । जईसे सबसे बड कारन बा खेती में आधुनिक तकनीक के कमी, देश के हर गली में इंजीनियरिंग कॉलेज बा लेकिन कृषि से सम्बंधित तकनीक अउरी तकनीकी सलाह देवे में आज भी काफी हद तक सफल नइखे । कुल मिला के कहल जा सकेला कृषि शिक्षा अउरी उच्चस्तरीय शोध के कमी देखल जा रहल बा ।

आज के तारीख में कृषि शिक्षा अउरी ओह से सम्बंधित शोधकर्ता खाली नाम मात्र के रह गईल बाड़े । एगो अउरी आश्चर्य वाला विषय बा कि भूमंडलीकरण के समय में भी बहुराष्ट्रीय कंपनी के माध्यम से आवे वाला आधुनिक तकनीक भी कृषि तक जमीनी स्तर पर नईखे पहुँच पावत । तकनीकी समस्या में दूसरा कड़ी बा उचित प्रबंधन अउरी तकनीकी सुझाव मतलब इ कि राष्ट्रीय स्तर प एगो जलवायु कंडीशन के मुताबिक प्लान बन सकेला एह से दू गो फायदा होई पहिला इ, जवन लोग जबरजस्ती उल्टा खेती करेला मानी कवनो जमीन कपास खातिर अच्छा बा लेकिन जबरजस्ती धान बोए लागेला जवना के प्रभाव बड़ा विषम पड़ेला या त उपज ठीक ना होई या अइसन होई कि देश में ओकर मात्रा अतना बढ़ गईल कि सरकार रखाव प्रबंधन के लेके बेचैन रहेले एकरे चलते किसान के अनाज के दाम गिरे लागेला । दूसरा समस्या इ होला कि जवन बोए के चाहत रहे ओकर आकाल पड़े लागेला जवना के चलते सरकार के आयत करके के मजबूरी पड़ जाला । इ दुनो समस्या हल हो सकेला आयात के भी न्यूनतम कईल जा सकेला अउरी किसान के फसल के मुताबिक कीमत मिलेलागेला । एकरा साथे कवन फसल कब बोए के बा, बीज के प्रजाति कवन होखे के चाही, कब बोए के बा, कौ बेर सिचाई करके बा, कतना समय अन्तराल होखे के चाही एह सब प तकनीकी सुझाव बहूत ही ज्यादा जरूरी तत्व होला । पानी के भी ठीक से उपयोग हो पावेला जवना से खेती के समय पानी प्रबंधन के समस्या के भी न्यूनतम करे में मदद मिलेला । तकनीकी सुझाव में इहो हो सकेला विशेषज्ञ सारा प्रक्रिया के मैकेनिज्म डेवेलप करस ताकी कवनो बीमारी मत लागो फसल में । एहसे किसान के फसल भी अच्छा होई, उत्पादन भी अच्छा होई अउरी किसान प्रशिक्षिक भी होइहे । तकनीकी कारन सुझाव सुझाव के क्रम में खाद्य सुरक्षा के मैकेनिज्म के कंप्यूटरकृत करके लूप होल के कम कईल जा सकेला जवना चलते किसान अउरी सर्कार दुनु परेशान बिया । 'सांता कुमार के रिपोर्ट' के पर्दा बनावल उचित काम नइखे लागत, सबकुछ पब्लिक डोमेन में होखे के चाही, PDS प्रणाली जवन दिनों दिन कमजोर हो रहल बिया ओकरा थोडा मजबूती मिली । खेती के आधार प ओह प्रकार के उद्योगिक धंधा पास में विकसित करके भी किसान के आनाज मूल्य के मजबूत बनावल जा सकेला । एहसे कंपनी के भी फायदा बा अउरी किसान के भी, शहरी क्षेत्र के अपेक्षाकृत कम दाम में मजदूर भी मिल जईहे अउरी छोटे भाग प खेती करेवाला किसान के पार्ट टाइम नौकरी भी मिल जाई । शहरी क्षेत्र के ठेला ठेली के जिंदगी से भी प्रवासी आदमी के राहत मिली । अउर भी बहूत फायदा बा एह से अउरी बहुत तकनीकी सुझाव हो सकेला किसान के राहत पहुचावे के क्रम में ।

अब बात कईल चाहब राजनीतिक सुझाव का हो सकेला किसान के आम समस्या के हल करे खातिर । सबसे पहिला इ कि भूमि अधिग्रहण बिल बनावत समय जलवायु के मिजाज और फसल के पैदावार के मद्देनजर रखते हुए बनावल जाओ । काहे कि ओह औद्योगिक विकास के कवनो मतलब ना होई जवन कृषि योग्य भूमि प लगावल जाई । एकरा पीछे हम एहे



गौरव सिंह

रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडू से पढ़ाई कर रहल बानी।

कारन देब कि औद्योगिक चीज सेकेंडरी क्रिया हवे, जवना के सीधा सम्बन्ध प्राथमिक क्रिया (खेती) से बा। जब प्राथमिक क्रिया कमजोर परे लागी त सेकेंडरी क्रिया खातिर पूरा के पूरा आयात कइल बहूत हद तक संभव नईखे। एहसे तृतीय क्रिया मजबूत करके बा त द्वितीय क्रिया मजबूत करेके परी, ठीक वोइसही द्वितीय मजबूत करके बा त प्राथमिक मजबूत कईल बहूत ज्यादा जरूरी बा। एहमे एगो अउर बात हो सकेला भूमि लीज प लेल जा सकेला किसानन से ताकी किसान के जमीन प मालिकाना हक बनल रहो अउरी नियमित भागीदारी मिलत रहो, एह से किसान के आत्मविश्वास में चार चाँद लागल रही। अभी फिलहाल में लीज वाला नियम मोबाइल फ़ोन के टावर लगावे वाला में बा, सीम कार्ड कंपनी एयरटेल,आईडिया,वोडाफोन सब के सब महिना देला ओह किसान के जेकरा खेत में टावर गडाला, इहे ना एगो आदमी में ओकरा घर से नौकरियों देला। एह से सभे चाहेला कि हमरा खेत में गडा जाव। मंसा होखे के चाही करके, अइसन कवनो बात नईखे कि किसान विकास खातिर जमींन नइखे देल चाहत, किसान भी चाहेला कि हमनी के देश तरक्की करो लेकिन शहरी लोगन के दिमाग में एगो गलत प्रतिबिम्ब बन जाला कि किसान जमींन नइखे देवल चाहत जवना चलते विकास रुकल बा। एह से राजनितिक समीकरण समझी जवन औद्योगिक घराना से मिल के बनल बा, वोइसन नियम कानून होई त किसान से छीने के ना परी अउरी नाही कवनो जोर जबरजस्ती करे के परी, किसान अपना मने ला के दे दिहे। राजनितिक सुझाव के अगला कड़ी में लोन प्रक्रिया प जोर देल चाहब। किसान के आत्महत्या के एगो बरियार कारन बा सहुकारन से लेल लोन जवना के दर काफी ज्यादा होला अईसे में फसल मरा गईला प किसान आपा खो बइठेला आखिर कहाँ से चुकाई। सरकारी लोन में जवन स्वतंत्रता बा उ हमनी से नइखे छुपल। हमरा समझ से पैसा उधार ना देके सरकार के तरफ से ग्रामसभा के स्तर प अइसन मैकेनिज्म डेवेलप कईल जा सकेला जवना में ऋण के रूप में पईसा ना बल्कि खाद, बीज, कीटनाशक आदि के व्यवस्था कईल जा सको। ओह मैकेनिज्म में एह बात के भी स्पष्ट कईल जा सकेला कि पैदावार के मुताबिक ही सरकार किसान से वापस पईसा ना बल्कि आनाज ही ली। हम जवन सिस्टम के विकसित करके बात करत बानी ओह में किसान के साथ साथ सरकार के भी फायदा होई। ओह सिस्टम में ऋण के रूप में किसानन खातिर तकनिकी मशीन जईसे हार्वेस्टर, ट्रेक्टर, थेर्सर आदि भी उपलब्ध करावल जा सकेला जवना के दर कमसेकम प्राइवेट वालन से त कमे नू होई। वोही कड़ी में एगो अउरी बरियार समस्या बा बाजार वाला जवना में किसान में उचित मिल ना पावेला। एह में मध्यस्ता करेवाला व्यापारी सबसे ज्यादा फायदा में रहेला। देखि एहिजे दू गो बात सामने निकल के आवता औद्योगिक क्षेत्र से उत्पादित हुए वस्तु को औद्योगिक घराने के लोग ही गणित लगाके करेला, जबकि कृषि क्षेत्र के मूल्य के मूल्यांकन या त सरकार करेले या फिर क्रेता यानी की व्यापारी। किसान असहाए दिखाई देला हमेशा बोअत समय, काटत समय अउरी बेचत समय भी। बहूत ज्यादा उत्पादन हो गईल, सड़ी गली फेकाई ना त बहूत कम दर मिली जवना से लागतो ना निकली, तबो किसाने के छिछा लेदर आ कम भईल त व्यापारी कम दाम प क्रय करके ज्यादा मुनाफा लेके बाजार के जरूरत पूरा करे खातिर बेच दी तबो किसाने ठगल महसूस करेला। मूल्य गिरे के एगो अउरी मूल कारन बा उपभोक्ता के अनुसार फसल के चयन करे के चाही ना त परिवहन खर्चा ऐतना आ जाला जईसे मानी जेतना के बबुआ ना ओतना के झुनझुना लाग जाला, एह से फसल मजबूरी में नस्ट करे के पर जाला। सरकार के मूल्य तय करत समय सभ मापदंड के ध्यान में रखल जरूरी बा। अइसन बिल्कुल नइखे कि सुझाव के कमी होखो समस्या के हल करे के बस लागू करेके मैकेनिज्म अउरी मंसा के जरुरत बा।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी सिनेमा आ दक्षिण के फिल्म

(तुलनात्मक अध्ययन)

हमनी के बेगुसराय में रहनी आ उ अस्सी के सुरू के साल रहुए जब मैटिनी शो खत्म होखे के तुरंत बाद नियरे के सिनेमा हॉल से लाउडस्पीकर पर गुँजे लागत रहुए, जल्दी जल्दी चल रे कहरा सुरूज डुबे रे नदियां....गीत त अउर बाजत रहे, गोरकी पतरकी रे आ मेला में सईयां भुलाईल हमार अब का करीं भा हंस के जे देख तु एक बेरिया हम मरि मरि जाईब तोहार किरिया लेकिन छोटी चुकि रहला प भी, धरती मईया फिलिम के जल्दी जल्दी चल रे कहरा सुरूज डुबे रे नदियां....गीत सुनते मन पसीजे लागत रहे, काहे? ई तब ना बुझात रहे बाद में टीवी अईला के बाद दुरदर्शन प एक दिन 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़ईबो' फिलिम देखावल गईल रहे तब पहिला बार भोजपुरी सिनेमा से आपन चीन्ह-पहचान भईल रहे, आपन भासा में अपना गांव-जवार के काथा देखके चाहे जेतने बुझाईल बाकि नीमन लागल, फेर नदिया के पार आ बाद में दुल्हा गंगा पार के जईसन सिनेमा भी आईल जेकरा देखे खातिर उहो चाची, भाभी लो सिनेमा हाॅल चहुंपली जे कब्बो फिलिम देखे खातिर घर से बाहरा ना निकलत रहल लो। एकरा बाद फेर एक-दु गो फिलिम के छोर के वईसन सब के मोह लेवे वाला भोजपूरी फिलिम के चर्चा ना सुनाईल बलुक कुछ बरिस ले मंदी के दौर आ गईल रहुए। फेर 2001-2002 के बाद 'पंडित जी बताई ना बियाह कब होई' आ ससुरा बडा पईसा वाला से भोजपूरी सिनेमा के एगो अलग दौर शुरू भईल जे अब तक चलल आ रहल बा।

एह बीचे गोविंदा के दु तीन गो फिलिम आईल रहे, राजा बाबु, आंखें, खुदगर्ज, बड़े मियां छोटे मियां ई सब में उनकर रोल आ बोली बानी पुरबिया रहल ह, एमे राजा बाबु आ आंखें में गोविंदा खुब पसंद कईल गईले, उनकर लोकप्रियता के अंदाजा सिवान जिला के अपना गांव गईला प बुझाईल, छौ महीना से उपरे मैरवा में इ दुनो फिलिम हाल में लागल रहे। देखल जाउ त गोविंदा के ई सब फिलिम जेकर अधिका दर्शक छोट सहर, कस्बा आ गांव के रहले से भोजपूरी फिलिम के आगे के दौर सुरू भईल, एही समय से भोजपूरी फिलिम उद्योग फेर से आपन बाजार पकड़े के शुरू कईल आ ऐही समय से भोजपूरी फिलिम के आपन मौलिकता एकदम्मे ओराए लागल आ भोजपूरी सिनेमा बी सी ग्रेड भा 'पापुलर' हिन्दी सिनेमा के नकल बन के रह गईल। 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़ईबो', बिदेसिया, बलम परदेसिया, लागी नहीं छुटे रामा, धरती मईया आ नदिया के पार, के जोर के सिनेमा फेर ना बन पाईल ह। हाल के दिन में देसवा के चर्चा सुनाईल आ बड़ाई भी भईल तब्बो अबहियों ले साईत फिलिम रिलीज नईखे हो पाईल। ऐकरा अलावा 2008 में एगो लघु फिलिम 'उधेरबुन' आईल रहुए जेकरा बर्लिन अंतराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सर्वश्रेश्ठ फिल्म श्रेणी में रजत पदक हासिल भईल रहे, कहे के मतलब कि 1961 से शुरू भोजपुरी सिनेमा के इतिहास में वैश्विक उपलब्धि के नाम प खाली एगो लघु फिलिम उधेरबुन के ही नाम लिहल जा सकेला।

इहां एगो और बात कहल जरूरी बा, उ ई कि पहिले बहुत पातर लाईन रहुवे हिन्दी आ भोजपूरी में, दो बीघा जमीन, गंगा जमुना, नया दौर, मदर इंडिया जईसन फिलिम हिन्दी में बनत रहुए जे भोजपूरी के फरक मिटा देते रहे, इहां तक कि नदिया के पार भी हिन्दी में बनल सिनेमा ह, आ बादो में जब जब हिन्दी फिलिम में उत्तर भारत के गांव के कहानी कहल गईल सफलता के एगो नाया इतिहास लिखाईल, चाहे लगान के बात कईल जाव भा पिपली लाईभ आ चाहे हाले आईल सिनेमा 'पीके' के लेकिन त का इ सब फिलिम के भोजपूरी सिनेमा मान लिहल जाव? एकर जबाब 'ना' ह, बाकि इ सब उदाहरण से पाता चलता कि भोजपूरी के लोकप्रिय सिनेमा कईसन हो सकेला आ एकरा से आगे आपन मौलिकता पाए खातिर भोजपूरी के सब घिसल-पिटल फारमूला छोर के



मनोरमा सिंह

सिवान , बिहार के रहे वाली मनोरमा जी , स्वतंत्र पत्रकार के रुप मे अपना लेखन शैली से बहुते प्रभावित कईले बानी । कई गो पत्र पत्रिका आ अखबार खाति इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह समय इँहा के बंगलोर मे बानी ।

गुणवत्ता में ऐकरों से आगे जाए के पड़ी।

दोसर सवाल ई ह कि आखिर का कारण बा कि भोजपूरी में कौनो गिरिश कासरवल्ली, पी शेशाद्री, गिरिश कर्नाड, शंकरनाग, के बालाचंदर, अडूर गोपलकृष्णन आउर मणिरत्नम जईसन नाम नईखे, पलायन, विस्थापन, बेगारी, बेरोजगारी, जमीन से बेदखली के कहानी नईखे। गरीब,दलित, शोषित, पिछड़ा आ मेहरारू लो आपन असलियत के साथ हमनी के सिनेमा में कहीं नहीं लौकेला लो। सांच कहल जाओ त हिन्दी सबले बड़हन कारण बन गईल भोजपूरी के पिछड़ला के आ भोजपूरिए काहे उ सब भासा-बोली के जेकरा के हिन्दी के बहिन आ मौसी कहल जाला। आपन बिहारे के बात करीं त हिन्दी सबके भासा ह लेकिन केकरो मातृभासा नईखे, केहु के मातृभासा भोजपूरी ह त केकरो मैथिल, अंगिका, बज्जिका भा मगही। अब जे हिन्दी में सोची, बात करी, काम करी उ आपन मातृभासा में कुछ सिरजे प कईसे आपन जड़ ओ तरह से पकड़ सकेला जे तरह से कन्नड़, तमिल, मलयालम आ मराठी के लोग पकड़ेला जे लो के सैकड़न साल के साहित्यिक, सांस्कृतिक विरासत धरोहर जईसे मिल जाला। सबसे पहिले त आपन मातृभासा से कटते के साथ लोग ओकर विरासत से कट जाला, जबकि कन्नड़, तमिल, मराठी, मलयालम में लोग आपन भासा में जे बढिया किताब पढ़ेला ओकरा के फिलिमों में ढ़ाल देला, एहीजुग से फरक भी समझ में आवे लागेला। जे पढलेला उ हिन्दी के भा अंग्रेजी के हो जाला, भोजपुरी में लौट के ना जाला, आपन भासा में खाली बोले बतियावे से ना बाकि गम्हीर लिखला पढला आ रचला से ही भोजपूरी के नाम प जे फुहड़पन स्थापित करल जा रहल बा ओकरा रोकल जा सकेला। कन्नड़ के बात कईल जाव त इहां के लो के आपन लेखक आ उनकर किताब पर फिलिम बनला पर एतना रूचि रहे कि ब व कारंत जईसन निर्देषक के भी जब उ शिवराम कारंत के उपन्यास चोमाना दुदी पर एही नाम से फिलिम बनावत रहले जेकरा बाद में ओ साल के सर्वश्रेष्ठ फिलिम के राष्ट्रीय पुरस्कार मिलल कई बार शुटिंग के बेर लोग के बतावे के पड़त रहल कि उ कितबियन में कौनो हेर-फेर कईले बिना ओपर फिलिम बनावताड़े। भासा आ आपन लेखक के लेके अईसन जागरूकता हमनी किहां कहां बा?

इ बात प कई गो फिलिम खातिर राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल कर चुकल कन्नड़ फिलिम निर्देशक पी शेशाद्री कहताड़े भोजपूरी सिनेमा, हिन्दी सिनेमा के फुहड़ नकल ह अउर हिन्दी सिनेमा अपने अमरीका आ हॉलीवुड के नकल। सिनेमा खाली मनोरंजन के माध्यम नईखे लोग के शिक्षित आ संवेदनशील बनावे के भी माध्यम बा ऐही से सबसे पहिले भोजपूरी के हिन्दी सिनेमा छाया से निकले के होई। बंगाली, तमिल, कन्नड़, मराठी, मलयाली सिनेमा में शुरुए से पापुलर से अलग समानान्तर सिनेमा के बरियार धारा रहुए जे अभियो बा बाकि अब त गुजराती आ उत्तरपूर्व के क्षेत्रीय भासा में भी बहुत बढिया फिलिम बन रहल बा। शेषाद्री जी के कहनाम बा कि भोजपूरी के भी अईसही आपन जमीन खोजे के पड़ी, कर्नाटक के बारे में आ आपन फिलिम के बारे में एगो बहुत नीमन आ जरूरी बात उ इहो बतउले कि इंहा कन्नड़ के अलावे, कोकंणी, कोदवा आ टुलु भासा भी बोलल जाला, षेशाद्री जी खुदे कन्नड़ आ जादातर ओही इलाका के कहानी प फिलिम बनावेले जे कन्नड़ भासा में आवेला। लेकिन कर्नाटक में खाली कन्नड़ में ही नाहीं बलुक टुलू, कोदवा आ कोंकणी में भी फिलिम बनेला, बजट आ तकनीक में कमजोर होखे के बाबजूद लोग आपन भासा के फिलिम पसन करेले आ टुलू भासा में त अब बढ़िया फिलिम बने लागल बा। एही से उ महाराष्ट्र सरकार के राज्य के सिनेमा हाल में शाम के शो में मराठी फिलिम अनिवार्य रूप से देखावे के फैसला स्वागत कर रहल बाड़े, काहे कि लोग एह से आपन जड़ से जुड़ी आ क्षेत्रीय सिनेमा के माली हैसियत भी मजबूत होई। इहो गौर करे वाला बात ह कि उत्तर भारत के भोजपूरी समेत बाकी सब भासा के सिनेमा प हिन्दी सिनेमा के असर बा चाहे उ नकल ह लेकिन उहे मुंबई में एतना बड़हन हिन्दी फिलिम उद्योग के छाया में भी मराठी फिल्म आपन अलगे पहचान आ खासियत के साथ मौजूद बा बलुक हर साल ओह में एगोदुगो अईसन फिलिम बनेला जे मुख्यधारा के हिन्दी सिनेमा से कई गुणा बढ़िया होला।

हम कर्नाटक में पिछला सात-आठ साल से रहतनी एह से ईहां के फिलिम के कौनों अउर राज्य के तुलना में जादा नजदीक से देखतनी आ ऐही से आपन बात रखे आ समझावे खातिर दुनु के जोर के बात कह रहल बानी। हांलाकि अईसन नईखे कि ईहां के फिलिम में घटियापन आ फुहड़ता नईखे आईल, फिलिम एगो बिजनेस ह आ सबसे पहिले लोग नाफा-नुकसाने के बारे में सोचेला लेकिन इहो बा कि साथे-साथे ओईसनों फिलिम बनत रहेला जे देस-समाज लेले अगिला पीढ़ी के थाती बनत जाला। भोजपूरी में पुट्टकना हाईवे, बेट्टादी जीवा, भारत स्टोर आ 1 दिसंबर जईसन सिनेमा कहां बा ? इ जादा पुरान फिलिम ना बाकि सब राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित ह, आ जमीन, विस्थापन से लेके माल संस्कृति आ मुख्यमंत्री के गांव में जाके कौनो गरीब के घरे रूक गईला के

बाद उ परिवार के त्रासदी जईसन बिसय पर बनल फिलिम ह। कम बजट में बने बाला इ सिनेमा प राज्य सरकारों दस लाख तक ले कर्जा दे देले। हमरा नईखे मालूम बिहारो सरकार ऐ तरह से सहयोग करेले आकि करी।

आखर के गूँज मिडिया में

आखर पत्रिका भोजपुरी भाषा के लिए कर रही काम

माई भाखा के विकास खातिर एगो प्रयास के नाव 'आखर'

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

भोजपुरी को अपनी पहचान वापस दिलाने के लिए कई लोग जी-जान से जुड़े हुए हैं. किसी ने साफ-सुथरी फिल्म बनाने की कसम खायी है, तो किसी ने भोजपुरी के पारंपरिक गीतों को ऑनलाइन लॉन्च किया है. अब इन्हीं लोगों में एक और नाम जुड़ गया है. यह नाम है 'आखर मैगजीन'. इस वार्षिक भोजपुरी ई पत्रिका को लॉन्च हुए तीन महीने हो चुके हैं और अब तक इसकी तीन मैगजीन आ चुकी है. हर बार मैगजीन अलग-अलग विषयों को लेकर आती है और उससे जुड़े आर्टिकल्स, स्टोरीज, कविताओं आदि को चयनित करती है. इस मैगजीन को 15 लोगों का ग्रुप निकालता है, जो विभिन्न शहरों में रहता है. इसके चार संपादक है. इन दिनों इसके एक संपादक नवीन कुमार पटना आये हुए हैं.

दुबई में रहनेवाले नवीन कुमार ने प्रभात खबर से खास बातचीत में मैगजीन से जुड़ी कई बातें साझा की. उन्होंने बताया कि वे यूपी के हैं और इन दिनों विभिन्न क्षेत्रों में जा-जाकर लोगों को इस मैगजीन से जोड़ रहे हैं. लोगों को प्रेरित कर रहे हैं कि वे मैगजीन के लिए अपने लेख भेजें. साथ ही मैगजीन पढ़ें. नवीन बताते हैं, यह मैगजीन पूरी तरह से भोजपुरी में है. हमारा मेन टारगेट युवा वर्ग है. आज कई युवा ऐसे हैं, जो सभी के सामने भोजपुरी बोलने में हिचकिचाते हैं. हम चाहते हैं कि लोग गर्व के साथ भोजपुरी बोलें, पढ़ें और देश-विदेश में इसका प्रचार करें. अभी हमने इस मैगजीन को ऑनलाइन ही लॉन्च किया है और अगले साल इसे छापना शुरू कर देंगे. अभी मैगजीन के मेंबर बनाने का कार्य चल रहा है, जो पूरी तरह निःशुल्क है. इस तरह से हमें पता भी चल रहा है कि लोगों के बीच इस मैगजीन की क्या डिमांड है. मुझे बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि लोग इसे काफी पसंद कर रहे हैं और हाथों-हाथ बुक करवा रहे हैं. मैगजीन के सारे अंक आखर डॉट कॉम में डाउनलोड कर पढ़ सकते हैं. फेसबुक पर भी हमारा 'आखर' नाम से एक पेज है, जिसमें आप जुड़ सकते हैं.



फेसबुक पर भी बना है आखर का पेज.

भोजपुरी किताबों का कर रहे डिजिटलाइजेशन

इसके अलावा हमने भोजपुरी की किताबों का डिजिटलाइजेशन करने का निश्चय उठाया है. ऐसी कई महत्वपूर्ण किताबें हैं, जो मार्केट में नहीं मिलती और लोग पढ़ना चाहते हैं. ऐसी किताबों को हम डिजिटल रूप दे रहे हैं, ताकि लोग इंटरनेट पर इन्हें पढ़ सके. इनमें संत कुमार वर्मा, शारदानंद प्रसाद, लंग इनायतपुरी, पाण्डेय कपिल, पाण्डेय सुरेंद्र, रामनाथ पाण्डेय, लैयब हुसैन पीड़ित की किताबें हैं. अभी आने वाले दिनों में और किताबें नेट पर डाली जायेंगी.

वेबसाइट पर लिखी है किताब लाने की वजह



आखर, कुछ युवा लोगन के अपना माई भाखा (मातृभाषा) के प्रचार-प्रसार साहित्यिक विकास खातिर एगो प्रयास के नाव ह. 'आखर' के कोशिश बा भोजपुरी साहित्य, संस्कृति, संस्कार आ भोजपुरियापन के शब्दन से तस्वीरन के माध्यम से कविता के माध्यम से लेख कहानी के माध्यम से समाचार, यात्रा संस्मरण के माध्यम से देस दुनिया के सैर करावल आउ. 'आखर' के कोशिश बा कि भोजपुरिया नवका लोग भोजपुरी में लिखो, भोजपुरी के अनुभवी लोगन के आशीर्वाद रूपी लेख से आवे वाली पीढ़ी के परिचय होखे आ हमनी के माई भाखा भोजपुरी दिन दुना रात चौगुना बढ़ती प रहसु. 'आखर' भोजपुरी के आठवां अनुसूची में शामिल करे खातिर संघर्षरत बा आ समय समय प भारत सरकार, सांसद आ विधायक लोगन किहा पाती भी लिखल गईल बा आ ओह लो के जिम्मेवारी के मन भी परावल गईल बा.

प्रकाशक, संपादन मंडल :
संजय सिंह (सिवान), देवेंद्र नाथ तिवारी (कवी), शशि रंजन मिश्र (नयी दिल्ली), नवीन कुमार (दुबई)

आखर पता :
ग्राम पोस्ट-पंजवार (पोखरी)
सिवान, बिहार 841509

भोजपुरी सिनेमा के
वर्तमान स्थिति आ भविष्य

कवनो भी भाषा के गरिमा ओकर संस्कृति बढ़ावेला आ साहित्य ओकर रसास्वादन करावेला। एह से सबसे पहिले आदमी के ओकरा संस्कृति पर ध्यान देवे के चाहीं कि ऊ समाज में कवना दिसा का ओर जा रहल बा।

अब इहां बात हो रहल बा भोजपुरी सिनेमा के वर्तमान स्थिाति आ भविष्य के। त हमरा समझ से आज के भोजपुरी सिनेमा भोजपुरी संस्कृति के नंगा नाच करा रहल बा। आज से अगर बीस साल पहिले के बात कइल जाव त उहाँ तक भोजपुरी सिनेमा अपना सभ्यता आ संस्कृति दुनो के सहेजले हमनी का आंखी के सोझा प्रस्तुत होत रहे। ओकरा भीतर भोजपुरिया संस्कृति के ऊ सब झलक जवन गाँव में परिवार के भीतर देखे के मिलेला (संयुक्त परिवार कइसे चलेला, माई-बाप के परिवार में का स्थान होला, गाँव में फइलल दूर तक के रिश्ता के का अहमियत बा भा कवनो पर्व, त्योहार, व्रत, शादि-विवाह के महत्व का होला) के संजो के दर्शक सभ के मनोरंजन करत रहे। एकरा साथे साथे ओह समय के फिल्मन में पहनाव-ओढ़ाव, रहन सहन एह तरह से देखावल जाव कि दोसर भाषा भा संस्कृति के लोग हमनी के संस्कृति के साथ-साथ हमनी के पहनावा-ओढ़ावा भी अपनावे के लालायित रहत रहे।

भोजपुरी सिनेमा के शुरूआती दौर पर अगर नजर डालल जाव त 1960 के दशक में ई अपना तिव्रता पर रहे। ओह समय जवन भी फिल्म आइल ओहमें भोजपुरिया संस्कृति के बखुबी देखावल गइल। ओह दौर के प्रमुख फिल्मन में "गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो-1962" आइल जवन भोजपुरी क्षेत्र के साथ-साथ आउर सब राज्य में भी काफी सराहल गइल। आज भी जब कहीं ई बात चलेला कि भोजपुरी के ऊ कवन सिनेमा बा जवना में भोजपुरिया संस्कृति आउर जिनगी के बखुबी देखावल गइल बा त एह फिल्म के नाम प्रमुखता से लियाला। एकरा बाद 1963 में फिल्म आइल "लागे नाहीं छुटे रामा, -1965, बिदेसिया-1963, भौजी-1965, लोहा सिंह-1966, नइहर छुटल जाय, बलमा बड़ा नदान, कब होइहें गवनवा हमार, केकरा चरनवा में लगलें परनवा, नाग पंचमी, सीता मइया, संइया से भइले मिलनवा, आइल बसंत बहार, बिधना नाच नचावे, हमार संसार, सोरहो सिंगार करे दुलहिनिया, गोस्वामी तुलसी दास आदि।" 1960-70 के दशक में आइल ई प्रमुख भोजपुरी फिल्म रहे जवना के देखे खातिर दर्शक दूर-दूर तक सिनेमा हॉल में पैदल भा बैल गाड़ी से जात रहे। ई सब ऊ फिल्म ह जवना का भीतर से भोजपुरिया माटी के सौंधी खुशबु आवेला।

1970-79 के दशक में आवे वाला भोजपुरी फिल्मन के अगर बात कइल जाव त प्रमूख रूप से "ढेर चलाकी जन करऽ-1971, बलम परदेसिया-1979, डांकू रानी गंगा, दंगल, मितवा, माई के लाल, धरती मइया, जागल भाग हमार आदि। एह दशक में भोजपुरी फिल्म के निर्माण में कुछ कमी आइल बाकिर रफ्तार रूकल ना। भोजपुरी सिनेमा खातिर अब दर्शक बॅंध चुकल रहे। इंतजार रहत रहे नया नया फिल्मन के।

सबसे अधिक फिल्म 1980 के बाद बनल। एह दौर के फिल्मन पर अगर नजर दउरावल जाव त मूलतः "चनवा के ताके चकोर-1981, संइया मगन पहलवानी में-1981, संइया तोरे कारण-1981, हमार भौजी-1983, चुटकी भर सेनूर-1983, गंगा किनारे मोरा गाँव 1984" आदि। ई अइसन फिल्म बारी स जवन सिनेमा हॉल में महीना भर चलल रहली स। एकरा बाद "पिया के गाँव 1985, दुल्हा गंगा पार के-1986, रूस गइलें संइया हमार, माई-1989, पान खाए संइया हमार-1984, नइहर के चुनरी, बिहारी बाबू, चलऽ सखी दुलहा देखे,



अभिषेक भोजपुरिया

बिहार के छपरा जिला के लहलादपुर प्रखण्ड अन्तर्गत जनता बाजर, भटवलिया के निवासी बानी। इहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के एगो मजबूत स्तम्भ आ भोजपुरी भारती संस्था, ढोढ़स्थान, जनता बाजार के संस्थापक सदस्य आ भोजपुरी भारती पत्रिका के पूर्व संपादक स्व0 प्रो0 वैद्यनाथ विभाकर जी के पुत्र बानीं। इहा के भोजपुरी भाषा से बीए आ एमए कइले बानी आ पीएच डी भी कर रहल बानीं। इहा के भोजपुरी के हर विधा में लिखत रहिले खास कर कविता, निबंध आ कहानीं।

सजनवा बैरी भइलें हमार" आदि बा।

एह दौर के कलाकार लोग के अगर बात कइल जाव त प्रमुख रूप से सुजीत कुमार, बलराज साहनी, लक्ष्मण शाहबादी, दिलराज कौर, कुणाल सिंह आदि। ई ओइसन कलाकार ह लोग जवन अपना फिल्म में फूहरता भा द्वीअर्थी संवाद भा गीत बिल्कुल पसंद ना करे लोग। इहे कारण बा कि आज भी एह कलाकार लोग पर फिल्मावल गीत लोग बहुत प्यार से सुनेला। एह लोगन के समाज में एगो आपन छवी बा जवन भोजपुरिया लोग के प्यार पावेला।

आज के दौर में बने वाला फिल्म के अगर बात कइल जाव त सिनेमा दर्शक के अपना ओरी खींचे में विफल हो रहल बा। काहे कि एह फिल्मन के नामकरण कहानी से अलग होखे ला। कहानी त होला ही ना। बस फिल्म के नाम पर आठ-दस गो गीत जवना के शब्द द्वीअर्थी होला एक दूगो आइटम गीत जवना में गीत कम काम वासना के झलक जादे होत बा आ कुछ कमेडी के तड़का। बस हो गइल भोजपुरी फिल्म तइयार! ई कुल्ह फिल्म बक्स अफिस पर मुहकुरिये माटी ले लेत बा। सिनेमा हॉल के कुर्सी खाली रह जात बा। फिल्म पानी तक नइखे मांगत।

एह सब के पीछे जवन कारण बा ऊ अच्छा कहानी आ संवाद के कमी। अइसन नइखे कि भोजपुरी में अच्छा फिल्म नइखे बनत, बन रहल बा बाकिर ई अश्लीलता भरल फिल्मन का बीच में दम धोंट के रह जात बा। आज काल्ह के भोजपुरी फिल्म के हीरो भी कमाल के आ रहल बारें। ना शक्ल ना सुरत, ना अभिनय के लूर। बस पइसा लगावत बालोग दू चार गो तड़क फड़क गीत हो गइल फिल्म तइयार आ बन गइलें हीरो। निर्देशक भी कमाल के बा लोग। उनका ना भोजपुरी भाषा समझ आवत बा आ ना भोजपुरिया संस्कृति। उ लोग बस पइसा कमाए खातिर केहू के भी लेके फिल्म बना देत बा लोग। बदनाम हमनी के भोजपुरी होले हमनी के संस्कृति होला। आज भोजपुरी सिनेमा में कुकुरमुत्ता के तरे हीरो-हिरोइन आ निर्देशक पनपत बा लोग, जेकरा ना अभिनय के ढंग बा आ ना निर्देशन के कसौटी पता बा।

पहिले के बनिस्पत आज के जवन फिल्म बन रहल बा ऊ अर्थ के दृष्टि से बन रहल बा। 'चाहें जइसा हो बाकिर पइसा हो' वाला बात साफ नजर आवत बा। आज के फिल्म में महिला के स्थान पुरूष के मनोरंजन मात्र भर खातिर दिहल जा रहल बा। ओह लोग के फिल्म में कहानी के हीसाब से कम आ अंग प्रदर्शन खातिर जादा इस्तमाल कइल जा रहल बा। निर्देशक, प्रोड्यूसर के नजर में जे जतना कम कपड़ा पहिन के अपना जिस्म के नुमाइश करी आज ऊ ओतने बड़ स्टार कहाई। ई हमनी के संस्कृति त ना रहे! हमनी के संस्कृति में कवनो महिला के नाभी तक देखाई ना देला, एह बात के पहिले के फिल्म में बखुबी ख्याल राखल जात रहे बाकिर आज हालात उल्टा हो गइल बा। आज स्त्री के शरीर के संवेदनशील स्थान छोड़ के बाकी सब देखावल फैशन आ ट्रेंड हो गइल बा।

एह से हमरा नजर में भोजपुरी फिल्म के स्थान वर्तमान परिवेश में भोजपुरी संस्कृति के बरबाद करे के साजिश के रूप में देखाई दे रहल बा आ कुछ हद तक ई बात साॅच भी बा। आज भोजपुरी सिनेमा के लेखक आ निर्देशक ओइसन लोग सामने आ रहल बा जेकर भोजपुरी भाषा, साहित्य आउर संस्कृति से दूर-दूर तक नाता ना बा। ऊ लोग भोजपुरी के प्रयोग बस आपन जेब गरम करे खातिर कर रहल बा लोग। भोजपुरी सिनेमा के नाम पर फूहर आ हिन्दी फिल्म के रूपांतरित कहानी, द्वीअर्थी गीत आ संवाद आउर संस्कृति के नंगा नाच करा रहल बा लोग।

अब अगर भोजपुरी सिनेमा के भविष्य के बात कइल जाव त वर्तमान

फिल्म के देख के ना लागत बा कि भविष्य में दर्शक सिनेमा हॉल तक जइहें, जवन अभी कुछ जात भी बारें। दर्शक के सिनेमा से बनत दूरी ही कारण बा कि आज फिल्म बनते हिरो-हिरोइन सिनेमा घर में बेंचे आ लोग के देखे खातिर अपील करे जात बा लोग। काहे कि फिल्म के नाम भा कहानी अइसन हइये ना बा कि दर्शक स्वतः सिनेमा हॉल तक पहुँच सके।

अइसन नइखे कि भोजपुरी में अच्छा फिल्म नइखे बनत! बन रहल बा। बाकिर एह बजारू आ घटिया फिल्म के बीच में ऊ घीस पीट जा रहल बा। एकर उदाहरण ओम प्रकाश यादव निर्देशित आ कल्लू अभिनित फिल्म सजना मंगिया सजाइद हमार, रतन राहा निर्देशित आ दीलिप गिरी अभिनित बी डी ओ साहेब, नितीन चन्द्रा निर्देशित देसवा, अजय कुमार रंजू निर्देशित सारंगा सदावृछ आदि बा। जवन अपना साफ सुथरा आ अश्लीलता से कोसो दूर रहला के कारण आ कुछ नामचीन कलाकार के एही समय पर रिलिज भइल द्वीअर्थी गीत आ संवाद वाला फिल्म के बीच दम तूड़ के रह गइल। वर्तमान में

भोजपुरी सिनेमा के नामी हिरो आ गायक पवन सिंह कहलें ह कि "हम अब कवनो भी अइसन फिल्म ना करब जवना में द्वीअर्थी गीत भा संवाद होई ।" जवन एगो सार्थक पहल बा भोजपुरी सिनेमा के भविष्य खातिर । अब देखे वाला बात ई बा कि पवन सिंह अपना कहनाम पर कतना खड़ा उतरत बाड़ें । अगर एह तरे के सार्थक पहल हर भोजपुरिया अभिनेता आ निर्देशक द्वारा कइल जाय त भोजपुरी सिनेमा संस्कृति आ साहित्य के भविष्य उज्जवल बनल रही आ भोजपुरिया दर्शक एक बार फेर सिनेमा हॉल में स्वतः आवे लगिहें ।

भोजपुरी गाँव-समाज के धरोहर
'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो'

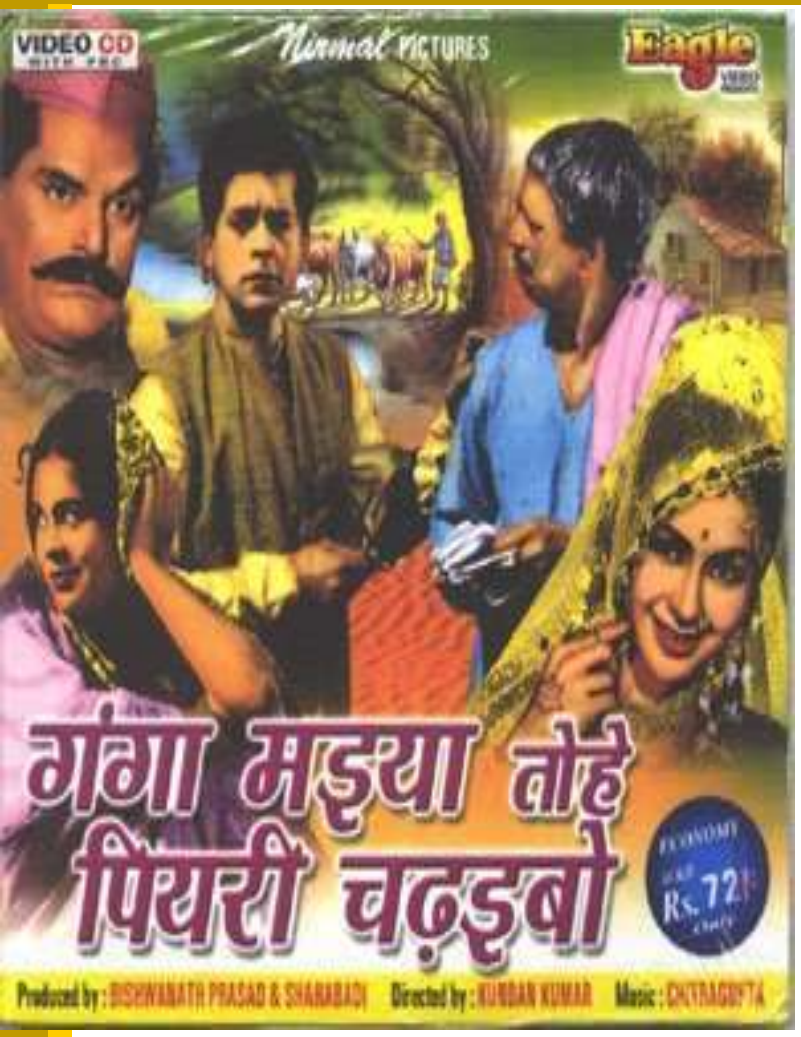
नजीर हुसैन के लिखल पटकथा पर कुंदन कुमार के निर्देशन में बनल फिल्म 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' कई अर्थ में भोजपुरी सिनेमा के इतिहास में मील क पत्थर हवे । नजीर हुसैन भोजपुरी सिनेमा के सिरमौर हवें । भोजपुरी फिल्म बनवला के पीछे उनकर मकसद खाली मनोरंजन ना रहे। गाँव-समाज से जुड़ल कई गो फिल्म उनकरा नावे बा जवना में भोजपुरी समाज के जियतार फजीहत और समस्या के जड़ से उभारे क कोशिश कइल गइल बा । 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इवो' भी एगो अइसने फिल्म हवे जेकरा में भोजपुरी समाज के वास्तविक यथार्थ जीवंतता के साथ पर्दा पर देखावल गइल बा ।

ई फिल्म भोजपुरी क्षेत्र के गाँव-समाज, परिवार अउर जनजीवन के जियत-जागत पोथी हवे। फिल्म में भोजपुरी वातावरण अउर गंवई तत्व के बहुते बारीकी से पिरोवल गइल बा जे फिल्म के अउर जीवंत बनावे ला । शैलेन्द्र के गीत 'हे गंगा मइया तोह पियरी चढ़इबो, सइयां से कर द मिलनवा हे राम' आज तक भोजपुरी ग्रामीण परिवेश अउर देश दुनिया में बसल संगीत प्रेमियन के बीच लोकापवाद के तरह मशहूर हवे । फिल्म एगो जमाना से चलल आ रहल जमींदार वर्ग के अति रुढ़िवादिता अउर मनमाना प्रवृत्ति पर केंद्रित बाटे ।

'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इवो' विश्वनाथ शाहाबादी द्वारा निर्मित उ कृति हवे जवन भोजपुरी सिनेमा के नींव रखलस । फिल्म में गरीब किसान के भूमिका में लखन नामक चरित्र के देखल एगो करेजा के झकझोर देवे वाला अनुभव हवे । जेकर छाप आप जीवन भर अपना दिल-दिमाग से नाहीं मिटा सकिलें। फिल्म के पटकथा अउर पृष्ठभूमि पूरी तरह ग्रामीण संस्कृति, समाज, परंपरा, ऊँच-नीच पर आधारित बा । खासकर ग्रामीण परिवेश में व्याप्त सूदखोरी अउर जमींदारी प्रथा क बारीकी से चित्रण कइल गइल बा । तत्कालीन समाज में एगो गंभीर समस्या के रूप में व्याप्त दहेज अउर नारी शोषण के भी कहानी क हिस्सा बनावल गइल बा । प्रेम अउर परिवार क एगो बड़हन मूल्य बा । उत्तर प्रदेश अउर बिहार में गंगा के अपार श्रद्धा और आदर के भावना से देखल जाला । एही चलते आम जनमानस के भावना के धियान में रख के एकर चित्रण फिल्म में खूब कइल गइल बा । आज भी गाँव में गंगा के सबसे पवित्र मानल जाला ।

फिल्म में बेचन नामक चरित्र गाँव क एक बड़हन जमींदार हवे जवन सामंती विचारधारा के प्रतीक बाड़े । गाँव क ही एगो किसान लखन जेके दारू पीये के आदत बाटे । उ दारू पीये खातिर आपन खेत भी बेच देता । ओकर पत्नी जब ओके मना करेले त ओकरा बार-बार झिड़क देला । बेचन के एगो बिटिया

www.bhojpurisahityangan.com



सावित्री बाड़ी जे फिल्म के नायिका हइन। बहुते चंचल अउर गाँव के एगो शरीफ लड़की। जमींदार बेचन के लड़का श्याम जे फिल्म के नायक हवे, एम.ए. के पढ़ाई पास कर गाँव आ जाला। गाँव आके ओकरा लखन के बेटी सावित्री से प्रेम हो जात बा। श्याम एगो धनी परिवार के लड़का बाड़े जबकि सावित्री एगो कमजोर आउर ओही गाँव के पड़ोसी परिवार क बेटी बाड़ी। दूनों परिवार जाति से एक बा लेकिन जाति व्यवस्था में ऊँच और नींच के फर्क उहाँ पइसा से भी बा। दूनों के प्रेम प्रसंग के चर्चा धीरे-धीरे गाँव में फैइले लागल। श्याम के पिता दूनों के बीच बढ़त प्रेम के खबर सुनके श्याम से पढ़ाई के बाद शहर जाकर नौकरी के बात कर रहल बाड़े। श्याम नौकरी करे के मना करता। एही बीच श्याम के शादी ठीक हो जात बा लेकिन उ अपना पिता बेचन से दहेज लेके शादी करे खातिर माना कर देता।

तत्कालीन समाज पर नज़ीर साहब फिल्म के नायक श्याम के माध्यम से दहेज के विकराल रूप पर करारा प्रहार कइले बाड़े। इहाँ दहेज के पीछे स्त्री के लाचारी अउर मजबूरी, समाज में एगो जवान बेटी के बाप भइला के दर्द अउर सामंती संस्कार से विद्रोह के मर्मस्पर्शी अंकन करे में निर्देशक कुंदन कुमार सफल बाड़े। नायक अपना पिता से कहत बा कि जेवना जमींदार के पास एतना खेत होखे ओके गाँव के विकास में हाथ बटवला के बजाय सूदखोरी करे के पड़े इ कहीं से भी जायज नईखे। जे तरह से बेरोजगारी क आलम देश में बढ़ रहल बा ओकर चिंता नायक के माध्यम से फिल्म में कइल गइल बा। नायक कहत बा कि एगो पढ़ल –लिखल आदमी हर काम ठीक ढंग से करेला चाहे उ खेती होखे या कुछ अउर। इहाँ नजीर साहब शिक्षा के महत्व पर भी जोर देत बाड़ें। ओही दौरान गाँव के स्कूल में एगो मीटिंग होत बा लड़कीन के शिक्षा के लेके, लेकिन आधा गाँव ई कहके एसे आपन पिण्ड छुड़ावल चाहत बा कि लड़कीन के पढ़ाके का फायदा होखी जब ऊ बियह के दूसरे के घर चल जइहें। ई नजीर साहब के अपना समाज में वर्तमान व्यवस्था के लेके बड़हन चिंता बाटे जे फिल्म में बहुत जोरदार ढंग से उठावल गइल बा।

फिल्म के संवाद ग्रामीण परिवेश अउर समाज के अगुआई कर रहल बा। गाँव- समाज में बोले जाए वाला भाषा क स्थान अउर काल परिस्थिति के आधार पर प्रयोग कइल गइल बा। फिल्म के संवाद खातिर मुख्य रूप से भोजपुरी क प्रयोग कइल गइल बा । लोकोक्ति अउर मुहावरा के प्रयोग भी खूबे भइल बा। जइसे- जब लखन के पत्नी अपनी जवान बेटी के शादी क चिंता जाहिर करत बाड़ी तब लखन कहत बाड़े 'हमार बेटी जेकरा घरे जाई गेस बर जाई'। ई एगो गवईं कहावत हवे जेकर मतलब होला कि लड़की सब गुन के आगर, संपन्न और सुशील बिया, जेकरा भी घरे ब्याह के जाई पूरा घरवालन के सुखी रखी। जबाब में लखन के पत्नी कहत बाड़िन कि 'घरे त मिट्टी क तेल नइखे दूसरा घरे गेस बार ताड़।' ई बहुते पुरान भोजपुरी कहावत हवे जेकर मतलब होला कि जेकरे पास अपने घर में दीपक जलावे मतलब आपन रोजी-रोटी चलावे के अवकात न होखे उ दूसरा के रोजी-रोटी कइसे चलाई। एही तरह के एगो अउर संवाद जब लखन अपना पत्नी से कहता बा कि 'चिंता न कर हमरा सीता जइसन बेटी के कउनो रामचंद्र मिलिए जाई।' ई भोजपुरी गाँव-समाज के एगो सच्चाई हवे। आज भी ओह समाज में दुलहा-दुलहिन के राम-सीता के नज़र से देखल जाला। लेकिन लखन के पत्नी ईहाँ पहिले और वर्तमान समाज के मूल्यबोध पर व्यंग करत बाड़ी कि 'उ भूल में जन रइहा, रामचंद्र अइलन, धनुष तोड़लन, सीता जी के ले गइलन। आजकल बेटी के बियाह में धनुष ना टूटे माई-बाप के कमर टूटेला।' एह संवाद के माध्यम से फिल्म आजादी के बाद समाज में बढ़त पूंजीवादी वर्चस्व अउर रूढ़िवादिता के तरफ इशारा कर रहल बा अउर लगातार बढ़त अर्थ के लोभ में दिनों-

दिन टूटत मानवीय रिश्ता के तरफ संकेत कर रहल बा।

फिल्म में खेत-खलिहान, हल, बैल, खान-पान सभे जीयतार पोथी के तरह बाटे जे भोजपुरी समाज अउर जन-जीवन के चित्रित करत बा। वातावरण के दृष्टि से ई फिल्म भोजपुरी समाज के सच्चाई हमरा सामने परोसले बा। एगो साधारन गृहस्थ के घर क सेट एतनी खूबसूरती से तैयार कइल गइल बा कि उ फिल्म के सेट नाही साँचों कउनों गृहस्थ के घर होखे।

फिल्म में एगो नया मोड़ तब आ जात बा जब गाँव के सामंती विचारधारा के लोग पंचायत में ई फर्मान सुनावत बाड़ें कि लखन के दो दिन के भीतर अपना बेटी के बियाह करे के होई। तब बाप अपना आपके कहीं भी दहेज देवे में सक्षम नईखे पावत अउर मजबूर होके उ गाँव के एगो 65साल के मुंशी मुनेसर से सावित्री के बियाह कर देता। इहाँ सावित्री सब चुप-चाप सह रहल बिया अउर ओकर माई भी थोड़ा-बहुत विरोध के बाद अपना हाल पर रो के समझौता कर लेत बिया। ई ऊ दौर रहे जब भारतीय समाज में पुरुष के राज रहे। स्त्री अगर बोलत भी रहे त चाहरदिवारी के भीतर। ओकर कुल अपेक्षा ओही चाहरदिवारी के भीतर तक दब के रह जात रहे, ओके कोई सुने वाला नाहीं रहे। लखन सावित्री के बहुत प्यार करत रहे लेकिन अपना मजबूरी पे ओकर कउनों बस ना रहे। शादी के बाद जइसे ही सावित्री आपन ससुराल जात बिया, दुर्भाग्य से अचानक मुंशी के मृत्यु हो जात बा।

सावित्री के तमाम तरह के कष्ट ओकरा ससुरा में दिहल जा रहल बा। घर के सारा काम कइला के बाद भी प्यार के दूगो मीठ बोल केहुं ना बोले वाला रहे। इ भी ओह समय के समाज के एगो सच्चाई रहे कि विधवा शादी नाहीं करत रहलीन स। ओके कउनों भी पुरुष के साथ बइठल, हँसल, बात कइल बुरा समझल जात रहे। एक हीन भावना के शिकार ऊ सब दया के पात्र बन जात रहलीं। लेकिन समाज में धीरे-धीरे एकरा के लेके एगो जागरूकता ओह समय तक आवे लागल रहे। निश्चित रूप से ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित इ अइसन फिल्म हवे जे बदलाव के दिशा के ओर बढ़त दिखाई देहलस। रूढ़िवादी संस्कार से ग्रसित हमरा समाज में जहाँ कउनों विधवा के दूसरे पुरुष से प्यार अउर फिर दूसर शादी कइल एगो पाप मानल जात रहे। आवे वाले समय में एक सुखद सामाजिक बदलाव के तरफ इ फिल्म इशारा करत नजर आइल।

आजकल बेटी के बियाह में धनुष ना टूटे माई-बाप के कमर टूटेला।' एह संवाद के माध्यम से फिल्म आजादी के बाद समाज में बढ़त पूंजीवादी वर्चस्व अउर रूढ़िवादिता के तरफ इशारा कर रहल बा अउर लगातार बढ़त अर्थ के लोभ में दिनों-दिन टूटत मानवीय रिश्ता के तरफ संकेत कर रहल बा।

एहर अपना रोज-रोज के जीवन से तंग आके तमाम तरह के लगातार लाग रहल लांक्षन के चलते सावित्री गंगा में कूद के आत्महत्या करे क कोशिश कइली लेकिन कउनों तरह से उ बच गइली अउर जब उनका होश आइल त उ ओह समय एगो तवायफ के कोठा पर रहली। हालात के मारल बेचारी आखिर उहाँ से जाए त कहवाँ। ओइजे नाच-गा के अपन गुजर करे लगल। एक दिन जब ओकर पवित्रता अउर अस्मिता पर आँच आइल तब उ एकरे साथ समझौता नाहीं कइलस अउर खुलकर एकर विरोध कइलस। देश के आजाद भइले अभी पूरा दो दशक भी ना होखल रहे अउर भारतीय ग्रामीण संस्कृति के अनुगूँज विश्व पटल पर छा गइल कि भारतीय औरत आपन सब कुछ गवां सकेलीं पर अपना आबरू पर भारी संकट के समय भी आँच नाहीं आवे देलीं।

ओहर रोजगार के तलाश में श्याम भी शहर आ जात बा। हालत के मारल बनारस के संकरीं गली में अपना बुरा समय से जूझत लखन के झुलसाइल मुँह अपना पूरा बेचैनी के साथ हमरा नजर के सामने अजुओ आ खड़ा होला। अंत में दूनों के बियाह हो जात बा अउर दूनों परिवार आपस मे मिल-जुल जाता। फिल्म आखिर में ई संदेश देत बा कि समय, परिस्थति के साथ सब कुछ बदली अउर समाज पुरान परंपरा, जड़, और

धीरेंद्र कुमार राय



गाजीपुर के रहे वाला धीरेंद्र राय महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में मीडिया रिसर्चर बानी। इहाँ के एमफिल भोजपुरी सिनेमा पऽ भइल बा। भोजपुरिया साहित्य-सिनेमा पऽ इहाँ के विशेष अधिकार से लिखेनी। इहाँ के उत्कृष्ट शोध कार्य खाति यूजीसी के प्रतिष्ठित एसआएफ शोधवृति अबहिन हाले में मिलल बा। देश-विदेश के प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकन आ शोध पत्रिकन में इहाँ के आलेख/ साक्षात्कार/ शोध आलेख लगातार प्रकाशित हो रहल बा। इहाँ के अबहिन भोजपुरी लोकसंस्कृति पऽ एगो किताब प्रकाशित होखे वाला बा आ भोजपुरी पत्रकारिता पऽ कई गो किताब प्रेस में बाड़ी स। इहाँ के महुआ में भी काम कइले बानी।

विचार से बाहर निकलके बदलत मूल्य के तरजीह देई। कउनों भी रूढ़ि आ परंपरा स्थायी विरासत ना होखे बल्कि ई एगो लगातार बदले वाली प्रक्रिया हवे। बेचन कहता कि दोष आज एह बचवन के नइखे बल्कि हमनी के बा जे हम लोग बुरा रीति-रिवाज बनाके अपना आप के अबहिनों ओही में लझुरइलें बालीं जा। ई संदेश फिल्म के अउर मजबूती देत बा।

भारत गांव के देश ह। आदमी रोजी-रोटी के तलाश में शहर आ भी गइल त भी ओकरा हियरा में गाँव पूरा अस्मिता के साथ जी रहल बा। ग्रामीण परिवेश के एह फिल्म के गीत के बोल लोकधुन अउर समकालीन लोक जीवन के झांकी देखा रहल बा।

फिल्म मे मो. रफी के आवाज में गावल विदायी गीत- 'सोनवा के पिंजरा में बंद भइले हाय राम, चिरई के जियवा उदास। टूट गइले डलिया, छितर गइले खोतवा, छूट गइल नील रे अकाश।'अउर लता मंगेशकर के आवाज में 'काहें बसुरिया बजवल, रे सुद बिसरवल, गइल सुख-चैन हमार' के माध्यम से ग्रामीण परिवेश में बिखरल लोकगीत के जमीनी सुंदरता से परिचय और सामना होत बा। एही तरह एगो नाच-नौटंकी जेकरा में बाल-विवाह अउर ग्रामीण परंपरा के गीतन में निहित लोकतत्व के संजोवल गईल बा। जेके बहुते खूबसूरत अउर बढ़िया ढंग से हेलेन महिला के दुख-पीड़ा के अपना नाच-नौटंकी के माध्यम से बखूबी प्रस्तुत कइले बाड़ी । जइसे -

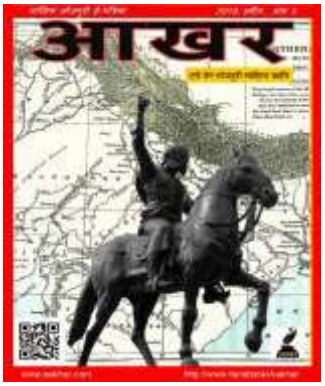
'हम त खेलत रहली अम्मजी के गोदियां, कर गइले कबही बियाह रे बिदेसिया।

छवे महीना कह के गइले कलकतवा, बीत गइले बारह-बरीस रे बिदेसिया॥

फिल्म के गीत-संगीत भी कथा के अनुकूल बाटे। गाना भरती के न होके कहानी के प्रवाह के गति देवे वाला बाटे जे पूरी तरह कथा के वाचन कर रहल बा। फिल्म के कुल गीत अपना समय में बहुत चर्चित भइल रहे। संगीत में हल्ला-गुल्ला के ना बलुक लोक संगीत के जगह दिहल गइल बा। फिल्म 'गंगा मइया.....के सुंदर संगीत प्रस्तुति के दर्शक खूब पसंद कइलें।

'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इवो' सामाजिक कुरीति अउर रूढ़िवादी व्यवस्था पर कटार चलावत एगो सीधी-साधी प्रेम कथा अउर सामाजिक कुरीति पर आधारित फिल्म हवे जे अपने करूणा भरल अंत से सबकर दिल छू लेले। सामाजिक रूढ़ि के चलते टूटत मानवीय रिश्ता अउर गीरत मानवीय मूल्य अउर सामाजिक ताना-बाना के वजह से दूर होत दू गो जिंदगी क कहानी के एह फिल्म में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से देखावल गइल बा। एमें भव्य सेट नइखे। मारधाड़ के कोई भयंकर सीन नइखे। कउनों धार्मिक कथा भी नइखे। कउनों भी तरह के नाटकीय संवाद नइखे। तनिकों अश्लीलता नइखे। ई कहानी बहुत घरेलूपन से आगे बढ़ेले अउर निर्देशकीय कौशल से दर्शक मंत्रमुग्ध होके कहानी के प्रवाह में बहत जालें। ई स्वार्थ के दुनिया से दूर ले जाए वाली कहानी पर आधारित उ फिल्म बा जहाँ गाँव , तालाब ,रास्ता, पगडंडी अउर बैलगाड़ी बाटे। कुल मिलाके भोजपुरी समाज अउर जनजीवन के चित्रण करत ई एगो बेहतरीन फिल्म बा।

राउर बात



गजब!!!! बहुते नीमन भाई लोग!!!!जबरदस्त!!!! बहुत-बहुत बधाई स उसे आखर टीम के!! जुग -जुग जीअ लोग भाई! आज हमार बेटी के JEE Main के ईन्तिहान रहे आ हम गेट के बहरी ब ईठ के एकसुरिऐ पढनी हमार समय कब बीत ग ईल पते ना चलल। बैट्री खत्म होखे के पहिलही बधाई देतानी! मार तहे दिल शुक्रिया स्वीकार करीं सभे! जय हो भाई!

● चन्द्र भूषण पाण्डेय

खुबसूरत प्रयास खातिर बहुत बहुत बधाई आ शुभकामना

• अरविंद दुबे

भोजपुरी भाषा के आगे बढ़ावे खातिर निक प्रयास बा। आखर के पूरा टीम अउर रचनाकार लोगन के ढेर सारा बधाई।

• सच्चिदानंद शर्मा

भोजपुरी भाषा के छवि देस में भोजपुरी सिनेमा से बनावल गईल बा, से ईहे देखावल जाई. बाकी भोजपुरी के नांव पर चल रहल संसथानन के केहू जनबो ना करे। "आखर" जईसन पत्रिका आ अईसने कुछु आउर काम आगे बढावे के पड़ी।

• कमलेश पाण्डेय

आखर क मार्च अंक पढ़त रहली। मनोरमा जी क एगो लेख पढ़ली मेहरारुन खातिर गाँव। बहुत अच्छा लागल मगर एमा उ बहुत साल पहिले क चित्रण कईले बानी। बहुत जगह पर शायद आज भी मेहरारून क स्थिति ठीक नईखे। मगर आज स्थिति बहुत बदल गईल बा। करीब 5 साल से हमहुँ गँउवे में रहत बानी बाकि ई देखत बानी की आजकल आदमी लइकन के पढ़वला पर जोर दे चाहे न दे बाकि लइकन के पढ़वला क भरपूर कोशिश करत बा। हमरे गांव में ए टाइम तीन गो लईकी पॉलिटेक्निक करत बाड़ी स और एगो लईकी पॉलिटेक्निक क चुकल बा कुछ तैयारी करत बाड़ी स। हमरे मेहरारू एकदम से अनपढ़ी ह बाकि लइकन के पढ़वला खातिर उ बहुत कुछ कुर्बान क देले बा। ओकर नतीजा इ बा की हमार लईकी आज b.tech क रहल बा। बीमारी की वजह से हम पैर से भी लाचार हो गईल रहली बाकि हमार मेहरारू अनपढ़ होखला की बावजूद हमार सेवा भी कइलस, खेती भी सम्हरलस और लइकनो के कवनो काम न करे दिहलस की तोहन लोग पढ़ाई करअ जा। आज ओकर नतीजा इ बा कि एगो अनपढ़ मेहरारू का एगो लइका इंजीनियर बा एगो लइकी इंजीनियरिंग करत बा और एगो लइका इंजीनियरिंग क तैयारी करत बा। आज भी जब रोड पर लईकिन के स्कूल से देखेलीं त तबियत खुश हो जाले की लइकी भी लइकन पीछे नईखीं स।

• एस चौहान

आखर के दू अंक पढ़नी। सब एक से एक। भोजपुरी के नया रूप देखे के मिलल। कोशिश करीं की प्रिंट प्रति अमरीका में भी उपलब्ध होखे। हम हर संभव मदद ला तइयार बानी।

• अमित कुमार पाण्डेय , वाशिंगटन डी.सि ,अमरीका

भोजपुरी साहित्य के संभारे खाती आ नया ऊंचाई देवे खाती राउर सहयोग के जरूरत बा। भोजपुरी में लिखीं आ "आखर" के साथे भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे में सहयोग करीं।

~आखर परिवार

www.bhojpurisahityangan.com

निहोरा

जय भोजपुरी !

भाषा आ संस्कार के बीया माई के गर्भ में ही रोपा जाला। बाकी लोग अब एह भाषा आ संस्कार से आवेवाला पीढ़ी के दूर करी रहल बा । कारण कि हमनी के भाषा के पहचान कुछ बाउर ढंग से परोसल जा रहल बा। अगर इहे स्थिति रही त आवेवाला समय में भोजपुरी के बिलिम जाये में कवनों दू मत नईखे। भाषा के बचावे के बा त साहित्य के समृद्ध करे के पड़ी । भोजपुरी साहित्य खाति एगो डेग हमनी के बढ़ल, अब एगो डेग रउआ भी हमनी के साथे बढ़ायीं इहे निहोरा बा। आखर के बढ़त डेग में राउर दू कदम हमनी के एह उतजोग में ज़ोर भरी।

भोजपुरी भाषा के नाम पे जवन कविता, गीत, कहानी, व्यंग्य, इतिहास, विज्ञान जईसन विषय पे भोजपुरी में लिखीं। आखर नवका साहित्यकार लोगन के एक मंच दे रहल बा। आपन रचना के हमनी तक पहुँचायीं, राउर बात सुने आ पढ़े खातिर भोजपुरिया समाज आँख बिछवले बा।

अगिला अंक (जून -2015) खाति चयनित विषय - ***"गाँव के बदलत स्वरूप , बदलत पर्यावरण आ परिवेश , भोजपुरिया क्षेत्र में पर्यटन, बियाह शादी आ भोजपुरिया संस्कृति " जईसन विषय प भा एह विषयन के केंद्र मे राखि के लिखल रचना (लेख , कहानी , व्यंग्य , कविता , गीत आदि) के भेजी।***

राउर बात सुने आ पढ़े खातिर भोजपुरिया समाज आँख बिछवले बा।

रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं। कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं। रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा- aakharbhojpuri@gmail.com










आखर
एगो जेंदा भोजपुरी साहित्यिक खातिर
आखर
एगो जेंदा भोजपुरी साहित्यिक खातिर
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
आखर
एगो जेंदा भोजपुरी साहित्यिक खातिर